

३७४५

मुनिश्री मयाविजयजीकृत
आत्मप्रबोधस्याष्टाद ग्रंथ

आ पुस्तकने

श्रीनरुच्यच बंदर मांदेला वेजलपुरना

रहेवासी श्रावकना श्रीसंघें मली.

ज्ञानवृद्धिने अर्थें.

श्रीमोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं.

संवत् १९४९ सने १८८९

आ पुस्तकने सन १८६७ ना पर्चीशिमा आक्ट प्रमाणें छपावनारे

रेजीष्टर कराव्युं छे.

प्रस्तावना. .

आ ग्रंथ ठापी प्रसिद्धतामां मूकतां अमें सर्व जैनजाइ योने सविनय प्रार्थना करियें ठेयें के जैनधर्मी केटलाए क बालजीवोने समजवामां आवे, तेवा विषयो आपुस्त कमां दाखल करेला ठे, माटे जे वांचनार साहेबो, आमां समावेलां तत्त्वोनुं विचार पूर्वक पोताना चित्तमां रमण करशे, ते सज्जनो मोहनो कारण रूप जे स्याद्वाद मार्ग ठे, ते सुखें करी समजी शकशे. एम समजी अमारा जैनीजाइयोना उपकारने अर्थे आ पुस्तक अमोयें ठ पाव। प्रसिद्ध कछुं ठे.

॥ ग्रंथ कर्तुराशयविज्ञप्तिः ॥

॥ पूर्वे श्रीतीर्थंकर, गणधर, सुविहित आचार्यादिक महामुनियोना रचेला ग्रंथोनो आशय अत्यंत गंजीर होवाथी तेमना कथननो एक देश मात्र आशय पा मीने में महारी अल्पबुद्धिने अनुसारें गुरु कृपाथी आ ग्रंथ लख्यो ठे. तेमां विपर्यास पणे श्रीजिनवच नथी विरुद्ध जे कांइ महाराथी लखायुं होय, ते हें सुझो ! तमें महारी उपर कृपा करी सुनजर पूर्वक सु धारी वांचशो. एवी महारी विज्ञप्ति ठे ते स्वीकारशो.

अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका.



जाग नाम.	पृष्ठांक.
१ चार विलास रूप प्रथम जागनी अनुक्रमणिका.	
१ आत्म विलासमां आत्मबोध ठत्रीशी	
आदिक ग्रंथोदाखल कव्या ठे.	१
२ स्तवन विलास.	१५
३ सव्वाय विलास.	४६
४ गिरि विलास.	४३
२ तीर्थमाला गर्जित शोल ढाले करी रचेलो श्रीमि	
वाचलजीना रास रूप द्वितीय जाग.	७६
३ शास्त्र रहस्य प्रकाश नामें तृतीय जाग, चार	
वर्गरूप ठे, तेनी अनुक्रमणिका.	
१ पहेलो वर्ग. ११३	१७२
२ बीजो वर्ग. १३५	१९३
३ त्रीजो वर्ग. १७२	१९३
४ चोथो वर्ग. १९३	१९३
४ षट्पद्य नय प्रकाश बालावबोध रूपचतुर्थजाग	१०
५ निश्चय व्यवहार नय चर्चा रूप पंचमजाग.	२३८
६ लघुपिंगल रूप षष्ठ जाग ॥	२५२
७ आश्रय आपनार साहेबोनां नाम.	२५७



॥ अथ ॥

॥ मुनि श्रीमयाविजयजी विरत आत्म प्रबोध
स्यादाद ग्रंथस्य प्रथमोद्धासः ॥

तन्मध्ये प्रथमं

॥ आत्मबोध ठत्रीशी प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद आनंद नर, पूरण आत्म राम ॥ राग
द्वेष जाकूं नही, ताकूं करिय प्रणाम ॥ १ ॥ आत्मबो
ध मुक्तावली, रचना रचशुं तेह ॥ जे नर कंठें उर धरे,
तजे राग ने रेह ॥ २ ॥ राग द्वेष नवमूल हे, जन्म
मरन जंजाल ॥ जो परमात्म पद चहे, राग द्वेषकूं
टाल ॥ ३ ॥ राग द्वेष गये बिना, विरथा व्रत पचखा
ण ॥ शुन अशुन दो बंध हे, प्रवचन नाषित जान ॥
॥ ४ ॥ ते कारण नवि प्राणि तुं, तजी राग ने द्वेष
॥ परमात्म पद साधि ले, तजि दे कायकिलेश ॥ ५ ॥
को कहे काय किलेशथी, मुक्ति लहे मुनिराय ॥
मिथ्या नाषण ते लवे, नरत न मुक्तें जाय ॥ ६ ॥
केइ कहे माहाव्रतथकी, मुक्ति होय ततकाल ॥ अ

येअ्य किम पामे नही, पंच माहाव्रत पाल ॥ ७ ॥

॥ सवैया त्रैवीशा ॥

॥ केइ कहे व्रत नीम धरे अरु, थानक वीशको से
वन कीजें ॥ ता विन तीर्थपती नही होवत, सो एक
त वचन पतीजें ॥ श्रीसुगडंग मिथ्यात कहे अरु, श्रे
णिक तीर्थपती किम कीजें ॥ जोग असंख्य कहे जि
न आगम, स्यादवाद रस ध्यानमें लीजें ॥ ८ ॥

॥ अथ शिष्यप्रश्न ॥

॥ शिष्य कहे प्रभु बात यथारथ, आप कही मन
संशय ऐसैं ॥ जीव निगोद वसे इह लोगमें, राग न द्वेष न
देखत तैसैं ॥ सो जीव कर्म रहीत कहो तब, सिद्ध
स्वरूप निगोद न ऐसैं ॥ शिष्य संदेह निवारन कारन,
बात यथारथ कहे गुरुरैसैं ॥ ९ ॥

॥ अथ गुरु उत्तरकथन सवैया एकत्रीशा ॥

॥ गुरु कहे बानी जनि, प्रानी ए सिद्धांत कानी,
समजी न शैली तब, संसे मन मांही है ॥ अठारह
पाप थान, सर्व जीव राशिमांही, रात दिन लागी रहै,
मिथ्यादृष्टि पाही है ॥ चैतन सगति सत्ता, ठानी गु
प चुप मांही, रागादि प्रगट रूप, त्रसपणुं जाही है ॥
जैसैं निरविख बीज, अमलकी उत्पति, बीजमांही

(३)

वीपनांही, नास नही मानी है ॥ १० ॥ जैसे बालक
स्त्रिया रूप, हाव जाव दीसे नाही, जीवन स्वरूप पा
इ, विपेवाण चूर है ॥ जैसे इहु बीज मांही, नासे न
मधुर रस, गुल खांम मधुरता, इहुरस पूर है ॥ तैसे
मिथ्या गुन स्थान, जिहां लों तिहां लों सूधी, लगे पाप
पुण्य जिहां, रागादि जरूर है ॥ शुचराग गौतमकुं, केव
ल स्वरूप वारे, तातें गये राग द्वेष, मुगति हजूर है ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइ कहे त्रण जोगशुं, कर्मबंध दृढ होइ ॥ क
हे कोइ अव्रत कपायशुं, बंध करे नर सोइ ॥ १२ ॥ स्या
दवाद समजे नही, जिनशासनको मर्म ॥ रागादी
मिथ्यात बिन, बंधे न कोऊ कर्म ॥ १३ ॥

॥ सवैया त्रैवीशा ॥

॥ शिष्य कहे प्रभु केवल ग्यानमें, अव्रत योग क
पाय न ईसे ॥ शिष्य संदेह निवारन कारन, कहे गुरु
केवलि योगमें दीसे ॥ इंडी आहार निहार करे तोइ,
राग रहित परपिम जे ग्रासे ॥ तातें अवश्य कह्यो
जिन आगम, राग द्वेष जीउ कर्म बंधासैं ॥ १४ ॥

॥ सवैया एकत्रीशा ॥

॥ कोउ कहे मन ए, करम बंधको उपाय, एही

है एकंत बात, मन न पतिजीयें ॥ थावर असन्नी
 पण, इंदीकुं तो मन नांही, समे समे बंधे सो, सिद्ध
 त्वां दीजियें ॥ मन जोग पुदगल, जड अनुयाइ
 योग, रागादि पयोग जीव, लखन बखानीयें ॥ करता
 न होय तव, बंधे न करम कोउ, एही साची शीख
 गुरु, बचन प्रमानीयें ॥ १५ ॥ केइ कहे बचनशुं, शु
 नाशुन कर्म होय, जाने न बचन योग, केवली पर्य
 त है ॥ प्रश्नचंद राजरूपि, काय योग थिर करी, पग्यो
 राग द्वेष नर्क, बंधकुं धरत है ॥ राग द्वेष गयो तव,
 केवल प्रगट जयो, तातें कर्मबंध एक, रागादि करत
 है ॥ त्रिकरण योग केइ, कहे कर्मबंध होत, ए
 हही एकंत मत, मूरख धरत है ॥ १६ ॥ त्रिकरण
 योग बंध, कीजें तो शंकर दोष, थावर असन्नी कर्म,
 बंध नांही चाहियें ॥ केइ कहे शुनाशुन, आचरण
 कर्मबंध, जरतादि तदजव, मुगति उपाइयें ॥ शुनाशु
 न बंध फल, एकहु न दीसे कोउ, एसो समकित गुन,
 महातम बखानीयें ॥ तैसें समकित वंत, राग द्वेष मोह
 बिनु, जुंजे पूर्व कर्म नव, बंध नही जानीयें ॥ १७ ॥
 तातें समकित बिन, शुनाशुन कर्म फल, एसो द्वैत
 जाव ज्ञान, दृष्टिमें न लेखीयें ॥ ग्रंथ रचे व्रत धरे,

(५)

लोचादि कलेश करे, वहे मुनि नर तोहि, डुष्ट गति
देखीयें ॥ जोगशुं न बंधे जीव, जोगशुं न बंधे जीव,
बंधे एक रागादि, अशुद्ध उपयोगशुं ॥ कालिकाचा
रज विष्णु, कुमारादि माहामुनि, हणिया नमूचि
आदि, त्रिकरण जोगशुं ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तोही कर्म न बंधियो, त्रिकरण योगें एह ॥
शंति कुंशु अर जिनवरा, खट खंम साध्या जेह ॥
॥ १८ ॥ तेह शास्त्र दीसे नही, कर्म बंध अधिकार ॥
ते कारण नवि प्राणी तुं, स्यादवाद मन धार ॥ १९ ॥

॥ सवैया त्रैवीशा ॥

॥ केइ कहे परिग्रहके त्यागसें, मुक्ति महामुनि
पावत वैसें ॥ सोय एकंत मिथ्यात वदे अरु, स्याद
वाद समजे नही तैसें ॥ पणदस जेह कहे जिन ।स
इके, नरतादि गृही लिंगने वेशें ॥ सिद्ध अनंत नये
जिउ केवल, स्वपर विवेचन करत विशेषें ॥ २० ॥

॥ ठंद चुजंगी ॥

॥ ठके लोक कीरतके व्रत धारे, करे कष्ट किरि
या आहार दोष वारे ॥ नणे सार सिद्धांत ममत्व नारे,
रमे राग द्वेषें तेह केम तारे ॥ २१ ॥ नरे नार चंदन

खर पंथें चाले, नहि चंदना स्पर्श लव तेह साले ॥
 तेही मूर्ख पंथितता मन्न माने, नही अक्षरा अर्थ न
 थणें निहाले ॥ १३ ॥ जिम अंग ऊपंग दीसे ठे रू
 डां, एके नाक वीना कहियें सर्व कूडां ॥ लिखे अग्रि
 पत्रें नही कोश जाले, अणू साच अग्री कोश सर्व
 बाले ॥ १४ ॥ पद पक्षीनो खोज आकाश चाले, तेह
 पक्षिपद अंतर ते न जाले ॥ आपें आप नूनी पररू
 प ध्यावे, करे बाह्य किरिया मूलरूप नावे ॥ १५ ॥
 तातें ग्यान किरिया दोइ गुह जानो, सापेक्ष किरिया
 सुव्यवहार मानो ॥ जेणें आत्मरूपें प्रचूने पिठा
 न्यो, तेणें लोक अलोकनो जाव जाण्यो ॥ १६ ॥ जे
 णें आत्मगुण रमण देशें न जान्यो, मुनीवेश वृथा
 ते सिद्धांत मान्यो ॥ होलि पर्व राजा तेवो वेश जा
 णो, बूडे सायरें नाव जे होय काणो ॥ १७ ॥ करे
 ध्यान इंडी वशीनूत राखे, पाले जीव दया मुखे स
 त्य जाखे ॥ तजे दान अदत्त मैथुन्न त्यागे, परिग्रह
 प्रसंग नवि चित्त राखे ॥ १८ ॥ उंधे मूर्ख जूले पंच अ
 ग्रि सेवे, उदासी होइ रामनुं नाम लेवे ॥ जटाधारी
 केइ केइ दाढि राखे, दीये बांग त्रणकाल रहेमान
 जाखे ॥ १९ ॥ करता करम क्रीया शास्त्रें प्रमानो,

(७)

जाने न करता महामूर्ख मानो ॥ जडजाव करता
जेह धर्म माने, शुद्धानंद चिह्नपता कैम जाने ॥ ३० ॥
महाज्वर प्रवेश त्रीदोष व्यापे, जूजे न जोजन्न जन
तत्त लापे ॥ करे कर्म किरिया करता न जाणे, जणी
शास्त्र सिद्धांत अजिमान आणे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोउ पुत्र परणाववा, जान सजी चतुरंग ॥ क
न्यानो निरणय नही, संकर दोष प्रसंग ॥ ३२ ॥ प्र
थम संबंध तिलक करे, पश्चात् वरवा जाय ॥ ते सं
बंध युक्ती कही, शिवनारी वर थाय ॥ ३३ ॥ सम
कित तिलक करो नवि, पश्चात् किरिया सार ॥ सम
कित तिलक विना नही, शिवनारी श्रीकार ॥ ३४ ॥
आत्मब्रतीशी ए कही, आत्मबोध प्रकाश ॥ जे नर
कंठें उर धरे, ते पामे शिववास ॥ ३५ ॥ सौजाग्य
विजय प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ मयाविज
य मन मोदछुं, राग द्वेष मिट जाय ॥ ३६ ॥ इति
श्री आत्मप्रबोध ब्रतीशी समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीज्ञान ब्रतीशी प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सतचिद ने आनंदमय, चिदानंद जगवान ॥ चि

(८)

दज्ञान जे नापियो, ताको कीजें ध्यान ॥ १ ॥ दो वि
ध ज्ञान प्रकाशियो, निश्चै अरु व्यवहार ॥ श्रीजिन
आगमथी लही, पामीजें नवपार ॥ २ ॥ इव्यह श्रुत
नणते थके, वीत्यो काल अजान ॥ चउ अनुयोग
प्रकाशिया, सो व्यवहारी ज्ञान ॥ ३ ॥ शुद्धाशुद्ध व्य
वहार दो, नाखे श्रीजिनराय ॥ स्वपर विवेचन ज्यां
नहि, सोही अशुद्ध कहाय ॥ ४ ॥ योग इव्याणु जा
नते, स्वपर विवेचन थाय ॥ स्वपर विवेचन बिन न
ही, सादिनंत सुख पाय ॥ ५ ॥ तातें सजुरु सेवियें,
करि थिर मन वच काय ॥ ध्येय ध्यान एकत्वता,
जनम मरण दुःख जाय ॥ ६ ॥ गुरु आणा विण जे
क्रिया, फोकट काय क्लेश ॥ निर नायक जर सैन्य
ज्युं, जय नवि पावे लेश ॥ ७ ॥ पणदस जेदें सिद्ध
ता, इव्य लिंग अधिकार ॥ नावलिंग ए आतमा,
योग युगतिके पार ॥ ८ ॥ आतमज्ञानी श्रमण जे,
सजुरु कीजें तेह ॥ ग्यान अजेद एकत्वता, पामे धन
नर जेह ॥ ९ ॥ इव्य गुण पर्यायमें, वस्तु तत्त्व आ
जास ॥ नय निक्षेप संयुक्त है, आतम गुण परकाश
॥ १० ॥ पर स्वभाव जेहमां नही, इव्यह गुण पर्या
य ॥ कंचन कल्प कालांतरें, धातू अन्य न थाय ॥

॥ ११ ॥ नय पर्याय अनंत ते, कल्पित चेद अनंत ॥
 चेद रहित ए आत्मा, पामे विरला संत ॥ १२ ॥
 मिथ्यादृष्टी जे नरा, मुनिवर वेश धरंत ॥ ज्ञान वि
 ना आमंबरी, करे नवचमण अनंत ॥ १३ ॥ कष्टक्रिया
 जे ज्ञान बिन, कोलुं बैल ज्युं जान ॥ जमे सदा नव
 चक्रमां, तेह मूल गुनथान ॥ १४ ॥ कब निर्जरा
 अकामतें, तरसादिक पद पाय ॥ कबहिंक गुन कि
 रिया थके, देवगतीमें आय ॥ १५ ॥ विषयादि इंद्रिय
 जनित, रक्त मदा लयलीन ॥ समकित सूर्य बिना
 नही, बित रजनी होय दीन ॥ १६ ॥ सामायिक
 सो आत्मा, आत्म सो समकीत ॥ नगवइ अंगें
 नाखियो, अन्यग्रंथ ए रीत ॥ १७ ॥ व्यवहारें जे
 इव्य श्रुत, लोक लोकोत्तर चेद ॥ बहुविध क्रिया क
 लापतें, मतमत चेद प्रभेद ॥ १८ ॥ आप आप मत
 मग्न जे, जीव स्वभाव अनेक ॥ नाव श्रुत एकत्वता,
 सो शिवरूपी ठेक ॥ १९ ॥ इव्यलिंगधारी करे, इव्य
 श्रुत उपदेश ॥ बाल जीव मनरंजनो, सो मिथ्या
 श्रुत वेश ॥ २० ॥ जिम जमाली प्रमुख मुनि, किरिया गु
 ऋ करंत ॥ तदनव मुक्ति न पामिया, लिंग अनंत ध
 रंत ॥ २१ ॥ ज्ञानी श्वासोब्वासमां, कठिण करम करे

नाश ॥ क्रोड पूरव अज्ञानमें, करे तप नही सुख
 वास ॥ १२ ॥ बहुश्रुत अनुजवि दाखीया, ज्ञानी
 ते निकलंक ॥ बहुश्रुत मत एकत्वता, जेद रहित न
 व अंक ॥ १३ ॥ कपिलादिक अन्य लिंगमां, करे तप
 किरिया नेक ॥ किरिया फल पामे सही, नही किरिया
 सुविशेष ॥ १४ ॥ जे जे अंश स्वरमणमां, ते ते कि
 रिया सत्य ॥ जे परजावें रमणता, ते किरिया ते अ
 सत्य ॥ १५ ॥ अनुजव विण जे जे क्रिया, ते सवि
 पुजल जाल ॥ देश आराधक ए कही, जगवऽ अंगें
 जाल ॥ १६ ॥ ज्ञान गुणें अप्रतिपति, क्रिया प्रति
 पाति जेह ॥ नंदीपेण जे महामुनि, महानिशीथें
 तेह ॥ १७ ॥ वरणादिक पुजल दशा, कर्म वर्गणा
 जेह ॥ सिद्ध खेत्रमां शाश्वती, सिद्ध न फरसे तेह ॥
 ॥ १८ ॥ तातें ज्ञानी कर्मशुं, सदा रहे निरलेप ॥
 ऊर्ध्व रहे जलशुं सदा, करे कमल नही खेप ॥ १९ ॥
 श्रीपन्नवणासूत्रमां, कर्मबंध अधिकार ॥ राग द्वेषशुं
 करत है, अवर न कोउ प्रकार ॥ २० ॥ राग द्वेष जा
 में नही, राव रंक समचित्त ॥ तृण मणि सम जाकूं
 सदा, सजुरु सेवो नित्त ॥ २१ ॥ उपादान ते आत
 मा, पुजल बाह्य निमित्त ॥ घट मृतिका दृष्टांत ज्युं,

घटमें मृत्तिका निक्ष ॥ ३२ ॥ कारण विण कारण न
 ही, चीवर दंम ज्युं चक्र ॥ उपादान करता विना,
 कारण सर्वे वक्र ॥ ३३ ॥ एक देखवो जानवो, इव्य
 सत्तामें एक ॥ पर्यायें उत्पात जे, व्यवहार जेद अ
 नेक ॥ ३४ ॥ जेदहेद एकत्वता, इव्य रमण करे जे
 ह ॥ दर्शन ज्ञान चरण विधि, सत्ता आतम तेह ॥
 ॥ ३५ ॥ सोनाग्यविजय परतापथी, हीरविजय सुप
 साय ॥ मयाविजयने ए सदा, जैनागम सुख थाय
 ॥ ३६ ॥ इति श्रीज्ञान ठत्रीशी संपूर्णा ॥ २ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धांतपञ्चीशी प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम सिद्ध प्रणमी सदा, कहिगुं सार सिद्धां
 त ॥ सिद्ध पार जे पामवो, ते कहियें सिद्धांत ॥ १
 ॥ द्वादशांगि रचना प्रथम, गणधर जाणित जेह ॥
 सूत्र पीस्ताजी वर्तता, चउ अनुयोगें तेह ॥ २ ॥
 ज्ञाता प्रमुख ते जाणियें, धर्मकथा अनुयोग ॥ चंद सू
 रपन्नतिमां, ठे गणितानुयोग ॥ ३ ॥ आचारांगा
 दिक कहा, चरण करण अनुयोग ॥ ए त्रिहुं योग
 व्यवहारमां, वरते गुन उपयोग ॥ ४ ॥ स्रगडंग अ

नुयोग द्वारमें, योग इव्यानु जाण ॥ निश्चय योग
 ते जाणीयें; आतम इव्य पिठान ॥ ५ ॥ निश्चय यो
 ग जाण्या विना, ए त्रण योग ठे व्यर्थ ॥ स्वपर विवे
 चन ज्यां नही, न सरे आतम अर्थ ॥ ६ ॥ शिष्य क
 हे स्वामी तुमें, कह्यो निश्चें एकंत ॥ व्यवहारें वर्चे
 मुनि, गुणगण तेर प्रयंत ॥ ७ ॥

॥ जुजंगी ढंद ॥

॥ कहे सगुरू शुद्ध व्यवहार साचो, गढे गढना जे
 दमां मत्त राचो ॥ गढे गढ ममत्त्व मन चित्त धारे,
 करे वाद वीवाद रु दोष वारे ॥ ८ ॥ गढे गढ सामाचारी
 जूजुई ठे, कहे सत्य असत्य ते कोण कहे ठे ॥ एह
 जेदना ठेदने कोण जाणे, रमे आप रूपें स्यादवाद मा
 ने ॥ ९ ॥ गयंदने अंधें ज्यां फरस कीधो, एक अं
 ग उपंगने हस्ति लीधो ॥ एकंगी अंगें नही हस्ति
 जाणो, ऊपंगने अंग ते हस्ति मानो ॥ १० ॥ नदी
 सर्व न्यारी सायरें समावे, पढी नामनो नाश ते जे
 म पावे ॥ तेम कल्पित जेद जे धर्म जाणो, तातें सर्व
 गुण ज्ञान आतम प्रमाणो ॥ ११ ॥ वली जगवई अंग
 ने प्रथम शतकें, सामायिक प्रश्न ते आत्म विगतें ॥

ज्ञानादि तप जे करे एह चार, उत्तराध्ययन आत्म
 ज ए विचार ॥ १३ ॥ प्रथम ज्ञान नै षठी दया सार
 जाणो, बोले दशवैकालिक ए प्रमाणो ॥ आचारंग सुग
 डंग ते एम नाखे, सिद्धंत रस स्वाद ते ज्ञानि चाखे
 ॥ १३ ॥ आठे आतमा जगवई अंग मानो, उपयोग
 कषायने इव्य जानो ॥ जोग आतमा चउ ए अशुद्ध
 नाणो, वली शेष चारे शुद्ध नय प्रमाणो ॥ १४ ॥
 आदि ज्ञान त्रिहुं वीर्य ए चार कहियें, जव त्रमणनो
 जेहथी पार लहियें ॥ जेणें आतमा शुद्धनयें न जा
 एणो, तेणें बाह्य व्यवहारने ज्ञान मान्यो ॥ १५ ॥
 जे इव्य किरिया ठे ते अशुद्ध मानो, जडरूप आत्मा
 पुण्य पाप जाणो ॥ करे कल्प किरियाने वस्तु न जाणे,
 नैगमादि नय कल्पित जेद माने ॥ १६ ॥ कहे नाथ्य
 पंचकल्पमां ज्ञान जेने, आधार्कर्म जे आहार न दो
 ष तेने ॥ उपदेशमाला कहे आत्मरमणें, क्रिया बा
 ह्यथी हीन ते कहियें श्रमणें ॥ १७ ॥ इव्यें नाव प्र
 गट निमित्त कीजें, उपादान ते आत्मरमणें रमीजें
 ॥ निमित्त कारणें नयने कार्य सिद्धें, अंतें तांमवुं कार
 ण कार्य कीधे ॥ १८ ॥ यदा शुद्ध व्यवहारशुं श्रम की
 जें, तदा मुक्तिनुं सुख सुशीघ्र लीजें ॥ व्यवहार बलि

ए आवश्यक निर्युक्ते, रमे स्यादवादें रस तेह मुक्ते ॥
 ॥ १९ ॥ कह्यो शुद्ध व्यवहार सिद्धांत साचो, पट् इ
 व्य गुण पर्यवे चित्त राचो ॥ तामें पंच जड एक चैतन्य
 कीजें, नेद ठेदशुं चेतना चिन्हि लीजें ॥ २० ॥ उत्पा
 द व्यय रूप पर्याय जाणो, सत्ता ध्रुव जे इव्य अखंम
 मानो ॥ जंजे जाजन घट व्यय तेह होवे, पण मृत्तिका
 अखंम जे जगत जोवे ॥ २१ ॥ तातें चरण रू द
 र्शन ज्ञान रूप, नही सूर्यने किरणमां नेद कूप ॥ अ
 खंम रूपी भाहानंदकारी, नजो सिद्धरूपी महा सु
 रकारी ॥ २२ ॥ प्रदेश असंख्य आतम कहीजें, प्रदे
 शें प्रदेशें नंत ज्ञान लीजें ॥ नही नेद आतम परमा
 त्म जानो, कहे ग्रंथ समतिमां सुबुद्धि मानो ॥ २३ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ निश्चें अरु व्यवहार दो, कह्या सिद्धांतें सार ॥
 स्यादवादमें जे रमे, ते पामे नवपार ॥ २४ ॥ सौजा
 ग्य विजय प्रतापथी, हीरविजय सुखशांत ॥ मयावि
 जय मन मोदशुं, पावे सार सिद्धांत ॥ २५ ॥ इति श्री
 सिद्धांत पञ्चिशी समाप्ता ॥ इत्यात्मप्रबोधस्याद्वादग्रंथ
 प्रथममार्गे प्रथम आत्मविलासः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवन विलास प्रारंभः ॥

तत्र

॥ प्रथम श्रीसमेत शिखर गिरि स्तवनम् ॥

॥ बाबो रिखव बैठे अलबेले, मारो गुलाल मुठी
जरकें ॥ ए देशी ॥ फागमां गावानी ठे ॥

॥ आज आनंद जयो मोहे सजनी, समेत शिखर
नयणें निरख्यो ॥ जाव अपूरव जयो मोहे पूरन, म
न वचकाय हिये हरख्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ १ ॥
वीजे टूंकें वीश जिनेसर, अगुरु लघु गुन ए फरस्यो ॥
पुरुषादानी पास सामलिया, निरखत नयन अमी
वरस्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ २ ॥ लाल गुलाल अवीर
उडावो, केसर रंग बन्यो सरखो ॥ ताल मृदंग वेण म
फ बाजत, मधुर ध्वनि गावो हरखो ॥ आ० ॥ स०
॥ ३ ॥ जाड पहाड नदी खलके निऊरणां, कोयल
शब्द करे वृद्धो ॥ विविध जातिके पुष्प बिकसीयां,
पूरव पुण्यसैं ए पेख्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ ४ ॥ संव
त उगणी सडतीश वर्षें, फागुण शुदि पंचमी परख्यो
॥ शिखर गिरिवर दरिसन पायो, मयाविजय मन अ
ति हरख्यो ॥ आ० ॥ स० ॥ इति प्रथम स्तवनम् ॥

॥ अथ द्वितीय वीरजिन स्तवनम् ॥

॥ निर्मल होइ नज ले प्रभु प्यारा, सब संसारसैं
ए प्रभु न्यारा ॥ ए देशी ॥ पावापुरी श्रीवीरजिनेसर, मुक्ति
गये पंचमगतिगामी ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति पाये,
ज्योतिसैं ज्योत महासुखधामी ॥ पावा ॥ मु० ॥ १ ॥ त्री
जे अंश रहित शुचि निर्मल, परम पिंम, अवगाहन
स्वामी ॥ दरिसण नाण क्हायिक गुण जावें, लोकालो
क क्हायक बहु नामी ॥ पा० ॥ मु० ॥ २ ॥ नलि
नीगुल्म वैमान समानें, मंदिरमें प्रभु अंतरजामी ॥
कमल पुष्प सर शोभा सुंदर, धाम बन्यो जात्री वि
शरामी ॥ पा० ॥ मु० ॥ ३ ॥ मगधदेश पावापुर
नयरी, शिवनगरीकी ए सेजानी ॥ देखत अतिही आ
नंद नयो मोहे, पूरव पुण्यसैं ए फरसानी ॥ पा० ॥
मु० ॥ ४ ॥ संवत उगणी सडत्रीश वर्षे, चैत्र शुक्
ल द्वितिया मन मानी ॥ मयाविजय दरिसन अनिला
पा, पूरन नइ आतम सुखदानी ॥ पा० ॥ मु० ॥ ५ ॥

अथ तृतीय श्रीअंतरिकपारसजिनस्तवनम् ॥

निर्मल होइ नज ले प्रभु प्यारा ॥ ए देशी ॥

॥ पारसजिन तेरो दरिसन पायो, अब में शुद्ध श्रद्धा
घर आयो ॥ पा० ॥ पुरुषादानी तुंहि जिनेसर, अश्वमेन

वामादेको जायो ॥ पार० ॥ अब० ॥ १ ॥ नगरी बनार
सी जन्म सोहायो, समेतशिखर गिरि'मोक्ष सिधायो
॥ कमठ हठीको मान गुमायो, नागराय धरणिंद ब
नायो ॥ पा० ॥ अ० ॥ २ ॥ लोहधातु कंचन करे पा
रस, सो पारस मेरे दिलमें न जायो ॥ तुं तो आपस्व
रूप बनावे, ए अचरिज मेरे दिलमें आयो ॥ पा० ॥
अ० ॥ ३ ॥ अंतरिक जिन अंतरजामी, देखत नाथ
परम सुख पायो ॥ दक्षिणदेशें अधिक अनोपम, श्री
पुर नगरमें धाम सोहायो ॥ पा० ॥ अ० ॥ ४ ॥ संव
त् उगणी सडत्रीश शालें, माघशुदी तेरश दिन आयो
॥ अंतरिक पारस जिन नेटे, मुनी भया हरखित गुन
गायो ॥ पा० ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ चतुर्थ नेमजिनपदं ॥ राग कनडो ॥

॥ कमलसैं कमल दियो क्युं गोरी, शिवसुत त्रिया
ठांमि क्युं जोरी ॥ कमल० ॥ १ ॥ एक कमल धरनी
पर दरसे, कंठमाल क्युं तोरी ॥ हास्य बिनोद शयन
सुख नांही, कटिमेखल क्युं ठोरी ॥ कम० ॥ २ ॥ न
यनकमल वसुधा पर धारे, शीस लता क्युं मरोरी ॥
मुख तंबोल जाल बिंदी नाहीं, बिसरी सखी किहां
जोरी ॥ कम० ॥ ३ ॥ कहत राजिमती प्राण नथा

मो ए, शुद्ध बुद्धि लीनी ठगोरी ॥ में जोरी कबु जानत
 नाहीं, पकखो कर नाहिं दोरी ॥ कम० ॥ ४ ॥ प्रान
 नाथ बिनु प्रान न रहे ठिनुं, वृथा जनम गति मोरी ॥
 कहत मया परसंग ठांमि कैं, नेम राजुल जये जोरी
 ॥ कम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम पदं ॥

॥ जिनंदा तोरि वाणीयें मन मोह्युं, वाणी सु
 एतां जे जवहुःख खोयुं रे ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥
 वाणी मीठी अमृतसार, देई त्रिपदी लेइ गणधार ॥
 रचना रचता जे मनोहार, द्वादशांगीने अरथ विचार
 रे ॥ जि० ॥ वाणि सुएतां० ॥ १ ॥ जेहमां नय निह्ने
 प प्रमाण, सप्तजंगी रचनाना जाण ॥ इव्य गुण पर
 जायनुं नाण, जेहनै ध्याता अक्षय पद जाण रे ॥
 जि० ॥ वा० ॥ २ ॥ वाणी चउ अनुजोग प्रमाण, जे
 ठे गुण अनंतनी खाण ॥ समजे जापा सर्व सुजाण,
 गुण पांत्रीश वाणी वखाण रे ॥ जि० ॥ वा० ॥ ३ ॥
 योजनगामिनी वाणी जेह, राजे चोत्रीश अतिशय
 तेह ॥ बारे परखदा सुणवा नेह, ए वाणी अमीरस
 गेह रे ॥ जि० ॥ वा० ॥ ४ ॥ एहिज वाणीने आधा
 र, नविजन पामे जवनो पार ॥ दीये मोह चोरने

(१ ए)

मार,मया मुनिने एह आधार रे ॥जि०॥वा०॥५॥इति॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥ पद ठहुं ॥ माहरे तो धूजेवावालो घणुं मोघुं नाम ठे ॥ए देशी॥ राग काफी ॥

॥ महारे तो सिद्धगिरिजीना शरणचुं काम ठे, आदि जिनंद मोये आतम राम ठे ॥ महा० ॥ ए आंकणी ॥ कोइ सेवे काशी कोइ मथुरा बन, कोइ अयोध्या पति समरन राम ठे ॥ महा० ॥ आदि० ॥

॥ १ ॥ स्वयंमुख वीर जिनंद प्रकाश्यो, सिद्ध नंता नंतनुं ए धाम ठे ॥ म० ॥ मनमोहन प्रभु आदि जि नंदा, जगजंतु हितकारी विशराम ठे ॥ म०॥ १ ॥ ए तीरथ नवपार उतारन, सर्व तीरथनो ए मोहन श्याम ठे ॥ म० ॥ मयाविजय ए गिरि सेवता सुर, अनंता तिणें ए सुरगिरि नाम ठे ॥ म०॥ आ० ॥३॥

॥ पद सातमुं ॥ गजलजि,न नामकुं समर ले,या ब खत पाया है ॥ ए देशी ॥

॥ इस जुगमेंही तेरा कौ,हे नही सगा ॥ दगा हे स बहीमें,नही साचमें पगा ॥इस०॥ लोनकी लहेर माया, मोहमें लगा ॥ जान्यो न जिनधर्म तिने, आपकूं उगा ॥ इस० ॥ दगा० ॥ १ ॥ राव रंक चेद नांही, एक हे मगा ॥ जरा जन्म मरणादि शोक,लोकमें लगा ॥ आ

परूप ठोड पर, नाव में फगा ॥ जान्यो न निजरूप रा
मा, रंगमें रगा ॥ इस० ॥ दगा० ॥ १ ॥ एह अवसर
फेर, आवे न वगा ॥ अब चेत चेत मूर्ख मन, कौन है
सगा ॥ एक ब्रह्मरूप नही, दूसरो जगा ॥ नियत रूप
मयामुनि, वाकमें थगा ॥ ६०॥ दगा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आवमुं ॥ राग जंगलो ॥ नेम प्रचुने जोग
जीयो, गिरनारकी बताउ मोहे मागरीयां ॥ ए देशी ॥

॥ सांइं सज्जना कैसें में पावुं, अति डुरगम गति
बातडियां ॥ सांइं० ॥ अति० ॥ ए आंकणी ॥ एकमें
नेक अनेकमें एकज, जान परत नही जातडियां ॥
॥ सांइं० ॥ अति० ॥ १ ॥ करता करता मरता मर
ता, नट नागरसी जातडियां ॥ चिदानंद तुं रूपारू
पी, अगम अलखगति नातडियां ॥ सां०॥ अ०॥ १ ॥
परब्रह्म प्रभु तुंहिज पारस, चिंतामणि तुं चातडियां ॥
मयामुनि तुज रूप निहाली, दिनकरसें गइ रातडियां
॥ सां० ॥ अति० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग काफी ॥ श्याम तुने कुन
शीखाइ, ऐसी चाल ॥ ए देशी ॥

॥ श्याम मोहे ठांदि चले गिरनार ॥ श्या०॥ सब याद
वमिल व्याहन आए, पशुअन सुनी पोकार पोकार ॥

(११)

॥ श्याम० ॥ १ ॥ सहसावन जाइ संयम लीनो,
मोह चोर दियो मार मार ॥ श्या० ॥ २ ॥ शिव रम
नीको संगम कीनो, अष्ट करम कीये ठार ठार ॥
॥ श्या० ॥ ३ ॥ मया कहत शिवमंदिर पढोते, तारी
राजुल नार नार ॥ श्या० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥ होरी ॥ राग काफी ॥ पद कज लि
नो चंग ॥ ए देशी ॥ वीर जिणंद दयाल, नवि नेटो
प्रानी ॥ वी० ॥ देइ त्रिपदी गनधर परकाशी, तोडी मिथ्या
जाल ॥ न० ॥ वी० ॥ १ ॥ ज्ञानगुलाल सत्ता जो
लीमें, जरि लावो सुरसाल ॥ केसर करुना जरि पि
चकारी, ठिरको वाल गोपाल ॥ न० ॥ वी० ॥ २ ॥
उँकार धुनि मरदंग बजावो, चूको नहि ए ताल ॥
सुमता संगें रंग जर रमतां, मेटो मोह जंजाल ॥
॥ न० ॥ वी० ॥ ३ ॥ जन्म मरनकी होरी जलावो,
खेलो अपने ख्याल ॥ मया मुनी ए विधिगुं रमतां,
सादी अनंतो काल ॥ न० ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति ॥
पद अगियारमुं ॥ लावणी ॥ सुनियो बातां राव सदाशिव,
मत चड जानां धूलेवा ॥ ए देशी ॥

॥ ए जुग हे सुपनेकी माया, मृगतृष्णाजल जल
कानी ॥ रजु सर्पकी चांती आनी, फोगट मनमें

(११)

नय आनी ॥ ए जु० ॥ १ ॥ मर्कट कूकर रूप मुक
रमें, सिंह कूपमें जुस्कानी ॥ ज्युं जल पवन संयोग
सहाई, चंचलता गति उर आनी ॥ ए० ॥ २ ॥ पर
परनीतमें हरख शोक ए, जन्म मरन दुःखकी खानी
॥ काल अनंतो इहबिध जमतां, जिनवाणी नहिं स
मजानी ॥ ए० ॥ ३ ॥ चेत चेत अव मूरख प्रानी,
मनुअ जनम दुर्जन जानी ॥ वार वार अवसर नहि
पावे, ठोड विषय तुं अनिमानी ॥ ए० ॥ ४ ॥ समजे
शानमें बिरला कोइ, शाश्वत सुखकी सैलानी ॥ मया
मुनी ए अवसर पाइ, धर्म मर्म जुगती जानी ॥
॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धांत सारस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपनादिक जिनवर नमी, सार सिद्धांत प्रका
श ॥ तत्त्वज्ञान वर्णव करुं, आतम गुन सुविलास
॥ १ ॥ आतम गुण बिन जे क्रिया, इंइजाल सम होय
॥ नवसमुद्रनो पार ते, पामीजें नवि कोय ॥ २ ॥ आ
तम गुण साधन क्रिया, प्राणायाम अन्यास ॥ सोहं
पदने समरतां, पामे शिवपुरवास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥राग कनडो ॥ कुंथु जिन मनडुं किमही न बाजे॥ए
देशी ॥ अब में प्रवचन मारग पाया,चिदानंद दरसाया
॥अब०॥ ए टेक॥ ऊर्ध्व स्थान साहेबका वासा, पश्चिम
मार्ग धराया ॥ उलटी नाडी चडे कमाडी, उलटा
पवन ठराया ॥ अब० ॥ १ ॥ रेचक पूरक कुंजक शां
तक, चारु चेद श्रुत गाया ॥ खेचरी नूचरी चाचरी
गोचरी, औ न मुनी लय लाया ॥ अब० ॥ २ ॥ गंगा
जमुना मथ्य सरसती, तरवेणी तिर पाया ॥ कर्म
मलिनता दूर करनकूं, ए तीरथ मुनि आया ॥ अब०॥
॥ ३ ॥ मन बच काय इहां थिर होवे,एह जोग जिने
पाया ॥ ए विन योग क्रिया नहि होवे, योगशास्त्रमें
गाया ॥ अब० ॥ ४ ॥ इव्य योग साधन ए किरिया,
जाव योग उपाया ॥ इव्य योगतें जावको कारन,
कारन कार्य निपाया ॥ अब० ॥ ५ ॥ परपरनीतमें
न्यारा होवे,निज परनीत घर आया ॥ एह जोग सा
धन नवि जाने, कहे में जोग बहाया ॥ अब० ॥ ६ ॥
जोग वही जड जोग न ठंमया, यूंही जन्म गमाया ॥
वाऊ क्रिया करि काय किलेशें, जूठा जग जरमाया
॥ अब० ॥ ७ ॥ जिन शासनको मरम न जान्यो, जै

नी नाम धराया, ॥ आतमगुणमें जे मुनि रमता,
जन्म मरन मेष्टाया ॥ अ० ॥ ७ ॥ अंक बिना विंड
नहिं गणना, वेश अनेक बनाया ॥ समकित अंक
धरे जे पूरवें, शिवमार्गमें आया ॥ अ० ॥ ८ ॥ गुरु
कृपा जे अंक धराया, सो प्रानी शिव पाया ॥ मयामु
नी नवदुःख मिटाया, सादिअनंत निपाया ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग विहाग ॥ क्या करुं मंदिर, क्या करुं दमरा.
न जानुं कां उड वेठेगा नमरा ॥ अथवा गिरिज
दरिसन विरला पावे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनशासन मोहे सुखकारी, नवजन जावठ
दूर निवारी ॥ श्रीजिनशास० ॥ ए टेक ॥ चउ अनु
योग सिद्धांतमें गाया, इव्यानुयोग आतमगुण पाया
॥ श्रीजि० ॥ ज० ॥ १ ॥ पंच इव्य जड दूर निवारी,
आतम इव्य मोह सुखकारी ॥ पिंपपदस्थ रूपस्थ
रूपातीत, चार ध्यान मुनिवरने ए चित ॥ श्रीजि० ॥
॥ ज० ॥ २ ॥ आतम सो सामायिक जानो, सामा
यिक सो आत्म प्रमानो ॥ जगवड अंगें ए अधिका
रा, एह सामायिक ग्यान विचारा ॥ श्री० ॥ ज० ॥ ३ ॥
अनुजव विण नव पूर्व कहाया, सो ए ज्ञान गिनति

में नाया ॥ मिथ्यादृष्टी अंतर राजे, जिन मुझाके
 वेश न ठाजे ॥ श्री० ॥ ज० ॥ ४ ॥ जैसें नटवर वेश
 बनावे, रामकृष्ण पद तेह न पावे ॥ समकित विण
 समकित गुण ठावे, सो मिथ्यात्वी मोहू न पावे ॥
 ॥ श्री० ॥ ज० ॥ ५ ॥ बोखा उंदर सलिया धाना,
 जेवा गुरु तेवा जजमाना ॥ बीज बोया विण नाज
 न होवे, फांगट कष्टे निज गुण खोवे ॥ श्री० ॥ ज० ॥
 ॥ ६ ॥ नाम वेपशुं काम न सीजे, अंतरध्यानें साहे
 व गीजे ॥ नवविध जाव लोच जब होवे, दशमो केश
 डव्य लोच जोवे ॥ श्री० ॥ ज० ॥ ७ ॥ नव विण के
 श लोच जे कीजें, ते देखीने मूरख रीजे ॥ एम अ
 जाणने फंदें पाडी, स्यादवाद जिनशैली बिगाडी ॥
 ॥ श्री० ॥ ज० ॥ ८ ॥ दृष्टिरागसें धर्म चलावे, जैन
 वचनकूं दूर गुमावे ॥ स्यादवाद जे वाणी वखाणी,
 सो जिनवाणी समजो प्राणी ॥ श्री० ॥ ज० ॥ ९ ॥
 पहेलुं नाण पनें कही किरिया, ज्ञान बिना बहु मदमें
 जरिया ॥ नाम अग्नि लिख पत्र कोउ मारे, दारुको
 श कबहूं नवि जारे ॥ श्री० ॥ ज० ॥ १० ॥ साच
 क्रिया जे आतम साखी, दोष रहित वीतरागें जा
 खी ॥ जे मुनि आतम ज्ञानबिलासी, सो मुनि अ

(१६)

तें शिवपुरवासी ॥ श्री० ॥ न० ॥ ११ ॥ इह बिध
अपनी अप्रनी गावे, मारग साचा कोउ न पावे ॥
साचा मारग जो कोउ पावे, बाद बिबाद सहू मिट
जावे ॥ श्री० ॥ न० ॥ १२ ॥ केइ अपना पद आप
संजारत, केइ गुरुकी मुखकी सुनि बानी ॥ मयामुनी
गुरुबानी ठेरानी, सिद्धांतसार जिनबानी जानी ॥
॥ श्री० ॥ न० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ महारे दीवाली थई आज, जिनमुख जोवाने ॥ ए देशी

॥ श्रीजिनशासनमांहि, जिनलिंग धारी रे ॥ जि
नवाणी करीने दूर, शिवगति वारी रे ॥ केई दया द
याने पोकार, अहनिश करता रे ॥ वेप मलिनता धा
र, मूरख फरता रे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ उच्च नीच घर
जाइ, सूजतुं कहेता रे ॥ नहानह आहार, इमही
ज लेता रे ॥ जिन प्रतिमाने ठाम, जडदिशि जोवे
रे ॥ कारण विण कहो कार्य, केणि परें होवे रे ॥
॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ मुख बांधी मुनि वेप, जडमति
जाली रे ॥ मोहगती एम होय, बांधुं राली रे ॥
नाप्य टीका निर्युक्ति, चूर्णी न धरता रे ॥ सूत्र सूत्र
पोकार, फोगट करता रे ॥ श्रीजि० ॥ ३ ॥ आत्म

गुण विण जे जे, करजो करणी रे ॥ नव समुझनो
 पार, नांहि उतरणी रे ॥ कोउ जिन' कल्पी वीहा
 र, मनमां धरता रे ॥ निज कल्पित पूराण, रचना
 करता रे ॥ श्रीजि० ॥ ४ ॥ स्त्रीने मुक्ति न होय, एहबुं
 दाखे रे ॥ सिद्धना पणदस जेद, जिनवर जाखे रे ॥
 केवल ज्ञानने काज, वस्त्रने वारे रे ॥ ए आदिकल्पित
 जेद, मनमें धारे रे ॥ श्रीजि० ॥ ५ ॥ केइ नास्तिक
 केइ बोध, मोहें घेखा रे ॥ कृष्ण लीलामें केइ, रास
 रमि ख्या रे ॥ राग द्वेष नवमूल, लीला लहियें रे ॥ ते
 परमात्म नांहि, नवचक्रें कहियें रे ॥ श्रीजि० ॥ ६ ॥
 एम अनेक मत जेद, दर्शन दाखे रे ॥ आप आप
 नो धर्म, सद्गुये जाखे रे ॥ स्यादवाद जिनमार्ग, धर्म
 कहावे रे ॥ नय एकांत निवारि, विरला पावे रे ॥
 ॥ श्रीजि० ॥ ७ ॥ जिनवाणी रसकूप, बहु नय धारी
 रे ॥ नय एकांत निवारि, मुक्त मन प्यारी रे ॥ ते का
 रण मनमांहि, जिनमत धारी रे ॥ समजी सार सि
 द्धांत, हठ परिहारी रे ॥ श्रीजि० ॥ ८ ॥ त्रिकरण
 योगें जेह, मनमां धरजो रे ॥ नवसमुझनो पार, न
 विजन करजो रे ॥ निश्चय नय व्यवहार, दोय नय
 ग्रहियें रे ॥ अंतर दृष्टिमांहे, निश्चें रहियें रे ॥ श्री

जि० ॥ ए ॥ आतमज्ञानने काज, सजुरु मेवो रे ॥
ग्यानादिक गुण जेह, चाखो मेवो रे ॥ करि थिर म
न वच काय, चित्तमां धरियें रे ॥ मया मुनी जव सिं
धु, पार उतरीयें रे ॥ श्रीजि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ खबर नहिं आ जुगमें पलकी, सुकृत ॥ ए देशी ॥
॥ चतुर नर मनकुं समजानां, मनकी संगत हरि
हर ब्रह्मा, जूल गये ध्यानां ॥ च० ॥ ए टेक ॥ १ ॥
कमला कृष्ण लीन हर गौरी, राम रहे रानां ॥ इ०
अहिंसा संग करनकुं, गौतम घर जानां ॥ च० ॥
॥ म० ॥ २ ॥ प्रश्नचंद मुनि मनकी संगत, नरक
गती आनां ॥ मनकी संगत ठांफ के निज गुन, पाय
केवल ग्यानां ॥ च० ॥ म० ॥ ३ ॥ साधवी लखम
णा मनकी संगत, बहुत काल जमनां ॥ सिंह गुफा
वासी साधुकुं, रत्नकंबल जानां ॥ च० ॥ म० ॥ ४ ॥
मन साधन बिन सबही निष्फल, क्रिया कष्ट कर
नां ॥ संध्या रंग समान ए किरिया, बाऊ रंग धरनां ॥
॥ च० ॥ म० ॥ ५ ॥ एम अनेक ग्यानी ध्यानीकुं,
मन डुकर ठानां ॥ मयामुनी सदगुरुकी संगत, मन
बस शिव जानां ॥ च० ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हे जोशादाजी अवडो लाडकवांयो ॥

॥ लाल न कीजियें ॥ ए देशी ॥

॥ हे मुनिवरजी, जिन घर रमण करंतां अखय सु
ख लीजियें ॥ पर संग तजी, निज सत्ता अनुजव अ
मृत रस पीजियें ॥ ए टैंक ॥ पररमण करंतां मोहव
शें, व्यजिचारी कहीने लोक हसे, निजसत्ता परिकर
दूर खसे ॥ हे मु० ॥ १ ॥ एम आचारंग टीकायें कहे, द
र्शन विण चारित्र जेह लहे, तेतो खर चंदननो नार
वहे ॥ हे मु० ॥ २ ॥ अंबरमें खगपद खोज करे, पुजल
परिणामें धर्म धरे, ते तो नव अनंता नंत करे ॥ हे
मु० ॥ ३ ॥ किरिया लव ज्ञानीनी कही, जेथि नव न
य जावठ दूर गइ, जिम नरत नरेसर सिद्धि लही ॥ हे
मु० ॥ ४ ॥ जेम अंग उपंग दीसे रूडां, एक नाक विना
कहियें कूडां, तिम अनुजव विण बोले सूडा ॥ हे मु०
॥ ५ ॥ ते माटे अनुजव साध्य करे, निश्चय नय ने
व्यवहार धरे, तो सहेजें शिवरमणीने वरे ॥ हे मु० ॥
६ ॥ एम स्यादवाद जिनमार्ग कह्यो, सिद्धांत सारमां
जेह लह्यो, मयामुनिने अविचल तेहथयो ॥ हे मु० ॥ ७ ॥

(३०)

॥ ढाल ठछी ॥

॥ अब देख्या हमेरा स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ अब देख्या में अंतरजामी, महा सुखसागर विशरामी रे ॥ अब ० ॥ जूल अनादि भ्रमणता जागी, चेत ना नइ निःकामी रे ॥ अ० ॥ म० ॥ १ ॥ अतींद्रिय सुख सेज समाधी, जोग अनंतनो धामी रे ॥ अ० ॥ लगी लगन मोहे कबहू न टूटे, उरमें प्रीत में वामी रे ॥ अ० ॥ म० ॥ २ ॥ चंद चकोरकी उपमा सुजनी, नाथ जयो बहु नामी रे ॥ अ० ॥ रसना सहस्र करे जो कोइ, होत न बरनन स्वामी रे ॥ अ० ॥ म० ॥ ३ ॥ समजे शानमें विरला कोई, कहेन सुनन न हि कामी रे ॥ अ० ॥ मयासुनी गुरु शानमें समजे, विरला कोउ जवि प्रानी रे ॥ अ० ॥ म० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ गागरियां मत ढोर काना, में तो दउंगी गारी ॥ ए देशी ॥

॥ ढिन ढिन ढिन सांइं सांइं, समरत सुखकारी ॥ जाकी ज्योति हे अपार, लागत मोय प्यारी ॥ ढि० ॥ ॥ ए टेक ॥ १ ॥ एकमें अनेक हे, अनेकमें अविकारी ॥ जोगता अजोगता हे, जाकी गति न्यारी ॥ ॥ ढि० ॥ २ ॥ करता अकरता हे, सर्वरूप धारी ॥

(३१)

रूप नहि रंग नहि, ताकी बलिहारी ॥ ठि० ॥ ३ ॥
सत्तामें स्वरूप एक, अविचल अविकारी ॥ परजाय
रूपमें तो, नाना रंगधारी ॥ ठि० ॥ ४ ॥ एह बिध
स्यादवाद, आत्म हीतकारी ॥ मया मुनी गुरु प
साय, नवकी नीति टारी ॥ ठि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सखरेमें सखरी कोन, जगतकी मोहनी ॥ ए देशी ॥

॥ निज घर आये नाथ, शोना बनी जेहनी ॥ बरनी
मुखथी न जाय, अनंती तेहनी ॥ लोकालोक स्वरू
प, केवल ज्योती धरी ॥ परजय रूप अनंत, सत्तामें
संवरी ॥ हां हां रे सत्तामें संवरी ॥ प्यारे लाल, सत्ता
में संवरी ॥ १ ॥ आप स्वरूप प्रकाशी, अनंत शोना
बनी ॥ नवजय जावठ नागी, अनंत रुझी वरी ॥
जगजीवन जगनाथ, अखंम रूपें थया ॥ कर जो
डीने आगें, देव देवी रह्या ॥ हांहांरे देव० ॥ प्यारे० ॥
॥ निज० ॥ २ ॥ अणहुंते एक क्रोड, देव सेवा करे ॥
धर्मचक्र प्रभु आगें, चिहुं दिशि संचरे ॥ इति न
सात प्रकारें, प्रभु जिहां पग धरे ॥ नव्य जीव प्रति
बोधी, अह्य सुखने वरे ॥ हां० ॥ अ० ॥ प्यारे० ॥
॥ नि० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य आव, पांत्रीश वाणी जेह

नी ॥ वरणी मुखथी न जाय, शोजा बनी तेहनी ॥
 चोत्रीश अतिशय ठाजे, राजे पद्मासनैं ॥ आलंबन
 ग्रही एह, ध्यावो एके मनैं ॥ हां० ॥ ध्या० ॥ प्या०
 ॥ नि० ॥ ४ ॥ शुद्ध निमित्त ए आतम, समरण दाव
 ठे ॥ निज परसत्ता जाणंग, शुद्ध स्वभाव ठे ॥ ते का
 रण तुमें गावो, ध्यावो आतमा ॥ नवतारण निन
 वाणी, वदे परमातमा ॥ हां० ॥ व० ॥ ध्या० ॥ नि
 ज० ॥ ५ ॥ ते माटे परमाद, तजी परसंगने ॥ एह
 अपूरव जाव, ध्यावो एके मनैं ॥ अविनाशी अक्षय
 सुख, साधन एह ठे ॥ मया विजयने साचो, धर्म म
 नेह ठे ॥ हां० ॥ ध० ॥ प्या० ॥ नि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ में जो रहूं घरके मांहि, जोवन सब लूटे, में
 चलुं नेमके संग, तार किम त्रूटे ॥ ए देशी ॥ अब के
 तिक उपम कहूं, चिदानंद केरी ॥ जे दरस फरससैं
 होत, नही नव फेरी ॥ जे नवसमुझमें पोत, ज्ञानगुन
 लहैरी ॥ समजावैं मुक्ति संसार, मित्र अरु वेरी ॥ अब
 केतिक० ॥ जे० ॥ १ ॥ अब राव रंकमें चेद, नही
 प्रभु धारी ॥ तुं लोकालोक निहाली, रहे अविकारी ॥
 तुफ कारन जंगम जोग, वेष बहु नारी ॥ अधोमुख

उंची बांह, जटा शिर धारी ॥ अब केतिक० ॥ जे० ॥
 ॥ १ ॥ तुं सहज स्वनावें, प्रगट होय न हठेरी ॥ तुज
 समकित समरन जोग, लहे को लहेरी ॥ ए अनुभव
 रसको स्वाद, लग्यो मोहे ठेरी ॥ मया मुनी परव
 रति, दूरसें घेरी ॥ अब केतिक० ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॥
 ॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जशोदा तेरे कानें ए कपट कि
 या ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी मेरी लगी लगन तुमहुं ॥
 अवर देव मुज मन नहिं जावे, तुम चरणे रमहुं ॥
 ॥ प्र० ॥ १ ॥ तुम बिन कृण एक दर न रहेहुं, मन
 वंछित लेहुं ॥ प्र० ॥ जो रीजी देशो तो लेहुं, नहि
 तर हठ ग्रहेहुं ॥ प्र० ॥ २ ॥ कबजे आव्या हवे कि
 म करी बूटो, जंजीर जडी देहुं ॥ प्र० ॥ एम करतां
 तदरूप न करशो, अंतें पण लेहुं ॥ प्र० ॥ ३ ॥ मया
 करी अविचल सुख आपो, पठें नही कहेहुं ॥ प्र० ॥
 सौजाग्यविजय गुरु चरण पसार्यें, नवजय दुःख
 हरहुं ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गाया रे आज हमारे जाग्य जागे, परमात्म गुन
 गाया रे ॥ आ० ॥ पूरव पुण्य उदय नयो मेरो,

रसनाना रस पाया रे ॥ आ० ॥ १ ॥ संवत उगणी
 गुण चालीशें, काति पुनम दिन आया रे ॥ आ० ॥
 रही बंदिर वडसाल चोमासुं, संध सकल हरखाया
 रे ॥ आ० ॥ २ ॥ एह स्तवन जे जणशे गुणशे, तसु
 सुर नर नमै पाया रे ॥ आ० ॥ सौजाग्यविजय पर
 ताप पसायें, हीरविजय सुपसाया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥
 बालचेष्टा मन हरख जराया, अल्पमति ए गाया रे
 ॥ आ० ॥ मयाविजय गुरु चरन पसायें, आतम
 अनुजव पाया रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति सिद्धां समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

॥ पासजी जग धणी रे, माहरी तुम आगल जाखुं
 ॥ ए देशी ॥ आदिजिन साहेबा रे, जगनी आदि क
 रण अरिहंत ॥ ब्रह्मा ब्रह्मनो रे, जाणग पासग तुं
 जगवंत ॥ तुज सम को नही रे, जगमां देव न कोउ
 दयाल ॥ करुणानिधि प्रभु रे, करि करुणा कर ग्रहि
 यें कृपाल ॥ आदि० ॥ जगनी० ॥ १ ॥ मनडुं माह
 रुं रे, मदमातुं मयगल मठराल ॥ तुज चरणो नवी
 रे, विलगे वामगती विकराल ॥ योगनी चपलता रे,
 चंचल चित्त ते चमक पाषाण ॥ लोह कर्म आकर्ष
 तो रे, समजे नही तुज वचन सुजाण ॥ आदि० ॥

(३५)

॥ ज० ॥ ३ ॥ इंदिय वश पड्यो रे, पढीयो प्रेम पा
सनी जाल ॥ पर परिणामशुं रे, नमिबो नव अट
बी नूतकाल ॥ व्रत नीम नवि धर्यां रे, धरियां तो
पण नवि करीयां ॥ मनुअ जनम लही रे, पापें पिं
न अति जरिया ॥ आ० ॥ ज० ॥ ३ ॥ लोकालोकना
रे, झायक अगम अगोचर नाथ ॥ शी कहुं माहरी
रे, वीतक विविध प्रकारें वात ॥ आज मुऊने मल्या
रे, मलिया मूकुं नहीं महाराज ॥ नेह नजर करी रे,
निरखी सारो अमारुं काज ॥ आ० ॥ ज० ॥ ४ ॥
कृष्णवद्वज्जी पुरें रे, परगट पेंख्या देव में आज ॥
तारीयें तेहने रे, शरण आव्यानी रखियें लाज ॥
सौभाग्य प्रतापथी रे, हीरविजय गुरुने सुपसाय ॥
मयाविजय तणां रे, पातक सघलां दूर पलाय ॥
॥ आ० ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति श्रीआदिजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥

॥ महारा सम बोलोने मावा ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिन वंदो नर नारी, प्रभु मुख मुडा अवि
कारी ॥ वी० ॥ ए आंकणी ॥ सिद्धारथ कुलमां अव
तारी, मात त्रिशलादे उर धारी ॥ सकल जीवना हि
तकारी ॥ वीर० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ कुंमलपुर नगरी ब

जिहारी, जिहां प्रभु जन्म्या जयकारी ॥ पावापुरी
वरिया शिवनारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥ १ ॥ वीर शासनने
उपगारी, देइ त्रिपदी गणधर धारी ॥ मिथ्यात्व त्रम
ए दूरें वारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥ २ ॥ हरि लंठन
प्रभुपद धारी, राग छेप दूरें वारी ॥ आप तखा प्रभु पर
तारी ॥ वी० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ बंदर बलसाड शोना सारी,
वीरजिन वेठा सुखकारी ॥ मयाविजय दिलमें धारी
॥ वी० ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ समवसरणस्थ जिनवाणी स्तवनम् ॥

॥ ऐसी सुणी महाराज, अनुभव प्रीति जगाइ ॥ ए देशी ॥

॥ सखी आवोने आज आनंद, वीरजिन वाणी
सुणावे ॥ पुष्करावर्त्त जिम मेघ, नवजय ताप समा
वे ॥ समवसरण जिनराज, शोना कह्यो न जावे ॥
चार निकायना देव, मली सुरवधु गुण गावे ॥ स० ॥
॥ १ ॥ साखी ॥ गुण गावे सुर नरवरा, उजा वे कर
जोड ॥ प्रभुजी दीये देशना, सारे वंछित कोड ॥
॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चार० ॥ सखी आ० ॥ १ ॥
चोत्रीश अतिशय राजता, पांत्रीश वाणी सार ॥ प्रा
तिहारज शोना घणी ए, कहेतां नावे पार ॥ वी० ॥
॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ३ ॥ जेम सूरज उगे थके, टा

ले सवि अंधकार ॥ प्रभुवाणी तिम प्रसरति, मिथ्यात्व
 अंधेर निवार ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ४ ॥ जे
 मिथ्यात्वी जीवडा, पामे नही जवपार ॥ सरधाविण
 वाणी सुणे, एने जन्म मरणनो मार ॥ वी० ॥ पु० ॥
 ॥ स० ॥ चा० ॥ ५ ॥ रोहिणीए चोरें सुणी, वाणी
 एकज वार ॥ तिम वृद्धा मोसी सुणी, ए तो पाम्यां
 जवनो पार ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ६ ॥ ए
 वाणी अमृत समी, जाणो रसायण रूप ॥ जेहने
 अंतर ऊतरे, ते होये त्रिभुवननूप ॥ वी० ॥ पु० ॥
 ॥ स० ॥ चा० ॥ ७ ॥ संवत उगणी गुणचालीशमां,
 रही वलसाड चउमास ॥ वीर जिणंदने वांदतां, पोहो
 ती मननी आश ॥ वी० ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ८ ॥
 ए वाणी हमणां ठती, आगममां निरधार ॥ मया
 विजयने मन वसी, सौभाग्य विजय उपकार ॥ वी० ॥
 ॥ पु० ॥ स० ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ अथ सात वार गर्जितस्तवनम् ॥

॥ सखि कार्तिक मासें मेली, कंथ सधावीया ॥ एदेशी ॥

॥ सखी आदित्य वारें आज, आनंदमां आवीयें ॥
 प्रभु नेटी वीर जिणंद, आतम गुण जावीयें ॥ सखी
 सोमें सुमती घेर, जइ वासो रहीजीयें ॥ व्रत नीयम

पञ्चस्काण, गुरु मुख लहीजीयें ॥ सखी आदि० ॥ प्र० ॥
 ॥ १ ॥ सखी मंगल वारें मननी, बुद्धि कीजीयें ॥ मात
 पिता गुरु देवनी, आशीष लीजीयें ॥ सखी बुद्धें बुद्धि
 निर्मल, राखो रंगमां ॥ ग्यान ध्यान निश दीस, करो
 गुरु संगमां ॥ स० ॥ आ० ॥ १ ॥ सखी गुरुर्यें
 गुण अनंत, वर्णव केम कीजीयें ॥ लोकाकार स्वरू
 प, निहाली लीजीयें ॥ सखी सुकरें शांति जिणंदनी,
 सेवा कीजीयें ॥ संतपणुं जेम होय, समजाव रही
 जीयें ॥ स० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सखी शनियें सनमुख
 निरखो, सिद्धगिरि शाश्वतो ॥ एह अपूरव जाव, आ
 तममां जावतो ॥ सखी यावर ज्योती सिद्ध, अनंती
 जिहां वखा ॥ मयाविजयें एहना, गुण दिलमां ध
 खा ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति सात वार गर्जित स्तवनम् ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवनम् ॥

॥ श्रीसुपार्श्वजिन वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लि जिणंद मया करो, मनमां आणी महेर
 ललना ॥ तुम शासन सोहामणुं, जेहवी सायर ल
 हेर ललना ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ मिथिला नयरी जनमि
 या, प्रजावती जसु मात ललना ॥ कुंजराजा सुत सा
 हेबो, नील वरण विख्यात ललना ॥ म० ॥ १ ॥ ५

चवीश धनुष्यनी देहडी, कलश लंढन प्रभु पाय ल
लना ॥ सहस्र पचावन आउखुं, नमतां शिवसुख
थाय ललना ॥ म० ॥ ३ ॥ समेत शिखरगिरि ऊपरें,
ज्योतिशुं ज्योति मिलाय ललना ॥ सादि अनंत सुख
पामीया, शोना कहिय न जाय ललना ॥ म० ॥ ४ ॥
पांचमे आरे प्राणीने, परगट परतो तुझ ललना ॥
तुम दरिसन मुख देखतां, आनंद उपन्यो मुझ ललना
॥ म० ॥ ५ ॥ जोयणी नयर विराजता, प्रगढ्या चूमि
सुनाथ ललना ॥ संवत् उगणीश त्रीशमां, संघ मढ्यो
बहु साथ ललना ॥ म० ॥ ६ ॥ देश चुंआल पावन
कीयो, जात्री अनेक ते जाय ललना ॥ प्रभु पूजा
परजावना, साहामी वत्सल नित्य थाय ललना ॥
॥ म० ॥ ७ ॥ सोलंकी राणाना राज्यमां, जोयणी
नगर ठे जेह ललना ॥ केवल पटेलना खेत्रमां, प्रग
ढ्या प्रभुजी एह ललना ॥ म० ॥ ८ ॥ देशमां सुंदर
सोहतो, धाम बन्यो मनोहार ललना ॥ मयाविजयने
ताहेरा, शासननो आधार ललना ॥ म० ॥ ९ ॥ इति ॥
॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं ॥ उपरनी देशीमां ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेबा, जगतजंतु विशराम लल
ना ॥ मात पद्मावति जनमीया, देहडी सुंदर श्याम

ललना ॥ श्री मुनि॥ १ ॥ सुमित्र कुलमां दिनमणी,
 राजगृही राजान ललना ॥ कूर्म लंठन पद सोहतुं,
 आयु त्रीश सहस मान ललना ॥ श्री मु० ॥ २ ॥
 वीश धनुष्य देह दीपतो, शोभा कहीय न जाय लल
 ना ॥ सादि अनंत सुख पामीया, जस समखां सुख
 थाय ललना ॥ श्री मु० ॥ ३ ॥ अश्व प्रतिबोधन का
 रणें, जरुअच नयर मजार ललना ॥ पाउ धाव्या
 पोतें तिहां, करवा नवि उपगार ललना ॥ श्री मु० ॥
 ॥ ४ ॥ जरुअच नयरें जेटीया, श्रीमुनिसुव्रत नाथ
 ललना ॥ मयाविजय मन हर्खशुं, पाम्यो शिवपुर
 साथ ललना ॥ श्री मु० ॥ ५ ॥ इति वीरस्तवनं ॥

॥ अथ पंचतीर्थी स्तवनम् ॥

॥ कोयलो पर्वत धूंधलो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ आबु जिनवर जुहारियें रे लाल, उतरवा नव
 पार मन मोह्युं रे ॥ रिखन जिनंदने वंदीयें रे लाल,
 देलवाडें सुखकार मन० ॥ आबु० ॥ १ ॥ धातूमय
 सोवन समी रे लाल, चउमुख आदि चउद मन० ॥
 अविचल गढनी उपरें रे लाल, देखत उपजे प्रमोद
 मन० ॥ आबु० ॥ २ ॥ विजोवे जिन वंदीयें रे लाल,
 वरकाणे श्रीपास मन० ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी

रे लाल, जविजननी पूरे आस मन० ॥ आबु० ॥
 ॥ ३ ॥ नांदोलें नमीजीयें रे लाल, पद्म ने शांति जि
 एंद मन० ॥ त्रीजा नेम जिनेसरू रे लाल, सेवा सारे
 इंद मन० ॥ आबु० ॥ ४ ॥ नारुलाई नित नमो रे
 लाल, नेम ने आदि जिणंद मन० ॥ एकादश जिन
 देहरां रे लाल, देखत उपजे आनंद मन० ॥ आबु०
 ॥ ५ ॥ घाणोरें महावीरजी रे लाल, चोवीशमो जि
 नराज मन० ॥ वंदी सादरी आवीयें रे लाल, सारो
 आतम काज मन० ॥ आबु० ॥ ६ ॥ राणपुरें जि
 नदेहरूं रे लाल, शोजा कहिय न जाय मन० ॥ न
 लिनी गुल्म विमाननं रे लाल, आकारें कहेवाय
 मन० ॥ आबु० ॥ ७ ॥ बंजणवाडे वीरने रे लाल,
 गोपें उपसर्ग कीध मन० ॥ ए आदी तीरथ जलां रे ला
 ल, वंदी आतम सुख लीध मन० ॥ आबु० ॥ ८ ॥
 संवत उगणी चालीशमां रे लाल, जेटवा श्रीजिनरा
 ज मन० ॥ मयाविजय ए वंदतां रे लाल, साखुं आ
 तम काज मन० ॥ आबु० ॥ ९ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवनम् ॥

॥ हे सुखकारी, आ संसार थकी जो मुऊने उर
 रो ॥ ए देशी ॥ जवि जेटो आज, श्री तारंगे अजित

मुख निरखो चंदने ॥ तुमैं ध्यावो राज, जितशत्रु विज
या राणीना नंदने ॥ ए अजित अजित वीतराग
कह्यो, जेणें कर्म शत्रुनो अंत लह्यो, ए तो परमानंद
अविचल थयो ॥ नवि जेटो० ॥ १ ॥ साडा चारणें
धनुष्य प्रमाण कह्युं, जस कंचन वरण शरीर लह्युं,
गज लंठन चरणो चित्त रह्युं ॥ नवि० ॥ २ ॥ ए
जगजीवन जगनाथ कह्यो, जे नव्यजीव ते शरण ल
ह्यो, मयाविजयने ते अविचल थयो ॥ नवि० ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥

॥ नेक नजर करो नाथजी, जिम जाये दारीदर
आजथी जी हो ॥ नेक नजर करो नाथजी ॥ ए देशी ॥

॥ जावें नजो महावीरने, ए हरवा अनादिनी पी
रने जीरे ॥ जावें नजो महावीरने ॥ ए रत्न चिंताम
णि धारीयें, ए अवसर पाम्यो न हारीयें जीरे ॥ जा
वें० ॥ ए वार वार योग नही बनें, किम थइ रह्या ठो
झूने मनें जीरे ॥ जावें० ॥ १ ॥ ए तो पढी घणुं पस्ता
वशो, ए अवसर किहांथी लावशो जीरे ॥ जावें० ॥
ए जन्म मरण नय वारीने, जिन वचन हृदयमां धा
रीने जीरे ॥ जावें० ॥ २ ॥ ए तो पूरण परमानंद ठे,
परियह रागादि ए फंद ठे जीरे ॥ जावें० ॥ मयावि

जय करी महावीरने, नजो मेरु अचल ज्युं धीरने
जीरे ॥ नार्वेण ॥ ३ ॥ इति वीरजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ समवसरण स्तवन प्रारंभः ॥

॥ अजित जिनेसर चरणनी सेवा ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरणनी शोना सारी, बेठा जिन हित
कारी ॥ चवमुख चउगति वारक स्वामी, वंदे सुर न
र नारी ॥ प्रभुजी तुळ सम अवर न कोइ, नविजनने उ
पगारी ॥ तुळ मुडा अविकारी, मुळ मन लागे
प्यारी ॥ प्रण॥१॥ ए आंकणी ॥ योजन रचना सम
वसरणनी, परषदा बार बिराजे ॥ त्रण प्राकार मणि
रत्ननी शोना, अशोकवृद्ध जिहां ठाजे ॥ प्रभु ॥
॥ २ ॥ द्वारपाल सुर चिहुं दिशि सोहे, पुष्करिणी म
न मोहे ॥ सहस्र योजननी ध्वजा पताका, देव डुंडुनि
घन घोहे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ चोत्रीश अतिशय पांत्रीश
वाणी, सुर वांसली स्वर पूरे ॥ मणिमय पीठ मुक्ता
फल ठत्रे, बेठां नवि दुःख चूरे ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ जा
मंमल प्रभु पूंठे बिराजे, तेजे दिनकर जीपे ॥ चामर
पुष्पवृष्टिनी रचना, देवठंदे प्रभु दीपे ॥ प्रभु ॥ ५ ॥
आप आपनी जाषा समजे, संदेह मनना टाले ॥ नि
ज स्वरूप रमणता करतां, आतम शक्ति निहाले ॥

प्रभु० ॥ ६ ॥ जिहां जिन विचरे सवासो योजन,
इति नही सात प्रकारें ॥ एह अतिशय जिनने ठाजे,
नमतां दुर्गेति वारे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ वैर विरोध इहां
नहीं दीसे, सर्व प्राणी मन हीसे ॥ समवसरणनी एह
वी रचना, देखी दुर्मति पीसे ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ संवत उग
णी सडन्नीश शालें, सूरत बंदर सार ॥ समवसरण
नी रचना कीधी, मयामुनी सुखकार ॥ प्रभु० ॥ ९ ॥

॥ अथ पञ्चसण पर्व चैत्यवंदन ॥

॥ पर्व पञ्चसण पामीने, जिनवर नाषित जेह ॥
मन वच कायें सेवीयें, आराधो गुण गेह ॥ १ ॥ वि
धि पूर्वक मज्जन करी, जिनवर पूजा कीजें ॥ स्नात्र
मोहव मन रंगशुं, गुरु मुख व्रत एम लीजें ॥ २ ॥ क
ल्पसूत्र श्रवणें सुणी, जीव अमारि करीजें ॥ साहामी
वठल प्रनावना, करतां नवजय ठीजे ॥ ३ ॥ पांच
प्रकारें दान इम, खामीजें सवि नाइ ॥ पारणां दिन
पक्कान्नशुं, कीजें अधिक वडाइ ॥ ४ ॥ इणविध पर्व
पञ्चसणे, श्रावक गुणव्रत धारी ॥ मयामुनि ए पामी
ने, जिनशासन जयकारी ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ पद ॥ राग कानडो ॥

॥ परघर रमण न कीजें लालन, परघर० ॥ निज

मंदिर अमृत रस पीजें, बाहिर चरन न दीजें लाल
 न ॥ प० ॥ १ ॥ निज स्वजाव तजी राखण कामी,
 सीता हरन करीजें ॥ रामें राखण सीबिध कीनी, जग
 अपजसने लीजें लालन ॥ प० ॥ २ ॥ चक्री सनत
 कुमर गुन पुजल, परस्वजावें जीजें ॥ ततकृण अगुन
 रूप पुजलकों, देव वचन बूजीजें लालन ॥ प० ॥ ३ ॥
 स्वस्वजाव तजी प्रश्नचंद मुनि, सप्तम दल मेलीजें ॥
 पर परनीत तजी निजघर आये, ज्ञान केवल प्रगटी
 जें लालन ॥ प० ॥ ४ ॥ एम अनेक पर रमण करं
 तां, ज्ञान ध्यान हरीजें ॥ अवधिज्ञान मुनि हास्यथी
 वमीयो, नव अनंत नमीजें लालन ॥ प० ॥ ५ ॥
 नरत मरुदे आप स्वजावें, अजरामर पद लीजें ॥
 परघर रमण तजी निज घरमें, रमण मया करी दीजें
 लालन ॥ प० ॥ ६ ॥ इति प्रथमपदं ॥

॥ अथ पद ॥ राग जैरवी ॥

॥ मुक्त गए महावीर पावापुर रे ॥ मुक्त ॥ सिद्धा
 रथ त्रिसलादे राणी, कुलमें मेरु जुं धीर ॥ पा० ॥ १ ॥
 च्यवन कल्याणिक देव दशोदिश, दीपकको ऊजीर ॥
 मोह टालि गौतम लीयो केवल, ठांमी नवचय पीर
 ॥ पा० ॥ २ ॥ दीवाली दिन एह अनोपम, ध्यावो

श्रीमहावीर ॥ पंचम कालें शासन जेहनुं, गंगाजल
ज्युं नीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ एकवीश वर्ष हजार अनोप
म, शासन जगदाधीर ॥ मया करी नव पार उतारे,
नव्य जपो वीर वीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ इति प्र
थमनागे द्वितीय स्तवनविलासः संपूर्णः ॥१॥

॥ अथ तृतीय सहाय विलास प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम हितोपदेश सहाय लिख्यते ॥

॥ ऐसा जिन ऐसा जिन ऐसा जिन है, जाकुं चउद
राजकी गम है ॥ ए देशी ॥

॥ नवि चेतन चेतो प्रानी, लेइ गुरुगम ज्ञान नी
शानी ॥ मनमोह महामद ठांमी, सजी निजगुण
राजनी धानी ॥ नवि० ॥ १ ॥ ए तुं जाने धन मेरा,
अंतें होये जंगल मेरा ॥ मात तात पुत्र पितरानी,
काचे कुंन नखो जिम पानी ॥ न० ॥ २ ॥ ए छुग हे
रेनका सुपना, यामें पलक नहीं अब ठपना ॥ ए
जन्म मरन दुःख खानी, समजे कोउ विरला प्रानी
॥ न० ॥ ३ ॥ ए अवसर फेर न पावे, गइ बाजी
हाथ न आवे ॥ कोउ जान लेइ अजिमानी, निझामें
रेनी बिहानी ॥ न० ॥ ४ ॥ आतम परमातम
जानो, जिम चंद बादलमें ठानो ॥ सजुरुकी ए सुनी

बानी, मया मुनिने चित्त ठहेरानी ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ मूर्ख प्रतिबोध सव्वाय प्रारज्यते ॥

॥ जे कोइ प्रेमिअंश अवतरे, प्रेमरस तेहना उरमां
ठरे ॥ ए देशी ॥ ज्ञान कदी नव थाय, मूरखने ज्ञाण ॥
केहेतां पोतानुं पण जाय ॥ मू० ॥ श्वान होय ते
गंगाजलमां, सो वेला जो न्हाय ॥ अडसठ तीरथ
फरी आवे पण, श्वान पणुं नव जाय ॥ मू० ॥ के० ॥
॥ १ ॥ क्रूर सरप पय पान करंतां, संतपणुं नव था
य ॥ कस्तूरीनुं खातर जो कीजें, वास लसण नव जा
य ॥ मू० ॥ के० ॥ २ ॥ वृषासमे सुग्रीव ते पद्मी, क
पि उपदेश कराय ॥ ते कपिने उपदेश न लाग्यो, सु
ग्रिव गृह वींखाय ॥ मू० ॥ के० ॥ ३ ॥ नदीमांहे नि
शिदिन रहे पण, पाषाण पणुं नवि जाय ॥ लोह
धातु टंकण जो लागे, अग्नि तुरत ज्जराय ॥ मू० ॥
॥ के० ॥ ४ ॥ काग कंठमां मुगता फलनी, माला ते
न धराय ॥ चंदन चर्चित अंग करीजें, गर्धव गाय
न थाय ॥ मू० ॥ के० ॥ ५ ॥ सिंह चरम केइ शिया
ल सुतने, धारे बेश बनाय ॥ शियालसुत पण सिंह
न होवे, शियाल पणुं नवि जाय ॥ मू० ॥ के० ॥ ६ ॥
ते माटे मूरखथी अलगा, रहे ते सुखीया थाय ॥

ऊखरन्मूमी बीज न होवे, उलटुं बीज ते जाय ॥मू०॥
 ॥ के० ॥ ७ ॥ समकित धारी संग करीजें, नवजय
 नीति मिटाय ॥ मयाविजय सजुरु सेवार्थी, बोध बी
 ज सुख पाय ॥ मू० ॥ के० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सम्यक्त्व स्वरूपवर्णन सभाय ॥

॥ राग प्रजाती ॥ ज्यां लगे आतमा .तत्त्व चीन्यो
 नहि, त्यां लगी साधना सर्व जूती ॥ ए देशी ॥ ज्यां
 लगे समकित रूप फरस्युं नहिं, त्यां लगे कष्ट किरिया
 न लेखे ॥ सर्व ने देशविरति धरे शुं थयुं, शुं थयुं सर्व सि
 द्धांत देखे ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ १ ॥ शुं थयुं अरणमा
 वास वसवाथकी, शुं थयुं केशनो लोच कीधे ॥ जिन
 कल्प नग्न रहेवा थकी शुं थयुं, शुं थयुं उष्ण अति
 अंज पीधे ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ २ ॥ नौतन ग्रंथ रच
 वाथकी शुं थयुं, शुं थयुं वरणना नेद जाणे ॥ जोग उप
 धान वहेवाथकी शुं थयुं, शुं थयुं खट आवश्यक ठाणे
 ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ३ ॥ तप अने जप करवाथकी शुं
 थयुं, शुं थयुं तीर्थ फरसन कीधे ॥ शुद्धव्यवहार ए ध
 र्म कारण अठे, कार्य समकेतथी आत्म सीधे ॥
 ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ४ ॥ ज्ञानवादी क्रियावादी केई इम, त्रण श
 त त्रेशठ एम लीजें ॥ नंदीसूत्रें जुवो तेहने वरणव्या, अ

नुनव वीण पाखंडी कीजें ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ५ ॥
 आतम ज्ञानविण जे किरिया कही, अंक विना जेम
 बिंदु जाणो ॥ मयामुनि जिनधर्म ए सार ठे, ज्ञान
 क्रिया दोये शुद्ध मानो ॥ ज्यां० ॥ त्यां० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ मिथ्यात्विसंग दूरकरण सधाय ॥

॥ हे सुखकारी आ संसारथकी जो मुज्जे उदरो
 ॥ ए देशी ॥ हे तजियें रे जिनसमरन करतां वारे तेह
 ने (तजियें रे) ॥ ते माटे देश नगर तजियें, जइ एकांते
 वनमां वसीयें, मिथ्यात्वीथकी दूरें खसियें ॥ हे तजि
 यें रे जिन० ॥ १ ॥ जेम कूसंगासंगो करतो, एक
 हंस काग पासें नमतो, हण्यो हंस काग ऊढी रमतो
 ॥ हे तजियें रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ जे जिनमतथी विपरीत
 लवे, किरिया उत्कृष्ट अंग धरे, ते तो नव अनंतानंत
 करे ॥ हे तजियें रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ तमें सज्जन संग करो नाई,
 आ मनुअ जनम डुरजन पाइ, ए वाणी श्री जि
 नवर गाइ ॥ हे तजियें रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ सज्जन सुख
 इह परलोक करे, जे संतपणुं मनमांही धरे, मया मुनि
 ने ते अविचल करे ॥ हे तजियें रे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रावकजनस्तुति ॥

॥ वैष्णवजन तो एने कहियें ॥ ए देशी ॥

॥ श्रावक जन तो एने कहियें, सरधा समकित मूल
रे ॥ देव गुरुने धर्मविवेकें, आराधे अनुकूल रे ॥ श्रा०
॥ स० ॥ १ ॥ निश्चय नयव्यवहारने जाणे, स्यादवा
द सुखमूल रे ॥ इव्य गुण परजायने ध्यानें, आश्रव
ने प्रतिकूल रे ॥ श्रा० ॥ स० ॥ २ ॥ नयनिक्षेप
प्रमाणनी रचना, ठामे मिथ्या मूल रे ॥ निजपररमण
रूपने जाणे, मित्र शत्रु सम तुल्य रे ॥ श्रा० ॥ स० ॥ ३ ॥ प
रनिंदा मुखयी नवि जांखे, जाणे कर्मनी चूल रे ॥
लेशमात्र गुण परनो देखी, ग्रहण करे अतुल्य रे
॥ श्रा० ॥ स० ॥ ४ ॥ पर उपगार धर्मजन पट्टी, एवा पुरुष
अमूल्य रे ॥ मयाविजय ते संग करंतां, जाय अनादि चूल
रे ॥ श्रा० ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सम्यक्त्वस्वरूप सव्याय ॥

॥ सकल रूपसैं न्यारा, उसमें क्या जाने संसारा ॥
॥ ए देशी ॥ देख्या होय सो कहि समजावो, समकित
केसा रंगा ॥ रूप रंग ताका बतलावो, नय तरंग ने
चंगा ॥ गंगा गुण परजय सुचंगा ॥ देख्या ० ॥ सम०
॥ १ ॥ इव्याखंड अखंडित अंगा, किणबिध ए फरसंगा ॥

मुऊ बालककूँ कहि समजावे, सजुरु समज सुरंगा॥ जाके
घटहे ग्यान अनंगा॥ देख्या०॥ सम०॥ १॥ समकित विण
किरिया नवि लेखे, मुनिवर वेश धरंगा॥ अंक विना बिंडु
नहिं गणना, काय किलेस ए लिंगा ॥ संगी विणसे रंग प
गा ॥ दे० ॥ सम० ॥ ३ ॥ उपशम ह्यउपशम ने
ह्यायिक, सडशठ जेद उपंगा ॥ मूल बिना शाखा न
वि होवे, समकित मूल सुरंगा ॥ जाणे विरला जन को
उ अंगा ॥ दे०॥ सम०॥ ४ ॥ समकित मूल कहो
कुण थानक, जाको फरस अनंगा ॥ मयामुनी जव
नोति मिटावे, जन्म मरन बहिरंगा ॥ पावे शिवरमणी
सुख संगी ॥ देख्या०॥ सम०॥ ५॥ इति ॥

॥ अथ नेमराजुजसखाय प्रारंभः ॥

॥ सखी आज सांजने टाणो रे, वाहालो आवे मा
चता रे ॥ ए देशी ॥ सखी आज राज सवारें रे, आ
वे वालो तोरणें रे ॥ मोतीडे थाल जरीने रे, वधा
वो चित्तचोरने रे ॥ सखी हुं जोवं निहाली रे, मो
हननी मूरती रे ॥ नेम प्रभु श्याम शरीरें रे, लागी
मोरी सूरती रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ १ ॥ सखी अंग
दक्षिण मारां रे, नेत्र उरोज फूरे रे ॥ रंगमां जंग
जे जाणुं रे, सखी आश किम पूरे रे ॥ राजिमती एह

बुं कही रे, सखीने शानमां रे ॥ प्रचुयें रथ फेखो
 रे, पडी वात कानमां रे ॥ सखी अचेत धरा ढली
 रे, सखी श्वास देखती रे ॥ स० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायु चं
 दनादि योगें रे, राजिमती पेखती रे ॥ वाहालाने म
 नावी लावो रे, हा हा ए गुं कछुं रे ॥ पछुनो साद
 जे सुणी रे, वाहाले मनमां धरुं रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ३ ॥
 सखी कहे सामलो एतो रे, वैरागी रंगनो रे ॥ प
 राणे प्रीति न कीजें रे, निजे न संगनो रे ॥ सखीनां व
 यण जे सुणी रे, राजिमती रोवती रे ॥ हे सखी बोल
 म बोले रे, आंसु मुख धोवती रे ॥ सखी० ॥ आ०
 ॥ ४ ॥ महारे तो नेमगुं नेडो रे, बीजो सुपनें नवी
 रे ॥ नेमनो संग न ठंहुं रे, आतमें अनुजवी रे ॥ नेम
 ने संयम लीनो रे, सहसावन जाइने रे ॥ राजिमती
 प्रचुपामें रे, चडी गिरि धाइने रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ५ ॥
 गुफायें चीर निचोतां रे, कामें घणुं व्यापियो रे ॥ रह
 नेमी प्रतिबोधी रे, ग्यानगुण थापियो रे ॥ प्रचु पायें
 संयम लीनो रे, नादी कर्म तोडीने रे ॥ अखंमानंदन
 में रे, मया कर जोडीने रे ॥ सखी० ॥ आ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली ॥

॥ आगम वयण सुधारस पीजें, नरनव लाहो ली

जें जी ॥ ए देशी ॥ गुरु गुण गावो निज घरे आवो,
 मोतीडे वधावो जी ॥ काल अनादी नूल मिटावो,
 जो होय शिवपुर जावो ॥ गु० ॥ ए टेक ॥ १ ॥
 समता रस सागर गुण आगर, स्यादवाद मतवासी
 जी ॥ नयनिक्षेप प्रमाणनी रचना, जे जिन मतना
 नाथी ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु परमेश्वर गुरु ठे पारस, स
 कल जीव हितकारी जी ॥ अठार सहस्र सीलांगना
 धोरी, पंच महाव्रत धारी ॥ गु० ॥ ३ ॥ समकित
 पीठ श्रद्धा कुंकुम रस, अनुभव मुक्ता दीजें जी ॥
 चउगति चूरक स्वस्तिक कीजें, पंचमी गति फल ली
 जें ॥ गु० ॥ ४ ॥ जंगम तीरथ ए मुनि गावो, नहि
 कुमतीको दावो जी ॥ मया करी सौजाग्य विजयजी,
 श्रुत अनुभव रस पावो ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति श्रीमत्पंमित
 प्रवर पंन्यास गणी श्रीसौजाग्य विजय तन्त्रिष्य पंन्यास
 श्री प्रतापविजयजी तन्त्रिष्य पंन्यास श्रीहीरविजयजी
 तन्त्रिष्य मुनि श्रीमयाविजयजी विरचित तृतीय सद्या
 य विलासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ श्रीगिरिविलासः प्रारभ्यते ॥

॥ पद पहेलुं ॥ राग काफ़ी ॥ देख्या श्री नाजिका
 नंदा, बदन जेसा शारदका चंदा ॥ देख्या ॥ ए देशी ॥

गिरिवर देखकें दर्शन, मेरा दिल होत हे परसन ॥ गिरि
 वर ॥ नवनय नीति अब जागी, लगन मोये गिरिवरछुं
 लागी ॥ गिरि ॥ १ ॥ अनंतनव सायर तट आयो, ना
 निसुत दर्श अब पायो ॥ सूर्यकुंम स्नान अब कीजें,
 मलिनता कर्म सब ढीजें ॥ गिरि ॥ २ ॥ कुर्कुटरूप चंद
 नरराया, इणें गिरि आइ सुख पाया ॥ अनंत मुनि
 आये फरसनकूं, तरन नव नाव ए जनकूं ॥ गिरि ॥
 ३ ॥ मारुदेवा नंद सुखकारी, पुरुषमें आद्य अवता
 री ॥ केवल पद जेह सुख लीना, प्रथम निज मात
 कूं दीना ॥ गिरि ॥ ४ ॥ विरुद सुनी आजहुं आ
 यो, मया करी दर्श अब पायो ॥ विरह मत दीजें
 दर्शनकूं, जाइचंद मागत ए गुनकूं ॥ गिरि ॥ ५ ॥
 ॥ पद बीजुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ जिन जन्म जाणी दिसि कुमरी
 आवे रे ॥ ए देशी ॥ गिरी जेटी आनंद अति पावो
 रे, नवकूपका निवासकूं गमावो रे ॥ मणि मुक्ताफल
 गिरिकुं वधावो रे, सूर्यकुंम जाइ शुचि दिल थावो
 रे ॥ अष्टव्यं जुगादिपासैं आवो रे, पूजीनाथ,
 शिव साथ, जग ख्यात, नृत्यगीत गवरावो रे ॥ गिरि ॥
 ॥ ज ॥ १ ॥ नवाणुं पूर्व श्री कृष्ण जिन आया रे,

अनंत मुनि मोक्षपद पाया रे ॥ अजितशान्ति समो
 सरण विरचाया रे, ए गिरि गुन गाइ, छुःख जाइ,
 सुख पाइ, अनुभव दिल लावो रे ॥ गिरि० ॥ न० ॥
 ॥ २ ॥ माता मरुदेवानंद चिरंजीवो रे, नानिरायसुत
 कुलमें दीवो रे, प्रभु जेटी अमृत रस पीवो रे, चित्त
 धरि, मया करी, जस वरी, जाइचंद दिलध्यावो रे
 ॥ गिरि० ॥ न० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ दाग दिजुंदा धो दे रे, हरखें धो
 बीडा ॥ ए देशी ॥ जिन चरणें चित्त लावो रे, परमा
 नंद पावो ॥ नविजिन ॥ जि० ॥ ए टेक ॥ जूठी माया
 जूठी काया, कायेकुं कृपण कहावे रे ॥ परमानंद पा
 वो ॥ नवि० ॥ १ ॥ पारस ठांमी काच ग्रहो क्युं, प्रव
 चन दिलमें जावो रे ॥ पर० ॥ न० ॥ पिस्तावा पीठें बहो
 त करोगे, जेहथी अधोगति जावो रे ॥ पर० ॥ न० ॥ २ ॥
 नानिराया सुत नयणें निरखो, नहिं कुमतिको दावो
 रे ॥ पर० ॥ न० ॥ मया कहे गिरिवर जेटीजें, जाइचंद
 गुन गावो रे ॥ पर० ॥ न० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग खमायची ॥ लडक बुध मोसैं कीनी रे, सि

(५६)

रकी गागरियां कैसैं ठिनी ॥ ल० ॥ ए देशी ॥ गिरीगुन
गावो जवि-प्रानी, परम पुरुष सुख दानी ॥ गिरि०
॥ पर० ॥ ए टेक ॥ ध्याता ध्येय एकता होवे, मन
वच काय बश आनी ॥ गिरि० ॥ प० ॥ १ ॥ ए गिरि
मोह गये केइ कोटी, शाश्वत ए गिरि मानी ॥ गि०
पर० ॥ परपरिणति तजि निज घर आवो, ए पद अंतर
जानी ॥ गिरि० ॥ प० ॥ २ ॥ रत्नचिंतामणि सम ए
महिमा, ठांमो क्युं अजिमाणी ॥ गिरि० ॥ पर० ॥ मया
करी गिरि फरसन पायो, जाइचंद दिल जानी ॥ गिरि०
॥ पर० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ गिरिवर मनमें ध्यावो रे, सादि नंत सुख पावो
॥ गिरि० ॥ ए टेक ॥ थाल जरी मुक्ताफल लावो, गि
रिवरजीकुं वधावो ॥ गिरि० ॥ सा० ॥ १ ॥ सूर्यकुंम जाव
धरी न्हावो, अनुजव दिलमें जावो ॥ गिरि० ॥ सा० ॥
अष्ट सुद्वय जिनपूजा रचावो, ज्ञानानंद गुन गावो
॥ गिरि० ॥ सा० ॥ २ ॥ सूरिआजपरें नक्ति करावो, शि
वरमणी घर लावो ॥ गिरि० ॥ सा० ॥ मया कहत गिरि
वर गुन गावो, जाइचंद सुख पावो ॥ गिरि० ॥ सा० ॥ ३ ॥

॥ पद ठठुं ॥

॥ राग जेसव ॥ ताल चोताल ॥ आदि जिनंद वृंद,
कटत करम फंद, होत महा सुख कंद, गुनधर जापो
हे ॥ आदि० ॥ १ ॥ नानिरायाके नंद, मारु देवा उ
रचंद, पूजत चोसठ इंद, शिवपूर बासो हे ॥ आदि०
॥ २ ॥ ताल तंति जेद ठेद, ब्रह्मादिक गावे वेद, कोउ
नांहिं पावे जेद, ज्ञानको उजासो हे ॥ आ० ॥ ३ ॥
सेवक इहा उमेद, पूरन सकल जेद, मया कहे मि
टयो खेद, जाइ चंद वासो हे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ ताल सुरफाग ॥ सिद्ध गिरि शि
खरें सुरवधू आवे, जिननजीके आगें बैन बजावे ॥
सि० ॥ ए टेक ॥ सप्त स्वर तिन ग्राम एकवीश मू
र्धन, रागरागिणी मधुर स्वर गावे ॥ सि० ॥ जि० ॥ १ ॥
संगीत गति नाटक एम करती, नमि नमि जिनजी
कुं शीश नमावे ॥ कर्म निकाचित दूरें जावे ॥ जे नवि
जाव धरी गुन गावे ॥ सिद्ध० ॥ जि० ॥ २ ॥ सिद्ध
गिरि शिखरें रुषन सोहावे, देखत दर्श कुमतिमद
जावे ॥ मया करी प्रभु दर्श दिखावे, जाइचंद गिरिके
गुन गावे ॥ सिद्ध० ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ वालमजी कोण तुम संगें बोले ॥
ए देशी ॥ आदि जिन दिल जर दरिसन दीजें, नेक नजर
मोयें कीजें ॥ आ० ॥ तुम बिन सुख दुख अंतरगत
की, किस आगें जइ कीजें ॥ आदि० ॥ नेक० ॥ १ ॥
तुम हो सुगुण निगुण हम स्वामी, अपनो बिरुद
वहीजें ॥ आदि० ॥ रामा संग रमे सुर अहोनिश,
ते दिल मोहें न पतीजें ॥ आदि० ॥ ने० ॥ २ ॥ तुं
नीरागी सिद्ध स्वरूपी, तुज देखी दिल रीजे ॥ आदि० ॥
मया करी मोहे दर्शन दीजें, जाश्चंद प्रणमीजें ॥
आदि० ॥ नेक० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग जैरव ॥ बहार बहार गले हार मार, हेजी
सझ्यां, लरकैयां, करत पिया जिन बैयां, मोरी बैयां ॥
॥ बहार० ॥ ए देशी ॥ समज समज मत नूले मेरे जै
यां, ऐसो अवसर पैयां, हेजी कैयां, सुख पैयां, देव
गुरु ऐसो अवसर लैयां ॥ समज समज मत० ॥
॥ ऐसो० ॥ १ ॥ अचल अबाधित जो सुख चाहे, तो
गिरिवर गुन गैयां ॥ ए तीरथ नवपार उतारन, त्रीजे
नव शिव लैयां ॥ स० ॥ म० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ सूर्यकुंम

(५९)

जाव धरि न्हावो, कर्म मेल सब धोइयां ॥ अष्ट इव्य
जावें जिन पूजो, रायण नेटो पैयां ॥ स० ॥ म० ॥
॥ ऐ० ॥ ३ ॥ पूरव पुण्यें ए गिरि आये, कर्म कठिण
मेटैयां ॥ मया करि गिरिवर दरिसन पाये, जाइचंद
सुख लैयां ॥ स० ॥ म० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥
॥ पद दशमुं ॥

॥ राग विजास ॥ जागो जवियां मोह निंद वारी,
ग्यान ज्ञान उदयो सुखकारी ॥ जागो० ॥ श्रीजिन
जाषित वचन विचारी, निज परसत्ता विजावकूं टा
री ॥ जा० ॥ ग्या० ॥ १ ॥ ऐसो कारण कार्य निहा
ली, कीजें अब आतम हितकारी ॥ मया करी नव
पार उतारी, जाइचंद अपनो दिल धारी ॥ जा० ॥ २ ॥
॥ पद इग्यारमुं ॥

॥ राग कालिंगडो ॥ तथा सोयणी ॥ जवियां श्री
गिरिके गुन गाउ रे, गिरि गुन गाउ बहु सुख पाउ,
शिवरमणी घर लाउ रे ॥ ज० ॥ गि० ॥ शि० ॥ ए
टेक ॥ १ ॥ घर आंगन जो सुरतरु फलियो, कायकुं
बन जटकाउ रे ॥ ज० ॥ सरस सुरजि घृत जो होय
घरमें, तो क्युं लूखो खाउ रे ॥ ज० ॥ २ ॥ चिंताम
णि तजि काच ग्रहो क्युं, प्रवचन दिलमें ध्याउ रे ॥

(६०)

ज० ॥ मया कहत ए गिरि सुखदायी, जाइचंद दिल
जाउ रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ राजरा नयणां मोही रे, बांको था
रो कमर कटारो ॥ ए देशी ॥ राजुल रंगसैं जरि, परणो
जिन नेम डुलारो, कुमती मत दूर करी ॥ रंग० ॥
राजु० ॥ प० ॥ कु० ॥ १ ॥ ए टेक ॥ द्वेपक ऐणी वर
घोडे चडीया, शोना त्रिजग हरी ॥ अनुनव मंमप
आप रूपमें, गावे सुमति सुंदरी ॥ रंग० ॥ रा० ॥ प
र० ॥ कु० ॥ २ ॥ समकित मुक्ता शरधा सासु, पो
खी त्रिक योग करी ॥ उपशम माहारो लागे प्यारो,
देखी जन नयन ठरी ॥ रं० ॥ रा० ॥ प० ॥ कुम० ॥ ३ ॥
दानादी चउ चोरी बांधी, परणे शिवसुंदरी ॥ परमानं
द कंसार आरोगे, परस्पर सुखमें धरी ॥ रं० ॥ रा
जु० ॥ पर० ॥ कु० ॥ ४ ॥ चिरंजीवो ए जोरी जुग
में, देखी ए प्रीति खरी ॥ मया कहत शिवमंदिर पोहो
ते, जाइचंद प्रीत धरी ॥ रं० ॥ रा० ॥ कु० ॥ प० ॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग काफ़ी ॥ होरी ॥ सामपैं कहियो बिनति मोरी ॥
सा० ॥ ए देशी ॥ श्रीविमल गिरि रंग मचो री ॥ श्री

कृष्णजिनंदसें खेलियें होरी ॥ श्री० ॥ चिदानंदकी
 मोज मची हे, शिवरमनी संग जोरी ॥ आपही आ
 पमें मग्न रहत हे, और सबनसें तोरी, जलाइ मोहकी
 होरी ॥ श्रीविमल० ॥ श्री कृ० ॥ १ ॥ अनुभव अंज
 न केसर करुना, ज्ञान गुलालकी जोरी ॥ दया रूप पिच
 कारी बिरकत, नीजे शीलरंग चोरी ॥ खेलत हे सुम
 ता गोरी ॥ श्री० ॥ श्री कृष्ण० ॥ २ ॥ रंगरंगीलो जयो
 हे चेतन, यजे अनहद शब्द टको री ॥ केवल पाई
 कर्म खपाइ, बंक कर्म गढ तोरी ॥ खेलो नवि
 ऐसी होरी ॥ श्री० ॥ श्री कृ० ॥ ३ ॥ इहबिध खेल
 त जो कोइ प्रानी, आदिजिनंदजीसें होरी ॥ मया करी
 प्रभु पदवी दीजें, जाइचंद प्रीति जोरी ॥ नवजय पा
 तक तोरी ॥ श्रीवि० ॥ श्री कृ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग होरी ॥ बांके मिरजाने धूम मचाइ, आज
 समसेरसें खेलुं होरी ॥ ए देशी ॥ सिद्धाचल रंग म
 च्योरी, ग्यानरंग खेलै नविजन होरी ॥ सत्ता स्थलमें
 आइ बिराजे, केशर करुणा घोरी ॥ ग्या० ॥ सि० ॥
 ॥ १ ॥ अनुभव बाग पुष्प परिमलता, मोह रायव
 न तोरी ॥ ग्या० ॥ तत्त्व रमण चतुराइ चित्तमें, खे

ले चेतना गोरी ॥ ग्या०॥ सि०॥१॥ प्रीति पिचकारी
 परम हितधारी, गुरुशब्दकी ताल टकोरी ॥ ग्या० ॥
 सरधा मुकुट शील सुवस्तर, गुण गुलालकी जोरी ॥
 ग्या०॥सि०॥३॥ इह विध खेलत आदी जिनंदसुं, और
 सवनमें तोरी ॥ ग्या० ॥ मया करी प्रभु मोहे खेला
 वो, जाइचंद प्रीति जोरी ॥ ग्या०॥ सि०॥ ४ ॥ इति

॥ पद पन्नरमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ पुरुषादानी पाया रे ॥ ए देशी ॥ आज हमारे
 जायग जागे, गिरिवरके गुन गाया रे ॥ आज० ॥ पू
 रव पुण्य उदय जयो मेरो, रसनाना रस पाया रे ॥
 आज० ॥ गिरि० ॥ १ ॥ नाजिराया सुत नयणें नि
 रख्या, मारुदेवाके जाया रे ॥ आ० ॥ मया करी गि
 रिदरिसन पाया, जाइचंद गुन गाया रे ॥ आ० ॥
 गिरि० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ जो लज्जा राखशो तो रहेशे रे, केशरिया बाहाला
 ॥ जो० ॥ ए देशी ॥ जेवो तेवो भुं तहारो रे, आदी
 सर दादा ॥ जेवो० ॥ कामी क्रोधी मायी लोनी, ज
 गमां भुं भुं ठगारो ॥ एक नामनो आशरो तिहारो,
 तेणें कहेवायो सारो रे ॥ आदी० ॥ १ ॥ पररमणी

परसंग रमीने, साचुं दिलमां राचुं ॥ परगुण वाख्यो दो
ष निहाव्यो, कृण एक मन नवि माख्यो रे ॥ आदी०
॥ १ ॥ राग विषे बहु जनशुं कीधो, माया कपट विष
पीधो ॥ देखें जाख्यो जीव संहार्यो, आतम गुण न सं
जाख्यो रे ॥ आदी० ॥ ३ ॥ एम अनेक अवगुण मोहें
वारो, सेवक दिलमें धारो ॥ मया करी नव पार उता
रो, नाश्चंद दिल प्यारो रे ॥ आदी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ निर्मल होय नज ले प्रभु प्यारा ॥
सब संसारसें ए प्रभु न्यारा ॥ प्र० ॥ ए देशी ॥ श्रीविमल
गिरि दरिसन पाये, धन धन पूरन पुण्य सवाये ॥ श्री
वि० ॥ गिरिके गुन अनंत कहाये, रसना एक मोये बर
न्यान जाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ १ ॥ पूर्व नवाणुं वार
इहां आये, समोसखा रूपन जिन राये ॥ गिरिवर
देखतहीं उलसाये, मुक्ताफलशुं गिरिकुं बधाये, श्री
वि० ॥ धन० ॥ २ ॥ श्रीगिरि अजित शांति जिन
राये, चउमासो प्रभु इहां रहि जाये ॥ वीरजिनंद स
मोसखा ए, सोहम इंदुर बंदन आये ॥ श्री० ॥ ध० ॥
॥ ३ ॥ मुनि लाख एकाणुं नारदजी सीधाये, सा
दि अनंत इहां सुख पाये ॥ पुंमरिक पंच कोडि सोहा

ये, राम जगत तिन कोडि कहाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥
 ॥ ४ ॥ शिव सोम जसा तेर कोडि मुनि राये, थावच्चा
 पुत्र सहस्र सिद्धि पाये ॥ सांब प्रद्युम्न श्रीसिद्ध गि
 रिराये, कोडी साडी आठगुं मोहू सिधाये ॥ श्री० ॥
 ध० ॥ ५ ॥ पांत्रीश सहस्र वसुदेव प्रियायें, कर्मक्षयें
 केवल पद पाये ॥ प्रद्युम्न प्रिया चुमालि सहसाये,
 शुक्लध्यान श्रेणी चढ जाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ६ ॥
 जाली मयाली उबियाली राये, देवकी खट नंदन सि
 धि पाये ॥ पांमव वीश कोडी मोहू सिधाये, नमि
 विनमि दो कोडि मुनि राये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ७ ॥
 एम अनंत मुनि सिद्धगिरिरायें, अजर अमर पद
 पदवी पाये ॥ शाश्वतो गिरि एही कहाये, पूरण पुण्य
 सें ए गिरि आये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ८ ॥ रत्नविजय
 उपदेश कहाये, मकशुदाबादसें जेटन आये ॥ धर्मचं
 द सुत संघ तिलक धराये, पूरनचंद पुण्यवंत कहाये
 ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ९ ॥ सिद्ध गिरि जेटी आनंद पाये,
 रूपन जिनंदजीकी पूजा रचाये ॥ अछाई तप गिरि
 उपर रहाये, आतम अनुभवगुं लय लाये ॥ श्री० ॥
 ध० ॥ १० ॥ संवत उगणी वीशमांहे, मागशिर
 वदि ठठ दिवस सोहाये ॥ रथ जात्रा महोत्सव कराये,

संघ सकल दिल सहु हरखाये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ ११ ॥
 मोहव करि गिरि उतरी आये, गाजते वाजते हर्ष स
 वाये ॥ जाचक जन बहु दान देवाये, पूरनचंद पा
 रणुं रे कराये ॥ श्री० ॥ ध० ॥ १२ ॥ ए गिरि जव्य
 जीव जे आये, मनवंठित फल शिवसुख पाये ॥ मया
 करी गिरि फरसन आये, जाइचंद गिरिके गुन गाये
 ॥ श्री० ॥ धन० ॥ १३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अष्टादशम् सिद्धगिरि स्तवनं ॥

॥ मनमोहनजी जगतांत, वात सुणो जिनराजजी
 रे ॥ ए देशी ॥ प्रणमी पद आदि जिणंद, सिद्धगिरी
 गुण गावणुं रे ॥ सिद्धाचल केरी जात्र, विधिणुं कीजें
 नवि जावणुं रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ १ ॥ जेथी जाये न
 वनां पाप, शुद्ध श्रद्धा मन संवरी रे ॥ गिरिवर नवा
 णुं जात्र, ठठ सत्त दोय अठम करी रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥
 ॥ २ ॥ नवकार गणी लख सार, आत्मरूप कूडि
 वरी रे ॥ एकासणुं तप मन साख, सचित्त आशा
 तन परहरी रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ३ ॥ नारी नागिणी
 रूप निवारी, शयन संथारो धरणी करी रे ॥ रथजा
 त्रा प्रदक्षिणा प्रीत, ते त्रीजे नवमुक्ति वरी रे ॥ प्र० ॥
 ॥ सि० ॥ ४ ॥ साहामीवहल करी श्रीकार, दान

सुपात्रें वली दीजीयें रे ॥ पूजा प्रजावना सार, मनु
 अजनम लाहो लीजियें रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ५ ॥
 लीलाधर लखमशी घेर, नारजा धनवती धनबाइ ठे
 रे ॥ जयकारी करतां काम, साथें जयवंत जाइ ठे रे ॥
 ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ६ ॥ शा जीमशी जगतिवान, संघस
 कलनी शोजा बने रे ॥ प्रेमाबाइ परम, आनंद, जेटवा
 गिरिवरने महोटे मनें रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ७ ॥ संघ
 साथें सज्जन परिवार, मुंबइ बंदरथी आवता रे ॥ गि
 रिवर नवाणुं जात्र, शुद्ध दशा मन जावता रे ॥ प्र० ॥
 ॥ सि० ॥ ८ ॥ संवत उगणीशा मांदि, ठवीश कार्तिक
 शुद्धि पूनमी रे ॥ नवाणुं आदर कीध, जैनवाणी
 जेनें चित्त रमी रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ९ ॥ जेटी कृष्ण
 जिणंद दयाल, मनना मनोरथ सवि फव्या रे ॥ जेणें
 आत्म साखें कीध, ते प्राणी शिवनगरी जव्या रे ॥
 ॥ प्र० ॥ सि० ॥ १० ॥ मया कीजें दीनदयाल, तुम
 सेवा मोहे दीजीयें रे ॥ जाइचंद गिरिगुण गाय, जि
 नवाणी रस पीजीयें रे ॥ प्र० ॥ सि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ एकोनविंशति सिद्धगिरिस्तवनं ॥

॥ मकसी पास महाराज, आज मोहे दरिसन दी
 जें री ॥ ए देशी ॥ विमलगिरि दरिसन पाये री, पूरव

पुण्य पसायें ॥ विम० ॥ गिरिवर नयणें निरखतां रे,
 मुक्ताफलशुं वधाये ॥ विम० ॥ पूर० ॥ १० ॥ जाव अ
 नंत जयो मोये पूरन, देखत श्रीगिरिराये ॥ रसना
 सहस्र करुं जो तोही, उपमा कहिय न जाये ॥ वि० ॥
 ॥ पू० ॥ ११ ॥ पूर्व नवाणुं वार ए गिरियें, ऋषज जिने
 श्वर राये ॥ रायण हूंख समोसखा ए, सुर नर मुनि
 गुन गाये ॥ वि० ॥ पू० ॥ ३ ॥ अजित शांतिजिन
 साहेबा रे, चउमासुं रहि जाय ॥ वीरजिणंद समो
 सखा ए, आये त्रेविश जिनराय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ४ ॥
 पुंमरीक पंच कोडिशुं रे, सिद्धा ध्यान लगाय ॥ राम
 जरत तिन कोडिशुं रे, पामव मोक्ष सिधाय ॥ वि० ॥
 ॥ पू० ॥ ५ ॥ नंदिपेण नारद मुनी रे, शिव पाये गि
 रिराय ॥ साधु अनंत मुगतें गया रे, तेहना प्रणमुं
 पाय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ६ ॥ पंचम कालें पामवुं रे, द
 र्शन डुर्लभ थाय ॥ ते मुळ जाग्य उदय करी रे, जेटे
 रिखज जिनराय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ७ ॥ जिनवर विंब
 जुहारियां रे, पूजा विविध बनाय ॥ जावसहित प्रभु
 पूजतां रे, जवजय पातक जाय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ८ ॥
 संवत उंगणी वीशमें रे, काती पूनम कहाय ॥ रथ
 यात्रा करि जावशुं रे, मासंघजी मेघराय ॥ वि० ॥

(६७)

॥ पू० ॥ ए ॥ वासी पूरव देशके रे, मकशुदाबाद
कहाय ॥ रत्नविजय उपदेशयी रे, जेठे श्रीगिरिराय ॥
॥ वि० ॥ पू० ॥ १० ॥ आज आनंद जयो मोये पूर
न, जव्य पणुं थिर ठाय ॥ दर्श मया करी दीजीयें
रे, नाइचंद गुन गाय ॥ वि० ॥ पू० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलनी पन्नर तिथियो ॥

॥ कार्तिके केशरीयो मलशे ॥ ए वार मासानी
देशी ॥ प्रथम जिनेश्वर पद जजियें, मोह मान म
नगुं तजियें, धर्मध्यान पंथें सजियें ॥ सिद्धाचल स
मरन नित कीजें, अनुभव अमृत रस पीजें ॥ सि० ॥
॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पडवायें परगुण लीजें, दान
सुपात्रें नित दीजें, तो जगमें बहु जस लीजें ॥ सि० ॥
॥ अ० ॥ २ ॥ बीजे बीजुं सहु जाणो, अंतर ध्यान प्रभु
आणो, तो सहेजें शिवसुख माणो ॥ सि० ॥ अ० ॥
॥ ३ ॥ त्रीजे त्रिभुवन जिनराया, नानिराया कुल दी
पाया ॥ माता मारुदेवी जाया ॥ सि० ॥ अ० ॥ ४ ॥
चोर्थे चार गति वारी, सकल जीवना हितकारी ॥
आप तखा प्रभु पर तारी ॥ सि० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पां
चमे पंच प्रमाद तजियें, पंच परमेष्ठी प्रभु जजीयें ॥
शिवमाला वरवा सजीयें ॥ सि० ॥ अ० ॥ ६ ॥ ठठें

(६९)

ठक्कायने पालो, ठए इव्यगुण अञ्जुवालो, चेतनता
गुण संजालो ॥ सि० ॥ अ० ॥ ७ ॥ सातमे सात न
यें वारी, अखंम रूप प्रञ्जुपद धारी, नविजन नजतां
सुखकारी ॥ सि० ॥ अ० ॥ ८ ॥ आठमे आठ करम
तजीयें, मद आठे तजी प्रञ्जु नजीयें, तो शिवमंदिर
जइ गजीयें ॥ सि० ॥ अ० ॥ ९ ॥ नोमें नवविध ब्र
ह्मचरीयें, नवपद ध्यानें नित रहियें, सत्य वचन सु
खथी कहियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १० ॥ दशमें दशविध
यति धर्मे, देशावगासी रहो घरमे, निज गुणधारी न
रहो परमें ॥ सि० ॥ अ० ॥ ११ ॥ एकादश पडिमा
वहीयें, मौन धरी पोसह लहियें, एकादशी महिमा
बहु कहियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १२ ॥ बारहों बारे व्रत
धारी, देशविरति गुण अधिकारी, अरिहंत गुण पर जा
उं वारी ॥ सि० ॥ अ० ॥ १३ ॥ मेर तेरस मनमां ध
रियें, काठिया तेर दूरें करियें, तो अष्टसिद्धि नव
निधि वरियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १४ ॥ चउदश स
हु तिथिमां वडी ए, मोहराय सन्मुख जइ लडियें,
चउदमे गुणगणे चडियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १५ ॥
पूनमें पूरण तिथि कहियें, सिद्ध गिरि महिमा बहु
लहियें, रूपनजिणंदसनमुख रहियें ॥ सि० ॥ अ० ॥ १६ ॥

संवत उगणीश वीशामांये, माहाद्युदि पंचमी गुण
गाये, पात्नीताणा पुर ठाये ॥ सि० ॥ अ० ॥ १७ ॥
दीपचंद सुत सवाइ, वीरचंद नरसिंह बेहु जाइ, त
स आग्रहथी तिथि गाइ ॥ सि० ॥ अ० ॥ १८ ॥
अहोनिश समरुं गिरिराया, मया करी दरिसन अम
पाया, नाईचंद गिरिगुन गाया ॥ सि० ॥ अ० ॥ १९ ॥

॥ अथ श्री नेमराजीमतीना बारमासा प्रारंभः ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे, अजितजिणंदगुं ॥ ए
देशी ॥ शारदने समरी रे सदगुरुने नमी, नेम राजुल
गुण गातां हरख न माय जो ॥ बार मास जेहनी सु
रती स्वामी उपरें, प्रभुविरह राजुलने कृण न खमाय जो
॥ नेम जिणंदने नमियें ठांमी मद मोहने, नजतां
पातक सघलां दूर पलाय जो ॥ नेम जिणंदने नमियें
ठांमी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ ब्रह्मचारीना गुण रे केता कही
जीयें, जीन एक ने गुण अनंत न कहाय जो ॥ सिद्धि क
हि घट दीसे अंतर एहने, सादी अनंतमे जांगे अनं
त सुख पाय जो ॥ नेम जि० ॥ ज० ॥ १ ॥ सतियामांहे
शिरोमणि राजुल जाणियें, रहनेमीने ज्ञान बोध शि
वशर्म जो ॥ शीलव्रत नववाडें त्रिकरण साचवे, प
तिव्रता नारी ए उत्तम धर्म जो ॥ नेम जि० ॥ ज०

॥ ३ ॥ कार्तिकमासें कामिनी काम कंदर्पमां, अतूल
 बल वीरजनो जाणो ए उतपात जो ॥ विकल अकल
 विण पंखी रमतां बापडां, देखी लक्ष्मणा चली सि
 क्षांतें वात जो ॥ नेम० ॥ ज० ॥ ४ ॥ मागशिर मासें
 मुळ मन मलवानुं करे, प्रीतम साथें लागी पूरण प्री
 त जो ॥ ध्यान एकाग्र करती निशिदिन एहनुं, जेहने
 लागी प्रीत ते जाणो रीत जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ ५ ॥
 पोषमासें प्रभुजी पर नवि कीजीयें, पोतानी जाणी
 मुळ प्राण आधार जो ॥ नेह नजर कीजें रे कर ग्रहि
 लीजीयें, वालम विरह तणो मुळ अंतर मार जो ॥ ने०
 ॥ ज० ॥ ६ ॥ माघमासें मन दृढ करी जादव जा
 णीयें, समुद्रविजय शिवादेवी मात मलार जो ॥ निर
 मोही न थड्यें रे करुणा कीजीयें, मंदिर पधारी अं
 तर दाह निवार जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ ७ ॥ फागुण
 मासें फरती लेवे फूदडी, गावे गोरी नाचे नव नव
 ठंड जो ॥ एहवेने आचरणें अबला एकली, फीकी
 लागे जिम सूरजमां चंद जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ ८ ॥
 चइतर मासें चितमां चिंता ऊपजे, घणुं शुं कहियें जा
 दव कुलना नाथ जो ॥ नाथ विना नरनव रे निःफल
 जाणीयें, ठंमी सरवने जेहनो कीधो साथ जो ॥ ने०

॥ ज० ॥ ए ॥ वऽशाखें वन मोलुं कोमल फूलडे,
 अंब मालें कोयल बोले अनुकूल जो ॥ नीरागीशुं रागी
 बंधन जे करे, पेट उलांसी पेदा कीधुं शूल जो ॥ ने०
 ॥ ज० ॥ १० ॥ जेठ मासें जुगती जोवा एहनी, मो
 हन मलवा ज्युं घन चातुक मोर जो ॥ नितुर निहे
 जा नरने नही कीधे बने, अंतर गुह्यनो केहने कीजें
 सोर जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ ११ ॥ आपाढें अंबरमां वा
 दल ठाहियुं, घन गरजे ने वायुतणो विस्तार जो ॥ चि
 त्त चमके ने चिहुंदिशि चमके दामिनी, श्याम विना जे
 रहेबुं खांमाधार जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ १२ ॥ श्रावण
 मासें श्रद्धा स्वामी किम रहे, ठले सजिता न रहे
 बिहुं त्रट मांहि जो ॥ जोबननी लहेरें रे थिर किम
 रहीजीयें, शूल इहां ने चित्त रहे प्रभु तांहि जो ॥ ने०
 ॥ ज० ॥ १३ ॥ जादरवो जर गाजे राजे रूजनी, श्या
 म विना सुख जाणो स्वपनामांत जो ॥ नाथ विना ना
 रीने नित उलंजडा, माननीने मन विशमी ठे ए
 वात जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ १४ ॥ आशो मासें अमने
 आशा एहनी, वेली वृद्ध ने क्षेत्र फल्यां सुविशाल जो ॥
 वाला विना वनमांहें वसबुं ते वारु ठे, नेह नजर
 करी प्रीतम साहामुं जाल जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ १५ ॥

एम अनेक उपायें प्रभु नवी पालटे, एम करंतां आ
 व्यो अधिकज मास जो ॥ एम विचारी राजुल घरशुं
 नीकली, प्रभु वंदीने पूगी मननी आश जो ॥ ने० ॥
 ज० ॥ १६ ॥ कर जोडीने राजुल विनयथी वीनवे,
 कृपा करी हवें दीजें शिरपर हाथ जो ॥ प्रभु हाथें ग्रही
 संजम शुद्ध मन जावशुं, करम खपावी पहोतां शि
 वपुर साथ जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ १७ ॥ संवत उगणीश
 अठार आषाढी मासमां, नेम राजुलना गुण गाया
 बारे मास जो ॥ शुक्ल पक्ष पंचमी तिथी पूरण प्रेम
 शुं, जे जन गाशे तेहनी फलशे आश जो ॥ ने० ॥
 ज० ॥ १८ ॥ ब्रह्मचारी जे ब्रह्म स्वरूपने पामशे, जे
 नर गावे ध्यावे ब्रह्म स्वरूप जो ॥ मया करी मोयें ब्रह्म
 स्वरूपने दीजीयें, जाइचंद नमे ए चौद लुवननो नू
 प जो ॥ ने० ॥ ज० ॥ १९ ॥ इति बारमास समाप्त ॥

॥ अथ श्रीकृष्णदेव आरति प्रारंभः ॥

॥ जय जय आदि जिनंद, जय जय आदि जिनंद ॥
 आदिकरण अरिहंता, सिद्धगिरि विजसंता ॥ ज० ॥
 ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नानिराया कुलचंद जिन जी ॥
 ॥ नानि० ॥ मारुदेवाके जाया, पाया परमानंद ॥

॥ जय० ॥ आदि० ॥ १ ॥ पूरव नवाणुं वार जिन
 जी ॥ पू० ॥ गिरिवर फरसन आया ॥ मुनिजन शि
 वपाया ॥ ज० ॥ आ० ॥ ३ ॥ लोकालोकनुं नास जि
 नजी ॥ लो० ॥ एक समयमें अनंता, ज्ञाता इव्य
 प्रकाश ॥ ज० ॥ आ० ॥ ४ ॥ चिंतामणी सम तुंहि
 जिनजी ॥ चिं० ॥ कल्पवृक्ष तुं केवा, अक्षयपद देवा
 ॥ ज० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इंदु चंद्र नागेंद्र जिनजी ॥
 ॥ इ० ॥ करे आरति शिरनामी, पंचमी गति गामी
 ॥ ज० ॥ आ० ॥ ६ ॥ मया करी महाराज जिनजी ॥
 ॥ म० ॥ जाइचंद्र गुन गाया, अविचल सुख पाया ॥
 ॥ ज० ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति आदिजिन आरति ॥

॥ अथ श्रीचक्रेसरीनी गरबी प्रारंभ ॥

॥ मा चक्रेसरी तुऊ गुण गावे, सो नर नवनिधि
 पावे ॥ सिद्धगिरि संगें महोटा मुनिजन, तुऊ गुण
 ध्यान लगावे ॥ मा स्वर्ग मृत्यु पाताल विषे, वास
 सकल ताहारो दीसे ॥ मा मुख जोइ सुर नर मन ही
 से ॥ मा० ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ मा वाघ वाहन शोभा
 सारी, खड्ग चक्र करमां धारी ॥ मा जिनशासनने
 उपगारी ॥ मा० ॥ सि० ॥ २ ॥ मा जे नर नारी तुऊ

ध्यावे, अविचल सुख लीला ते पावें ॥ मा दुःख दारि
 ५ दूरें जावे ॥ मा० ॥ सि० ॥ ३ ॥ मा शक्तिमां तुं
 शिरदारी, मया करी दिलमां धारी, मा जाश्चंद चि
 त्तमां प्यारी ॥ मा० ॥ सि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ संवत् १९३५ ना ज्येष्ठ शुदि एकमर्ने
 दिवसें श्रीसिद्धाचल क्षेत्रे मुनिवेश धारण कस्यो, ते
 समयें कुंमलीयो बनाव्यो, ते लखीयें ठैयें ॥

॥ कुंमलीया ठंद ॥ श्रीआणंदजी कल्याणजी, प्र
 थम नमुं गुरु पाय ॥ जास प्रेरणा ब्रह्म जयो, प्रगट
 जान अघ जाय ॥ प्रगट जान अघ जाय, सौजाग्य
 विजय हुइ संपत ॥ बीज रुची दाता जये, मोह
 राय मद चंपत ॥ मया करी मति पूर, कृपाके कं
 दजी ॥ अहनिश प्रणमुं पाय, गुरु श्री आणंदजी ॥

॥ इति श्रीमत्प्रवर पंमित पन्यास गणि श्रीसौजाग्य
 विजयजी महाराज तद्धिष्य पन्यास श्रीप्रताप विज
 यजी तद्धिष्य पन्यास श्रीहीरविजयजी महाराज त
 द्धिष्य मुनि श्रीमयाविजयविरचितः श्रीचतुर्थ गिरिवि
 लासः समाप्तः ॥ तत्समाप्तौ श्रीआत्मप्रबोध नामक
 स्याद्वादग्रंथस्य प्रथमजागः समाप्तः ॥ १ ॥

(७६)

॥ अथ द्वितीयजागप्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्रीतीर्थमालागर्जितश्रीसिद्धाचलरास लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदि पुरुष अकलंक जे, अगम अगोचर रूप ॥
अलख अमूरति आदि जिन, प्रणमे सुर नर नूप ॥
॥ १ ॥ इहवागवंशें ऊपनो, नाजिनरिंद सुजात ॥
नयरि अयोध्यानो धणी, मरुदेवा जसु मात ॥ २ ॥
प्रणमी पदकज तेहनां, शारद मात पसाय ॥ सिद्ध
गिरीगुण वर्णवुं, जसु समरे सुख थाय ॥ ३ ॥ गुरु
विण ज्ञान न संपजे, मूरख अंध समान ॥ हृदय
कमलने हितकरण, प्रगट्यो अजिनव जाण ॥ ४ ॥
सकल तीरथ शिर मुकुट ज्युं, ज्युं तारामां चंद ॥
सिद्धगिरी शिर सेहरो, सेवे सुर नर इंद ॥ ५ ॥ तेह
गिरी गुण गायवा, हियडे हर्ष न माय ॥ वाणी वा
क्य रूपा करो, जिब्हायें जस थाय ॥ ६ ॥ कविजन
पर करुणा करी, कर मुऊ मुख आवास ॥ श्रीसि
द्धाचल तीर्थनो, रचुं अनोपम रास ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ जंबूद्वीप लख जोयण जाण, तेहमां क्षेत्रज

અંક પ્રમાણ ॥ અકર્મ જૂમિ કર્મ જૂમિ લહું, જરત
 દેવ્રનો મહિમા કહું ॥ ૧ ॥ પાંચશે થોજન જરત
 પ્રમાણ, ઉપર ટઢીશ ઠ કલા જાણ ॥ પટ સ્વંમ શ્રી
 સિદ્ધાંતેં કહ્યા, તેહ ચક્રવ્રતિ સાધી લહ્યા ॥ ૨ ॥ તે
 હમાં વત્રિશ સહસ્ર ઠે દેશ, આરજ સાડી પચવિશ
 વિશેષ ॥ જિહાં જિનશાસન ધર્મ કહાય, થાવર જંગ
 મ તીર્થ સુહાય ॥ ૩ ॥ મગધ દેશ નયરી રાજગૃહી,
 શોના તે અલકાપુરી કહી ॥ મગધ દેશ ગ્રામ સંખ્યા
 લહું, કોડી એક લાખ ઠાશઠ કહું ॥ ૪ ॥ અંગ દેશ
 ચંપાપુરી જાણ, શ્રીજિનવાસુપૂજ્ય નિરવાણ ॥ અંગદેશ
 ગ્રામ ગણિત કહાય, લાખ પંચાવન તેહિજ થાય ॥
 ॥ ૫ ॥ તામિલ નગરી વંગજ દેશ, લાખ અઢાર જિ
 હાં ગ્રામવિશેષ ॥ કાશીદેશ વણારસી ધામ, પાર્શ્વ
 નાથ જન્મ્યા જે ઠામ ॥ ૬ ॥ જિહાં ઠે નયર ગ્રામ
 અતિ ઘણા, સંખ્યા ઝંગળી લાખજ ગણ્યાં ॥ કોશલ
 દેશ સાકેતન નયર, જિહાં બહુ ગ્રામ અનોપમ સયર ॥
 ॥ ૭ ॥ સહસ્ર નવાણું સંખ્યા કહી, પ્રવચન સારોઢા
 રથી લહી ॥ કલિંગ દેશ કંચનપુર શહેર, જવિજન
 કરતા ધર્મની લહેર ॥ ૮ ॥ કલિંગ દેશ લે લાખજ
 ગામ, શ્રીજિનવરનાં બહુ ઠે ધામ ॥ કુરુ દેશ નયરી

गजपुरी, शांतिजिनंद ज्यां चक्रेश्वरी ॥ ९ ॥ ग्रामत
 एी ते संख्या लहुं, व्याशी लाख उपर वली कहुं ॥
 सहस्र वीश शत पंच प्रमाण, कुरुदेशनी संख्या जाण
 ॥ १० ॥ सौरीपुर नयर कुशावर्त देश, जिहां ठे ग्राम
 नयर सुविशेष ॥ लाख एक तेंतालीश सेहेस, एहवा
 आरज कहीयें देश ॥ ११ ॥ देश पंचाल कंपिलपुर
 सार, सुधर्मि श्रावक व्रत धार ॥ त्रण लाख त्रेशछ
 हजार, ग्राम पंचाल देश निरधार ॥ १२ ॥ जंगलदेश
 अहिठत्ता नयर, तेह देशमां बहु ठे शहर ॥ ग्राम त
 एी संख्या ते थाय, पीस्ताली सहस एक लाख कहा
 य ॥ १३ ॥ मिथिला नगरी देश विदेह, ग्राम तएी
 संख्या कहुं तेह ॥ गज सहस संख्यायें जाण, जेह
 सिद्धांत कहे परिमाण ॥ १४ ॥ कोसंबी नगरी वहु
 देश, ठछा जिन कल्याण विशेष ॥ सहस अछावीश
 ग्राम कहाय, ज्यां जिनवर आणा वरताय ॥ १५ ॥
 नदिल पुर ने देश मयल्ल, श्रीजिन आणा पाले सय
 ल ॥ सहस सितेर ग्राम ते देश, आगें कहुं वली देश
 विशेष ॥ १६ ॥ मल्ल नगर ने देश वैराट, पांमव गुप्त
 रह्या जे घाट ॥ सहस अछावीश ग्राम ते देश, शो
 ना तेहनी अति अ विशेष ॥ १७ ॥ शुक्तिमती नय

री दशारणदेश, नर नारी धरे शीयल सुवेष ॥ एहवा
 देश ते उत्तम जाण, सहस्र अठार ते ग्राम प्रमाण ॥
 ॥ १८ ॥ देश शांमिल्य ने पुर नंदन, हरखें जन प्रभु
 निरखे वदन ॥ सहस्र एकवीश ते ग्राम कहाय, शां
 मिल्य देशनुं मान सुहाय ॥ १९ ॥ वरुण नयर वठ
 देश ते सार, श्रावकजन द्वादश व्रत धार ॥ ग्राम दे
 शमां सहस्र चोवीश, जन सुखीया वसे सयल जगी
 श ॥ २० ॥ वीतनय पाटणपुर सिंधुदेश, जिहां जिन
 बिंब प्रासाद विशेष ॥ षटलख ऊपर ग्राम सुहाय,
 एंशी सहस्र शत पंच कहाय ॥ २१ ॥ शुक्तिमती न
 यर ने देश विदर्भ, जिहां मद आठ तणो नहिं गर्व ॥
 सहस्र वेंताली तेहिज तणा, विदर्भ देशनां ग्रामज
 घणां ॥ २२ ॥ मथुरा नगरी देश शूरसेन, जिहां कु
 व्यसन तणुं नहिं चेन ॥ देश ग्राम अड सहस्रज
 धार, शूरसेन देश ते सार ॥ २३ ॥ पापा नगरी
 जूंगी देश, जिहां नही पाप तणो परवेश ॥ ठत्रीश
 सहस्र ग्राम ते जाण, एहवां आरज देश प्रमाण ॥
 ॥ २४ ॥ जंगदेश ने मारु पूर, दानादिक गुणे वर्त्ते शू
 र ॥ सहस्र नयन शत वेद सुहाय, ग्राम उपर पच
 वीश कहाय ॥ २५ ॥ सावडीपुर देश कुणाल, त्रीजा

जिन कल्याण रसाल ॥ ग्राम कहुं त्रेशठ हजार, आ
 वक जन समकित व्रतधार ॥ १६ ॥ नयर कोटी वृद्ध
 देशज लाट, तेह देशनो उत्तम घाट ॥ ग्राम तणी सं
 ख्या ठे घणी, सप्त लाख सहस तेरज नणी ॥ १७ ॥
 पूरी सेतंवि केकय देश, राय प्रदेशी केशी उपदेश ॥ पं
 चवीश सहस आठवों ग्राम, अर्धों आरज देश तेगाम
 ॥ १८ ॥ सोरठ देश ने द्वारामती, जिहां राय श्रील
 क्ष्मीपति ॥ पटलख आठ सहस पर कहुं, पंचशत त्रे
 वीश बली लहुं ॥ १९ ॥ ग्राम देशनी संख्या कही,
 ते सिद्धांत मांहेथी लही ॥ उत्तम देशमां सोरठ देश,
 जिहां सिद्धाचल तीर्थ विशेष ॥ २० ॥ प्रथम ढाल
 ए पूरण थइ, जाइचंद आग्रहथी कही ॥ सोरठ देश
 नो महिमा कहुं, जेहथी आनंद अधिको लहुं ॥ २१ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ मंत्रमांहि नवकार जिम, सुरगण मांहे इंद ॥ दे
 शमां सोरठ देश ते, जिम तारामां चंद ॥ १ ॥ गंध
 हस्ति गजमां बडो, पंखीमां जिम हंस ॥ मृगमांहे क
 स्तूरीयो, कुलमां रिखजनो वंश ॥ २ ॥ रत्नमांहे जि
 म सुरमणी, सरिता मांहे गंग ॥ तिम ए देश अ
 धिक कह्यो, सिद्धगिरि तणे प्रसंग ॥ ३ ॥ व्रतमांहि

ब्रह्मव्रत कथ्युं, देवमांहे अरिहंत ॥ लब्धिवंतमांहे व
डो, श्रीगौतम गुणवंत ॥ ४ ॥ सोरठदेश शोना घणी,
कहियुं आगें तेह ॥ श्रोताजन एकाग्रतें, सांजलजो
धरि नेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ देश मनोहर मानवो ॥ ए देशी ॥
सोरठ देश सोहामणो, देखी रीजे मन्न रे ॥ तेह दे
शमां दीपतां, कह्यां वली पंच रतन्न रे ॥ सोरठ०
॥ १ ॥ प्रथम रयण सिद्धगिरि कथ्युं, तारण नवजल
तीर रे ॥ नव्य अनंत मुगतें गया, समोसखा जिहां
वीर रे ॥ सोरठ० ॥ २ ॥ त्रण कल्याणक नेमनां, रा
जिमती नरतार रे ॥ रहनेमि राजिमती तिहां, पाम्या
नवनो पार रे ॥ सोरठ० ॥ ३ ॥ परवत शोना अति
घणी, उंचपणो उत्तंग रे ॥ देव घणा वासो वसे, तेह
गिरीने शृंग रे ॥ सोरठ० ॥ ४ ॥ सहसा वन सोहाम
णुं, विधविध वृद्ध अपार रें ॥ नेमजिणंद समोसखा,
बीजुं रत्न गिरनार रे ॥ सोरठ० ॥ ५ ॥ सलिता सोहे
अतिघणी, सोरठ देश मजार रे ॥ अहनिश नीर बहे
सदा, पंथीजन हर्ष अपार रे ॥ सोरठ० ॥ ६ ॥ तेह
मां त्रटिनी निर्मली, नामें शेत्रुंजी जेह रे ॥ कर्म म
लिन दूरें करे, न्हातां निर्मल देह रे ॥ सोरठ० ॥ ७ ॥

त्रण रत्न ए अति जलां, ध्यातां शिवसुख लेह रे ॥
 लज्जना वाजी सोहामणा, दोय रतन हवे केह रे ॥
 सोर० ॥ ८ ॥ स्त्रीरूपें अति घणी, जे उरवशी नारी
 रे ॥ रूप कलागुण देखीनें, गइ सुरलोकें हारी रे ॥
 सोर० ॥ ९ ॥ आनन शोचा देखीने, शशी बेठो जइ
 व्योम रे ॥ लांबी वेणी विलोकीनें, जोरिंग पेठो जोम
 रे ॥ सोर० ॥ १० ॥ नयण कमल दल पांखडी,
 अर्धचंद्र सम जाल रे ॥ दीप शिखासी नासिका, अ
 धुर प्रवाली लाल रे ॥ सोर० ॥ ११ ॥ दंत ऊक्यो
 दामिनी, कंठकपोत समान रे ॥ स्तन जंवीर फल
 जाणीयें, मल्लोदरी मृदु प्रमान रे ॥ सोर० ॥ १२ ॥
 लंक कटी सम केसरी, जंघा कदली स्तंज रे ॥ गज
 गति चालें गुण जरी, स्त्री रत्न कह्युं रंज रे ॥ सोर०
 ॥ १३ ॥ वाजी रतन कहुं पांचमुं, जाति अनेक क
 हाय रे ॥ ऐराकी आरबी हंसला, लडुकन्ना कंबोजी
 थाय रे ॥ सोर० ॥ १४ ॥ अश्वजाति अनेक कही,
 सोरठ देशें लहीयें रे ॥ हय जिनदास तणो कह्यो,
 पंचमुं रत्न ते कहियें रे ॥ सोर० ॥ १५ ॥ यतः ॥
 सौराष्ट्रे पंच रत्नानि, नारीनदीतुरंगमाः ॥ चतुर्थः श्री
 आदिनाथो, नेमिनाथश्च पंचमः ॥ १॥ ढाल पूर्वलो ॥

(८३)

सोरठ देश शोना घणी, वरणी मुखथी न जाय रे ॥
लेश मात्र वर्णन कछुं, पुण्ये फरसज थायं रे ॥ सोर०
॥ १६ ॥ तेह देशमां दीपतुं, देखी उपजे आनंद रे ॥
पालीताणा पुर जाणीयें, जिम तारामां चंद रे ॥
सोर० ॥ १७ ॥ ते पुर शोना वरणवुं, सुणजो श्रोता
तेह रे ॥ मयाविजय मुनि ए कही, बीजी ढाल ससनेह
रे ॥ सोर० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पालीताणा पुरतणी, ऊपम अतिहि कहाय ॥
गिरिवर तणा प्रसंगथी, शोना कहिय न जाय ॥ १ ॥
वापी कूप ने वाटिका, त्रटिनी सर सोहाय ॥ गिरि
वर शोना देखतां, हैहुं हर्षित थाय ॥ २ ॥ वरण
अठार तिहां वसे, सहजुन सुखिया सोय ॥ नगर ठेअं
तां जे वसे, दुःख नवि जाणे कोय ॥ ३ ॥ शत्रूकार
जिहां घणा, वली घणी धर्मशाल ॥ गोहिल तखत बिराज
ता, शूरसिंह नूपाल ॥ ४ ॥ सप्त व्यसन जेणें वारियां,
अरियण शिर जे काल ॥ दयाधर्म दानें अधिक, प्रजा
तणा प्रतिपाल ॥ ५ ॥ तेह नयरने परिसरें, श्रीसि
द्धाचल तीर्थ ॥ जिणे ए गिरि नेढ्यो नहीं, मणुअ ज
नम गयो व्यर्थ ॥ ६ ॥ नादीनंत ए तीर्थ ठे, जे

सम अवर न कोय ॥ मन वच कायें सेवियें, समकि
त निर्मल होय ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ए तीरथ तारुं ॥ ए देशी ॥

॥ हवे श्रीपालीताणा ग्राम, संघ जात्रानुं मुकाम
रे ॥ ए तीरथ नमीयें ॥ प्रथम जिणंदनी आझा लऽ
ने, संघ जात्रा करे गिरि जऽने रे ॥ ए. तीरथ नमी
यें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम देरासर प्रेम प्रकाशी,
दीववंदरना रहेवासी रे ॥ ए ती० ॥ वीशाश्रीमालि
तपगढ भांहे, रूपचंद नीम उढाहें रे ॥ ए० ॥ २ ॥
संवत अठार सतरनी शाल, थापी आदिजिन सु
विशाल रे ॥ ए० ॥ उपाशरो तपगढनो कीधो, पुण्य
बांधो जस लीधो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ बीजुं घर देरासर
जाणुं, पास प्रभुनुं वखाणुं रे ॥ ए० ॥ सूरती हेम को
र बाऽयें कीधुं, आतम कारज सीधुं रे ॥ ए० ॥ ४ ॥
दोय देरासरे प्रतिमा कहियें, एक शो एकविश लही
यें रे ॥ ए० ॥ पंचवीश धातु बिंब बिराजे, उँकार झूी
कार ठाजे रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ एक कंचन एक फटिक र
तननुं, पंच सिद्धचक्र धातुनां रे ॥ ए० ॥ पंच तीर्थ
इहां दश धातुनां, सात सिद्धचक्र रूपानां रे ॥ ए० ॥
॥ ६ ॥ गौतम स्वामी नमुं एक वेठा, पगलां जोडी ने

(८५)

त्रण दीग रे ॥ ए० ॥ श्रुतधर दाता सुर गुण गाता,
 प्रणमुं सरस्वति माता रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ ए आर्दे देवी
 वर चार, शासन नक्त उद्धार रे ॥ ए० ॥ एक शो अछो
 तर अंकनी राहें, गाम पालीताणा मांहे रे ॥ ए० ॥
 ॥ ८ ॥ गाम बाहिर एक चौमुख लहियें, केशवजी ना
 यकनां कहियें रे ॥ ए० ॥ संवत उगणी एक वीशनी
 शालें, चार शाश्वत नमवा जाले रे ॥ ए० ॥ ए ॥ प्रति
 मा एक शो नेर बिराजे, पंच तीरथ चार ठाजे रे ॥ ए०
 सिद्धचक्र वर चार सोहावे, पाडुका पट एक राजे रे ॥
 ए० ॥ १० ॥ एक धातुनी प्रतिमा लहियें, अंक समु
 ज्ञय कहियें रे ॥ ए० ॥ एकशो त्रेवीश सर्व मलीने,
 हरखें वंदवा जश्यें रे ॥ ए० ॥ ११ ॥ तपगह्वर खरतर
 अंचल केरा, तीन उपाश्रय हेखा रे ॥ ए० ॥ आणंदजी
 कल्याणजी केरुं, श्रीसंघनुं नाम जलेरुं रे ॥ ए० ॥
 ॥ १२ ॥ धर्मशाला सत्तावीश जाणुं, हवे गामथी बा
 हिर वखाणुं रे ॥ ए० ॥ ढाल त्रीजी पुर वर्णन लहियें,
 मयाविजय कहे कहियें रे ॥ ए० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गाम तलाटी दो विचें, धनुष पांचडों थाय ॥
 जाड दोय शो उपरें, पंचोतेर सोहाय ॥ १ ॥ पांच

देहरी इम अनुक्रमें, वावडी त्रण्य कहाय ॥ ललिता
सर इम जाणीयें, आदि अंत ते थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे, अजित जिणंदरुं ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम तलाटी शोना सुंदर देखीने, केतकी
जाय गुलाब आदि ठे वाग जो ॥ यात्राणा परिश्रम
थी इहां विश्रामता, पयपान ने संबल तणो ठे ला
ग जो ॥ आदिजिनने नमवा अति कलट नरें, नम
तां पातक सघलां दूर पलाय जो ॥ आदिजिनने न
मवा ॥ १ ॥ ए आंफणी ॥ आदि तलाटी वंदन
कीजें नावरुं, बावीश देहरी जिन नमीयें प्रभु पाय
जो ॥ वाम दिशायें शेत हेमाजाइ थापीया, संवत
अठार नेव्याशी शालज मांय जो ॥ आदि ॥ २ ॥
दक्षिण दिशियें पाडुका लींबडी नयरना, थापी वीर
चंद नाइचंदें सार जो ॥ अनुक्रमें वंदी इम चढवुं शि
वश्रेणियें, नव्यजीवने एह गिरि आधार जो ॥ आ ॥
॥ ३ ॥ प्रथम नरत ने नेमजिणंदनी पाडुका, कलि कुं
म पारस आदि ठे तिहां चौद जो ॥ देहरी तेर ठा
ला कम सुधी जाणीयें, चार शाश्वतां वांदो मनने
मोद जो ॥ आ ॥ ४ ॥ इंगलाजथी मान मोडीयें त्यां

लगे, चढवाने पगथीयां त्रीश एकशत जो ॥ ठाला
 कुंमथी चढवुं ठे दक्षिण दिशें, जिनेंइ टूकमां वंदी
 कीजें नृत्त जो ॥ आ० ॥ ५ ॥ भहोटी देहरी एक
 न्हानी एकवीश ठे, पास प्रभु पद्मावती थापी सार
 जो ॥ संवत उंगणीश आठनी शालें राजता, विजय
 देवेंइ सूरेश्वर ज्ञान दातार जो ॥ आ० ॥ ६ ॥ एक
 गौतम मूरति प्रमुख मुनिनी पाडका, कुंम एक ने बा
 ग एक श्रीकार जो ॥ हवे आगल हनुमान धारायें
 जावतां, पट देहरीने मुनि नव काउस्सग धार जो
 ॥ आ० ॥ ७ ॥ पगलां जोडी सातज प्रणमुं प्रेमशुं,
 सर्व मली पट कुंमज निर्मल नीर जो ॥ चढवाने
 वे श्रेणी त्यां थइ संचरो, मन वच काय करी वश
 थइयें वीर जो ॥ आ० ॥ ८ ॥ जाली मयाली ने उ
 वयाली वांदीने, देवकी षटनंदनने निरखो नयण
 जो ॥ दृष्टी गोचर जे जे मुऊने आवीया, ते ते उजट
 आणी गाया वयण जो ॥ आ० ॥ ९ ॥ ए तीरथ
 गुण वर्णन केतां कीजीयें, गुण अनंत तणुं ए उत्त
 म धाम जो ॥ ढाल चोथी ए पूरण गाई प्रेमशुं, म
 याविजयनुं सीधुं आतम काम जो ॥ आदि० ॥ १० ॥

(८८)

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध क्षेत्र ए शाश्वतुं, मानुं एहज न्याय ॥
राम पोलमां पेसतां, हैडुं हर्षित थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ विमलवत्सी हवे वंदीयें ॥ मनमोहन मेरे ॥ ना
जिनरिंदन जात ॥ म० ॥ युगलाधर्म निवारीया ॥
॥ म० ॥ मरुदेवा जसु मात ॥ म० ॥ १ ॥ लाख चौ
राशी पूर्वनुं ॥ म० ॥ आयु जास विख्यात ॥ म० ॥
पांचगें धनुष्यनी देहडी ॥ म० ॥ सुखधु मन्नी गुण
गात ॥ म० ॥ २ ॥ बीस लाख पूरव लगे ॥ म० ॥
कुंअर पणे प्रभु सार ॥ म० ॥ राज नार प्रभु जोग
व्यो ॥ म० ॥ लाख त्रेशठ सुखकार ॥ म० ॥ ३ ॥ एक
लाख पूरव कह्युं ॥ म० ॥ चारित्र खांमाधार ॥ म० ॥
लोकांतिक सुर वयणथी ॥ म० ॥ ग्रही ठंढी राज
नार ॥ म० ॥ ४ ॥ द्वादश मासें पारणुं ॥ म० ॥ ५
दुरसनुं कीध ॥ म० ॥ केवल इव्य उपार्जिने ॥ म० ॥
मरुदेवि मातने दीध ॥ म० ॥ ५ ॥ पूर्व नवाणुं आ
वीया ॥ म० ॥ दादा दीन दयाल ॥ म० ॥ फागुण
शुदी आठम दिनें ॥ म० ॥ एहज तिथि गुणमाल ॥

(८९)

॥ म० ॥ ६ ॥ गणधर चोराशी थया ॥ म० ॥ ज्ञान
तणा जंझार ॥ म० ॥ संघ चतुर्विध आपिंयो ॥ म० ॥
नविजन प्राण आधार ॥ म० ॥ ७ ॥ विमल वसीमां
विराजीया ॥ म० ॥ मंरुप देव विमान ॥ मन० ॥
मानुं ए मेरु हसे ॥ म० ॥ वेग त्रिभुवन जाण ॥
॥ म० ॥ ८ ॥ प्रथमोद्धार नरतें कखो ॥ म० ॥ अनु
क्रमें थया तिहां बार ॥ म० ॥ संवत एक अठलंतरें
॥ म० ॥ अयो तेरशमो उद्धार ॥ म० ॥ ९ ॥ जावड
शायें करावीयो ॥ म० ॥ एह प्रासाद उत्तंग ॥ म० ॥
आज लगे एहवो रह्यो ॥ म० ॥ देखत अधिक उमं
ग ॥ म० ॥ १० ॥ संवत पनर सत्ताशीयें ॥ म० ॥
करमाशायें कीध ॥ म० ॥ शोलशमा उद्धारनी ॥ म० ॥
प्रतिमा वंदी सुख लीध ॥ म० ॥ ११ ॥ पंचम कालें
प्राणीने ॥ म० ॥ तरवा नवजल नाव ॥ म० ॥ का
रणें कारज नीपजे ॥ म० ॥ आतम साधन दाव ॥
॥ म० ॥ १२ ॥ पंचावन जिन बिंबने ॥ म० ॥ न
मीयें गंजारामांहे ॥ म० ॥ रंग मंरुप नेवुं जिना ॥
॥ म० ॥ उँकार ङ्कीकार ते जांहे ॥ मन० ॥ १३ ॥
प्रतिमा एक पंच तीर्थिनी ॥ म० ॥ नमि विनमि का
उसगिया दोय ॥ म० ॥ नाजि मरुदेवी तणी ॥ म० ॥

(९०)

गयवर खंधें जोय ॥ म० ॥ १४ ॥ हवे उपरली नूमि
का ॥ म० ॥ पंचाशी नमुं पाय ॥ म० ॥ गौतम म
हालक्ष्मी तणी ॥ म० ॥ देखंतां दुःख जाय ॥ म० ॥
॥ १५ ॥ तपनी मुनि दोय शोचतां ॥ म० ॥ दो जो
डी पगलां सार ॥ म० ॥ तपसी दो मंरुप विषे ॥
॥ म० ॥ सवि त्राणुं अंक निरधार ॥ म० ॥ १६ ॥ अ
धो कर्ध्व बेहु मली ॥ म० ॥ बरें तहोंतेर ते ठाय ॥
॥ म० ॥ तीर्थेश्वरने वंदीया ॥ म० ॥ हवे परिकर
वंदाय ॥ म० ॥ १७ ॥ वर पकडी बेसी रहियें ॥ म० ॥
तो जाने आरीसाय ॥ म० ॥ ते माटे हवे वरणबुं ॥
॥ म० ॥ प्रणमी आदिजिन पाय ॥ म० ॥ १८ ॥ दे
रासर उगणीश ठे ॥ म० ॥ देहरी बरें ने सात ॥ म० ॥
दोय हजार नवर्षें जलां ॥ म० ॥ पंचाणुं नमुं प्रजा
त ॥ म० ॥ १९ ॥ काउसग्गीया तेत्रीश ठे ॥ म० ॥
सत्तावीश साधु सुजात ॥ म० ॥ आदि गणधर मुनि
तणा ॥ म० ॥ एक सहस सय सात ॥ म० ॥ २० ॥
सिद्धचक्र वर चार ठे ॥ म० ॥ धातुनी प्रतिमा चार
॥ म० ॥ ढाल पांचमी ए कही ॥ म० ॥ मयाविजय
सुखकार ॥ म० ॥ २१ ॥ इति ॥

(९१)

॥ दोहा ॥

॥ अछावन पगलां नलां, नाजि मरुदेवी मात ॥
युगलिक हस्ति एक नलो, आगें कहुं विख्यात ॥ १ ॥
गणपति अन्न पूर्णेश्वरी, देवी बीजी चार ॥ दिगपा
ल मूरति सोहामणी, शेरशेठाणी सार ॥ २ ॥ पुंमरी
क गणधर प्रमुख, देव देवी मनुहार ॥ अंक समु
च्चय हवे कहुं, हस्तिपोल प्राकार ॥ ३ ॥ चार हजा
र ने आठगें, बावन हाथी पोल ॥ सुरडुम रायण
देखिनें, मन उपजे कछोल ॥ ४ ॥ ए तीरथ ठे शा
श्वतुं, पूर्व नवाणुं वार ॥ आदि जिणंद पधारिया, आ
गें कहुं विस्तार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ मोरा आतमराम, कुण दिन शेरुंजे जाशुं ॥ ए
देशी ॥ मोरा आतमराम, ए तीरथ ठे वारू ॥ आगें
अनंता ए गिरि आया, अजरामर पद सारू ॥ मोरा ०
॥ १ ॥ चंद नरिंद आजापुर स्वामी, मायें कुर्कुट की
धो ॥ ए तीरथने प्रनावें इब्बित, सूरजकुंम जस ली
धो ॥ मो ० ॥ २ ॥ शुकराजा शुज ध्यानं ध्यायो, पू
रव प्रेम प्रयोगें ॥ नमिविनमी विद्याधर राजा, दो
कोडी मुनि जोगें ॥ मो ० ॥ ३ ॥ लाख एकाणुं ना

(९१)

रदजी साथें, अविचल पदवी पाया ॥ षट नंदन इहां
 कर्म खपाया, देवकी मातना जाया ॥ मो० ॥ ४ ॥
 वीश कोडीशुं पंढव पांचे, अजरामर पद पावे ॥ राम
 नरत त्रण कोडी मुनिशुं, कर्मकृत्यें शिव जावे ॥ मो०
 ॥ ५ ॥ अजित शांति चोमासूं कीधुं, देव घणा उठरं
 गें ॥ मणिमय तोरण मंरुप रचना, एह गिरिने श्रृंगें
 ॥ मो० ॥ ६ ॥ वीर जिणंद समोसखा ए, वांदवा प्र
 थम ते इंद ॥ प्रभु मुख वर्णन सांजली मनमां, नही
 को एहवो गिरिंद ॥ मो० ॥ ७ ॥ सांव प्रद्युम्न ए प
 ए सिद्धगिरिरायें, कोडी साडी आठशुं आये ॥ जालि
 मयालि उवयाली राय, अगुरु लघुपद पाये ॥ मो०
 ॥ ८ ॥ एम अनंता मुनि ए तीर्थें, शाश्वतपद सुख
 लीधुं ॥ अल्पबुद्धि वर्णन किम कीजें, लेश मात्र इहां
 कीधुं ॥ मो० ॥ ९ ॥ एकवीश नामें ए गिरि ध्यावो,
 शत्रुंजय गिरि पहेजो ॥ बाहुवलि ठुक नाम ए बीजुं,
 नही समरे ते घेलो ॥ मो० ॥ १० ॥ मारु देवीने पुंरु
 रीक गिरि, रैवत गिरि विशराम ॥ विमलाचल सिद्ध
 राज नगीरथ, सिद्धक्षेत्र शुन ठाम ॥ मो० ॥ ११ ॥
 सहस्रकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल सुप्रसि
 द्ध ॥ शतकूट टंक ने कोडि निवासो, जसु समरे सु

(९३)

ख लीध ॥ मो० ॥ १२ ॥ कदंबगिरि ने लोहित नामें,
तालध्वज पुण्यराश ॥ महाबल दृढशक्ति ए एकवीश,
आतम कीजें निवास ॥ मो० ॥ १३ ॥ आ कालें प
ए तीरथनो, जाणी लान अपार ॥ जिनप्रासाद
नवीन निपाया, आगल कहुं ते विचार ॥ मो० ॥ १४ ॥
हाथी पोलथी बाहिर जातां, दोय जिन घरनी उल ॥
संप्रति प्रमुखें कथां जिनमंदिर, पूर्वदिश वाघेण पोन्न
॥ मो० ॥ १५ ॥ देरासर एकतीस समुच्चय, देहरी
पंचाणुं जाण ॥ आलीयें जालीयें वली मयालीयें,
संख्या कहुं ते प्रमाण ॥ मो० ॥ १६ ॥ तेरशें एकोते
र नाथ विराजे, धातुना बावन्न ॥ सिद्धचक्र वर शोल
सोहावे, पंच मेरु मान्युं मन्न ॥ मो० ॥ १७ ॥ काउ
सगिया एकवीश ते जाणो, पगलां उंगण पचाश ॥
तपसी मुनिवर दोयने वंदी, चोरी नेम निवास ॥
मो० ॥ १८ ॥ अढीढीप लोकनाल अलंकृत, स्त्री ए
क काउसग देखी ॥ पुण्य पाप प्रवेश सांढियो, देवी
चार गवेषी ॥ मो० ॥ १९ ॥ यहुनी मूरति त्रण प्रमा
णी, शेठ शेठाणी पट जाणी ॥ टांकां त्रण प्रचुजी
पखालन, निर्मल जरियां पाणी ॥ मो० ॥ २० ॥ शा
सननी रखवाली दोये, चक्रेश्वरी सुखकारी ॥ वाघ

(९४)

वाहन शोना अतिसारी, खड्गचक्रकरधारी ॥ मो०
॥ ११ ॥ सूरज ईश्वर नीम कुंमने, नोषण कुंमते चार
॥ शिवलिंग ए सूरज कुंमै, हनुमान वाघण बे बार
॥ मो० ॥ १२ ॥ अंक समुच्चय कहुं एहनो, पन्नरशें
पीस्ताली ॥ चार वृद्ध ठे आदि अंतें, इण तीरथ ला
गी ताली ॥ मो० ॥ १३ ॥ वाघण हाथी पोल म
लीने, विमलवसी कहेवाय ॥ ढाल ठही ए पूरण
प्रेमें, मयाविजय सुखदाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदि खंम एक वरणव्यो, बाहेर खंम ठे आ
ठ ॥ तेहमां चउ मुख आय ठे, देखो शीला पाठ ॥
॥ १ ॥ अमदावाद खरतर गठें, झाति लघु पोरवा
ल ॥ शिवासोमजी जाणियें, मोह चोर दियो ताड
॥ २ ॥ न्यायें इय उपार्जिने, कीध प्रासाद उत्तंग ॥
नलिनीगुल्म विमान ज्युं, दीसंतो अति चंग ॥ ३ ॥
संवत शोल पंचोतरें, चउमुख स्थापन कीध ॥ तीर
थ महिमा अनुक्रमें, वृद्धि करी जस लीध ॥ ४ ॥
आदि ब्रह्मा एह ठे, बेठे ध्यान लगाय ॥ देखत मु
झ नाथकी, पाप करम मिट जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ सल्लूणानी देशी ॥ खरतर वसी हवे वरणवुं रे, जा
 एवा जिनघर श्रेण ॥ सल्लूण ॥ काल अनादि हुं नम्यो
 रे, दीठो नही ए नेण ॥ स० ॥ ए गिरिवर गुण गावतां
 रे, पाप कर्म होय क्लीण ॥ स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ देह
 रा उगणीश ज्ञाणीयें रे, देहरी सत्तावन सार ॥ स०
 ॥ संवत उगणी एकवीशमां रे, माघ सप्तमी गुरुवार
 ॥ स० ॥ ए गिरि० ॥ पाप० ॥ २ ॥ अंजन शिलाका
 यें करी रे, केशवजी नायकेन ॥ स० ॥ अजिनंदन
 पथरावीया रे, देखत विकसित नयन ॥ स० ॥ ए ग०
 ॥ पा० ॥ ३ ॥ आलीयें मयालीयें जालीयें रे, नव
 शें चालीश विंब ॥ स० ॥ धातुनी त्रेशठ कही रे, सि
 ष्चक्र पंच अंब ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ ४ ॥
 पंच तीरथ एक रजतनी रे, सिष्चक्र तेम जाण ॥
 स० ॥ मरुदेवा एक हस्तियें रे, साधु पंच सुनाण ॥
 स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ ५ ॥ बहेंतालीशशें उपरें रे, चुम्मा
 लीश वली तेह ॥ स० ॥ पगलां जोडी शोभतां रे, प्रण
 मीजें ए नेह ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ ६ ॥ गोमुख
 कवड ए चार ठे रे, चक्रेश्वरी दो जाण ॥ स० ॥ शेंठ
 शेगणी चारवुं रे. समुच्चय अंक प्रमाण ॥ स० ॥

(६६)

ए गि० ॥ पा० ॥ ७ ॥ बावनशें उपर कहुं रे, एको
तेर ते ठाय ॥ स० ॥ चोकीयें पीर अंगारशा रे, चा
दर संग चढाय ॥ स० ॥ ए गि० ॥ ८ ॥ पंमव दू
क ते पास ठे रे, पांचे पांमव जोय ॥ स० ॥ कुंता ने
झोपदी नमो रे, सतीय शिरोमणी सोय ॥ स० ॥ ए गि०
॥ पा० ॥ ९ ॥ संवत सतर अठ्याशीएं रे, थाप्या पांमव
पंच ॥ स० ॥ दलीचंद कीकायें कखो रे, पुण्य धरम
नो संच ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ १० ॥ तेह दू
कमां शोनतुं रे, देहरुं एक रसाल ॥ स० ॥ अचल
गह्वमां शोनता रे, झार्ते श्रीसीमाल ॥ स० ॥ ए गि०
॥ पा० ॥ ११ ॥ संवत अठार ने आठमां रे, खुशा
लचंद माह्या जाइ ॥ स० ॥ सहस्र कूट तिहां शोनतो
रे, कीधी सुकृत कमाइ ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ १२ ॥
जीते मेरुनुं पाटीयुं रे, समोसरण एक धार ॥ स० ॥
लोकनाल एक तेहमां रे, सिद्धचक्र एक सार ॥ स०
॥ ए गि० ॥ पा० ॥ १३ ॥ अंक समुच्चय हवे कहुं
रे, एक सहस्र दोय सत्त ॥ स० ॥ मनोहर आंबली
वृद्ध ठे रे, कीजें इहां गीत नृत्त ॥ स० ॥ ए गि०
पा० ॥ १४ ॥ खरतरवसी परसंगमां रे, पांमव दूक

(९७)

ते गाइ ॥ स० ॥ ढाल सातमी ए कही रे, मया
विजय सुखदाइ ॥ स० ॥ ए गि० ॥ पा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति जिनेसर शोलमा, अचिरा मात मलार॥
विश्वसेन कुल ऊपना, नयरी हथिणा सार ॥ १ ॥ मृ
गलंठन प्रचु चरण ठे, काया कंचन वान ॥ पूरव
जव पारेवडो, ऊगाखो जगवान ॥ २ ॥ ठीपा वसी
विराजीयां, देरासर त्रण सार ॥ परिकर वंदन कारणें,
देहरी दश तस लार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ श्रीयुगमंधरने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ ठीपावसी वंदन कीजें, मणुअ जनम लाहो
लीजें, ए गिरिवर ध्यावो प्राणी, एम कहे केवलना
णी रे ॥ ठीपा० ॥ १ ॥ काल अनंतो हुं जमीयो,
मिहामतिमां बहु रमीयो, विषयादिकने नवि दमीयो
रे ॥ ठीपा० ॥ २ ॥ मणुअ जनम दुर्लज लाधो, सुक
त पुण्य अधिक वाध्यो, देवगुरु धर्म अब साथ्यो रे॥
ठीपा० ॥ ३ ॥ देरासर त्रण दश देहरी, प्रतिमा उंगणी
शं सवि हेरी, पांच जोडी पगलां घेरी रे ॥ ठीपा०
॥ ४ ॥ यकनी मूरति एक कही, शेठ शेठाणी दोय

लही, रायण वृद्ध ठे एक सही रे ॥ ठीपा० ॥ ५ ॥
 ढाल आवमी एह कइ, ठीपावसी वरणव लइ, म
 याविजय अविचल थइ रे ॥ ठीपा० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रेमनेम ने जोडवा, ठे प्रेमावसी नाम ॥ प्रेम
 विना करणी करे, ते नवि आवे काम ॥ १ ॥ प्रेम
 जनित सग्या जिहां, जलके आतम ज्योत ॥ चोथी
 टूक प्रेमावसी, अनुनव जाव उद्योत ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ चित्त चोखे चोरी नवि करीयें ॥ ए देशी ॥ चि
 त्त चोखे प्रेमावसी नमीयें, आतम अनुनवमां रमी
 यें ॥ चि० ॥ आदिजिनेसर पाय नमीने, रोग सोग दुःख
 वीशमीयें ॥ चित्त० ॥ आत० ॥ १ ॥ समता साहे
 ली संगें रमीयें, कुमता संगें नवि नमीयें ॥ चि० ॥
 मोहरायने दूर करीने, कुगुरु कुदेवने नवि नमीयें ॥
 चित्त० ॥ आ० ॥ २ ॥ अमदावाद रहेवासी मोदी,
 प्रेमचंद लवजी कहियें ॥ चि० ॥ संवत अठार त्रैता
 लीश शालें, थापी प्रभुजी जस लहियें ॥ चि० ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ देरासर खट शोना अतिही, देहरी पंचावनने
 नमियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ पांचगें ठत्रीश बिंब बिरा

(एए)

जे, मंमप देखी चित्त रमियें ॥ चि० ॥ ४ ॥ पांच धा
तुनी प्रतिमा वंदूं, नवसिद्ध चक्र हृदे रमियें ॥ चि० ॥
रूप फटिक दोये प्रतिमा जाणुं, देखंतां दुःख सवि
गमियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ गणधर मुनि पद
पंकज उत्तम, चौदशेंने त्रेशठ धरियें ॥ च० ॥ गोमु
ख आदि त्रण जह्नु ठे, सेवंतां सोहा वरियें ॥ चि०
॥ आ० ॥ ६ ॥ पद्मावर्त। चक्रेसरी आर्दे, पांच देवी ति
हां लहियें ॥ चि० ॥ दोय हजार ने त्रेवीश आंके, स
र्व मज्जीने एकहियें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ७ ॥ ढाल सु
धारस नवमी रचना, मयाविजय कहे धन धरियें
॥ चि० ॥ ए गिरि गुण जे नावें जणशे, अजरामर
पद ते वरीयें ॥ चि० ॥ आ० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आतम शुद्ध स्वभाव जे, हेम हुताशन संग
॥ जडता संग निवारियें, प्रगटे आतम रंग ॥ १ ॥
पांचमी टुंक हेमावसी, अजित जिणंद दयाल ॥
मूल नायक जिनराजनै, नमियें नित्य रसाल ॥ २ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ एकवार बह्व देश आवजो, जिनंद राय ॥ एक
वार बह्वदेश आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ हेमावसी करो वंदना चेतनराय ॥ हेमा० ॥
 चित्तपंकज परकाश करनकूँ, अजित जिणंद मुनिंदना
 ॥ चे० ॥ हे० ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम पुरुषातन साचुं,
 उर पुरुष सवि फंदना ॥ चे० ॥ हे० ॥ मोह राय
 मद महर तोडी, कीधां ठे कर्म निकंदना ॥ चे० ॥
 हे० ॥ २ ॥ गुर्जर देश तिलक सम ठाजे, अमदावा
 द सुरंगना ॥ चे० ॥ हे० ॥ शेठ हेमानाई जग सहु
 जाणे, उसवंश सुचंगना ॥ चे० ॥ हे० ॥ ३ ॥ सं
 वत अठार ने ज्याशी मांहे, हेमावसी करु थापना ॥
 चे० ॥ हे० ॥ पुण्यनंमार तिहां बहु जरियो, अजित
 जिणंद शुचि जापना ॥ चे० ॥ हे० ॥ ४ ॥ देहराचा
 र हेमावसी मांहे, देरी चुम्मालिश घेरियां ॥ चे०
 ॥ हे० ॥ त्रणशें अठारे जिनजी सोहावे, देखत दर्शन ले
 हेरीयां ॥ चे० ॥ हे० ॥ ५ ॥ चार धातुनी प्रतिमा क
 हियें, त्रण पंच तीर्थ सुजावना ॥ चे० ॥ हे० ॥ सिद्धच
 क्र धातुनां सातज, दो जोडी पगलां ठावनां ॥ चे० ॥ हे०
 ॥ ६ ॥ शेठ शेठाणी दोय कहां ठे, दोय कर जोडी
 सामना ॥ चे० ॥ हे० ॥ अंक समुच्चयें कहेणुं गणती, त्र
 णशें ठत्रीश ए धामनां ॥ चे० ॥ हे० ॥ ७ ॥ दशमी
 ठालें अधिक सोहावे, अजित अजित सुख वंदना ॥

(१०१)

चे० ॥ हे० ॥ मयाविजय मन हर्ष आनंदें, पावे प
रम आनंदना ॥ चे० ॥ हे० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोती माणक हीरला, पामे तेह सुलज ॥ स
मदृष्टि समजावमें, वरते तेह डुलज ॥ १ ॥ पूरव का
लें नवि कियो, एहवो अजब वनाव ॥ तिणें मोती व
सी वरणवुं, देखी उपन्यो जाव ॥ २ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ सोना रूपाकें सोगठे, सांइ खेलत बाजी ॥ ए देशी ॥

॥ मोती वसीमां वंदीयें, जिहां आदि जिणंदा ॥
देखत प्रभुमुख चंद ज्युं, जीपे तेज दिणंदा ॥ मो० ॥

॥ ए टैंक ॥ २ ॥ आज शरण आब्यो हवे, प्रभु तुं
शिर साचो ॥ आण धरावुं ताहरी, उर देव न राचो

॥ मो० ॥ ३ ॥ अमीचंद साकरशा, उंसवंश दीपावा

॥ तस सुत मोती जाइ जे, वखा कमल प्रजावा

॥ मो० ॥ ४ ॥ मुंबइ बंदर वासता, शुन मुहूरत ली

नो ॥ पुत्रने काम जलावीने, स्वर्गेवास कीनो ॥ मो०

॥ जी० ॥ ५ ॥ शेठ खेमचंद सज करे, संघ साथमें

लावे ॥ बावन संघ मळ्या तिहां, परिजन बहु आवे

॥ मो० ॥ जी० ॥ ६ ॥ अतिहि आडंबर आविया,

सिद्धक्षेत्र उच्चाहे ॥ पांच हजार बिंब आशरे, मली
 एकज गाहे ॥ मो० ॥ जी० ॥ ६ ॥ संवत अठार त्रे
 याणुमां शुन मुहूरत आवे ॥ महाशुदि दशमी वा
 सरें, अंजन करि जावें ॥ मो० ॥ जी० ॥ ७ ॥ पिता
 कृत प्रासादमां, आदिजिन थापी ॥ जयजयकार कहे
 सहु, जग कीरति व्यापी ॥ मो० ॥ जी० ॥ ८ ॥ देरां
 पन्नर टुंकमां, एकावन देहरी ॥ आलीए मालीए जा
 लीए, दीजें फरती फेरी ॥ मो० ॥ जी० ॥ ९ ॥ दोय
 हजार गुणत्रीश ठे, जिनबिंबनी संख्या ॥ बत्रीश
 धातुना प्रभु, पंचतीर्थ बावीसा ॥ मो० ॥ जी० ॥ १० ॥
 सिद्ध चक्र धातुतणां, बत्रीश कहीजें ॥ रूपानां अगि
 यार ठे, सिद्धचक्र लहीजें ॥ मो० ॥ जी० ॥ ११ ॥
 चउदशें ठप्पन जोड ते, पगलां शुन गाइ ॥ नाजि
 मारुदेवा चार ठे, गोमुख चक्रेसरी माइ ॥ मो० ॥
 ॥ जी० ॥ १२ ॥ एक नैरव मूरति तिहां, एक कुंता
 माता ॥ अष्ट मंगल पट एक ठे, सवि जन गुण गा
 ता ॥ मो० ॥ जी० ॥ १३ ॥ शेट शेटाणी नव कहा,ा,
 कहुं अंक समुच्चें ॥ बत्रीशशें सरवे मली, लघु दोय ब
 गीचे ॥ मो० ॥ जी० ॥ १४ ॥ एक कुंम जलशुं न
 खो, गढ बाहेर सोहे ॥ देरासर दोय जाणीयें, सवि

(१०३)

जन मन मोहे ॥ मो० ॥ जी० ॥ १५ ॥ एकशो एक
शर जाणीयें, बिंब सर्व कहीजें ॥ दोय सिद्धचक्र ना
णीयें, राम पोल लहीजें ॥ मो० ॥ जी० ॥ १६ ॥ ढाल
एकादशमी नणी, नाश्चंद आदेशें ॥ मयाविजय
सुख संपदा, कही मति लेजें ॥ मो० ॥ जी० ॥ १७ ॥
॥ दोहा ॥

॥ बोल बांला चढती थड, दीपे तेज सवाय ॥
बालावसी एक नाम ठे, बीजुं दीपावसी गाय ॥ १ ॥
सप्तमी टुंक ए शोजती, सप्त नय नीवार ॥ आदि
जिनंद तिहां जला, नमियें नित्य सवार ॥ २ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मनमोहनजी जगतात, वात सुणो जिनराजजी
रे ॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिनजगत दयाल, तुम सेवा मोहे दी
जीयें रे ॥ मुऊ मनमां ए अनिलाख, आप समो मोहे
कीजीयें रे ॥ आदि० ॥ तु० ॥ १ ॥ तुम दरिसण
विण नवमांहि, रऊब्यो काल अनादीमां रे ॥ हवे
आज थयो हुं सनाथ, आरज क्षेत्र मनुष्यादीमां रे ॥
॥ आ० ॥ तु० ॥ २ ॥ मुंबई बंदर सुवास, वीसा श्री
माली झातमां रे ॥ कल्याणजी कानजी नाम, पुत्र

બાલાનાં સુખશાતમાં રે ॥ આઠ ॥ તુઠ ॥ ૩ ॥ અઢાર
 ઝ્યાણુંની શાલ, બિંબ પ્રતિષ્ઠા શુન મુદૂરતેં રે ॥ તપગ
 હપતિ સુખકાર, વિજય દેવેંડ સૂરિવ્રતેં રે ॥ આઠ ॥
 ॥ તુઠ ॥ ૪ ॥ બાલાવસી માંહે ચાર, દેરાસર અતિ
 સોહતાં રે ॥ શોલ દેરી બની સુખકાર, નવિજનનાં
 મન મોહતાં રે ॥ આઠ ॥ તુઠ ॥ ૫ ॥ બરોં અડતા
 લીશ બિંબ, પ્રતિમા વંદૂં દોય ધાતુની રે ॥ ત્રણ પંચ
 તીર્થ સિદ્ધચક્ર, પંચ ધાતુ સુખ શાતની રે ॥ આઠ ॥
 ॥ તુઠ ॥ ૬ ॥ એક રૂપાનાં સિદ્ધચક્ર, પગલાં દોય
 નમો સદુ રે ॥ નાજિ મારુદેવી માત, ગયવર સ્વંધ
 વેળાં વેદુ રે ॥ આઠ ॥ તુઠ ॥ ૭ ॥ ચક્કેસરી ગોમુખ
 ચદ્દ, શેઠ શેઠાણી ત્રણ ત્યાં લહ્યાં રે ॥ દોય સત ગુ
 ણંતર સર્વ, બાલાવસી માંહે તિમ કહ્યાં રે ॥ આઠ ॥
 ॥ તુઠ ॥ ૮ ॥ શ્રીઆદિ જિણંદ પસાય, બારમી ઢાલ
 પૂરણ થઈ રે ॥ મયાવિજય મનોરથ સિદ્ધ, મનવંઢિત
 ફલ સુખ લઈ રે ॥ આઠ ॥ તુઠ ॥ ૯ ॥

॥ દોહા ॥

॥ સાકરચી મીઠી કહી, જિનવાણી સુરસાલ ॥
 સર્વ જીવ સુખ કારિણી, ઢક્કાયક પ્રતિપાલ ॥ ૧ ॥
 તિણ સાકરવસી વર્ણવું, પાર્શ્વનાથ જે ઠામ ॥ ધાતુ

(१०५)

मय सोवनसमी, जन्म वाराणसी धाम ॥ १ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे ॥ ए० ॥ ए देशी ॥

॥ पारस प्रभु दरिसन देखीने, तनमन वयण सु
ख पाया ॥ अंतर आतम आनंद पाम्यो, जय जय
जगगुरु राया ॥ मेरे प्यारे ॥ साकर वसी नमो जावें,
साकरवसी नमो जावें मे० ॥ सा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
त्रेवीशमा तीरथ पति साचा, त्रेवीश विषयने टाले ॥
आतम सत्ता शुद्ध बनावी, लोका लोक निहाले मे० ॥
सा० ॥ २ ॥ उर पारस पाषाण कहावे, कंचन लोह
बनावे ॥ तुं तो आप सरूप बनावे, तुज सम उर न आवे
मे० ॥ सा० ॥ ३ ॥ आज्ञव परजव नाथ तुमा
रुं, शरण हवे में कीधुं ॥ दीन बंधुनी मेहेर नजर
थी, कारज सघलुं सीधुं मे० ॥ सा० ॥ ४ ॥ लघु
श्रीमाली उत्तम ज्ञातें, अमदावाद रहेवासी ॥ शा प्रे
मचंद उत्तम कुलदीपक, साकरचंद सेवासी मे० ॥
सा० ॥ ५ ॥ संवत अठार ज्याणुंनी शालें, पास
प्रभु पथराया ॥ जय जयकार जयो सहु जगमें, सं
घपति तिलक धराया मे० ॥ सा० ॥ ६ ॥ चारदे
रासर उंगणीश देरी, मूलनायक प्रभु पास ॥ शुद्ध कं

चन धातुमय देखी, पूरे वंढित आश मे० ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ एकशो एकवीश जिनवर प्रतिमा, सिद्धचक्र
 एक जाणो ॥ पंचतीर्थी एक धातुनी, पगलां नव गुरु
 नाणो मे० ॥ सा० ॥ ८ ॥ पास पास वैरुट्या ज
 ढणी, शासन सांनिध्य जाणुं ॥ शेर शेरणी पां
 च मुडा ठे, समुच्चय अंक वखाणुं मे० ॥ सा० ॥
 ॥ ९ ॥ एक शो गुण चालीशसवि संख्या, साकर व
 सीमां कहियें ॥ ढाल तेरमी पूरण प्रेमैं, मया करी जस
 लहियें मे० ॥ सा० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टम द्वीप नंदीश्वरें, बावन चोमुख जाण ॥
 प्रतिमा ते कहि शाश्वती, जांखे केवल नाण ॥ १ ॥
 रूपन चंडानन वारिषेण, वर्द्धमान ए चार ॥ २ ॥
 में ए शाश्वती, अधिक कह्यो विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

अजित जिनेश्वर चरणनी सेवा, हेवायें हुं ह
 लीयो ॥ ए देशी ॥

॥ नंदीश्वर तो अतिही ठेटो, कीजें कियविध जे
 टो ॥ ते नंदीश्वर आंहीज जेटो, मननो संशय मेटो
 ॥ सहियर चालो जइयें आज, श्री नंदीश्वर निरखो

॥ ए टेक ॥ १ ॥ शेर श्रीराज नगर हेमानाड, चाता
 उजम बाड ॥ साथें पुत्रज प्रेमा जाड, तेंणें ए रचना
 गाड ॥ सहियर ० ॥ श्रीनं ० ॥ २ ॥ अठारशें त्राणुंनी
 शालें, संघ चतुर्विध साथें ॥ गुन मुद्दूरत प्रनु पधरावी,
 बेन उजमने हाथे ॥ सहिय ० ॥ श्रीनं ० ॥ ३ ॥
 दोय देरासर खट ठे देरी, बशें पंचाशी बिंब ॥ पंचतीर
 थी एक धातुनी, सिद्धचक्र दो अंब ॥ स ० ॥ श्रीनं ० ॥
 ॥ ४ ॥ ढाल चउदमी पूरण कहियें, आनंद अधिको
 लश्यें ॥ मयाविजय कहे धन धन ते दिन, नित नित
 जेटवा जश्यें ॥ सहि ० ॥ श्री नं ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ देरासर एक शोजतुं, अदनुत आदिजिनंद ॥
 बालावसीने पास ठे, टाले कर्मनो फंद ॥ १ ॥ शेर
 हेमा जाडनी कही, गोत्रज देवी मात ॥ त्रण्य कुंम ज
 लछुं नखा, निर्मल करवा गात ॥ २ ॥ ए तीरथ महिमा
 घणो, जांखे त्रिभुवन जाण ॥ पूर्व उधार जे जे थया,
 जाखुं तेह वखाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ साहेब सांजल वीनती, तुं ठे चतुर सुजाण ॥
 सनेही ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम उद्धार नरतेँ कीयो, आदिजिनंद उपदे
 जेँ रे ॥ संघपंति तिलक धरावीयुं, कह्यो अधिकार वि
 शेषेँ रे ॥ ए तीरथ ठे शाश्वतुं ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरत पा
 टथी आठमें, दंमवीरज थया जेह रे ॥ बीजो उद्धार
 आमंवरें, वरणवीयें केम तेह रे ॥ ए तीरथ ० ॥ २ ॥
 ईशान इंड़ें त्रीजो कीयो, सीमंधर जिनवयणें रे ॥ चो
 थो माहा इंड़ें कीयो, धन जेणें निरख्यो नयणें रे ॥
 ॥ ए ती० ॥ ३ ॥ ब्रह्मइंड़ें कखो पांचमो, ठछो चमरेंइं क
 राख्यो रे ॥ सागर चक्रवर्ती सातमो, ए तीरथ गुण
 जाख्यो रे ॥ ए ती० ॥ ४ ॥ रत्ननां बिंब नंमारियां,
 पडतो काल ते जाणी रे ॥ व्यंतरना इंड़ें कखो, अ
 ष्टमो ए गुणखाणी रे ॥ ए ती० ॥ ५ ॥ चंडजसा
 राजा करे, चंड प्रभु उपदेशें रे ॥ नवमो उद्धार ते
 जाणीयें, सादीनंत सुख लेखें रे ॥ ए ती० ॥ ६ ॥
 शांतिनाथ उपदेशथी, दशमो उद्धार करावे रे ॥ च
 कायुध राजा तिहां, झानी वचन मन जावे रे ॥
 ॥ ए ती० ॥ ७ ॥ दशरथ नंदन राम जे, श्रीमुनि सु
 व्रत वारे रे ॥ एकादशमो करावीयो, आतम कारज
 सारे रे ॥ ए ती० ॥ ८ ॥ पांमव पांचे परवरी, नेम
 जिनंदने वार रे ॥ द्वादशमो तेणें कीयो, मनुअ ज

(१०९)

नम कियो सार रे ॥ ए ती० ॥ ए ॥ बार उद्धार ए
मोटका, चोथे आरे कीजें रे ॥ वीरवचन इंदें सुणी,
ए गिरि गुण रस पीजें रे ॥ ए ती० ॥ १० ॥ संवत
एक अठलंतरें, जावड साहें कीधो रे ॥ वयर स्वामी
उपदेशथी, तेरसमो सुप्रसिद्धो रे ॥ ए ती० ॥ ११ ॥
संवत बार नै.तेरमां, चउदशमो उद्धार रे ॥ बाहडदे
मंत्रियें कखो, कुमारपालनी वार रें ॥ ए ती० ॥ १२ ॥
संवत तेर इकोत्तरें, पन्नरमो उद्धार रे ॥ समराशाहें
करावीयो, वत्थ्यो जयजयकार रे ॥ ए ती० ॥ १३ ॥
संवत पन्नर सत्याशीमां, कर्माशायें कीधो रे ॥ शोल
उद्धार पूरण कखा, आतम गुणरस पीधो रे ॥ ए
ती० ॥ १४ ॥ पंचम आरे ठेहेडले, डुप्पसह सूरी
थाज्ञो रे ॥ सत्तरमो उपदेशथी, विमल वाहन सुख
पासे रे ॥ ती० ॥ १५ ॥ सत्तरमो ए करावज्ञो, एह
गिरि उद्धार रे ॥ सूक्ष्म उद्धार विचें थया, कहेतां
नावे पार रे ॥ ए ती० ॥ १६ ॥ प्रायें ए गिरि शाश्व
तो, ऐंशी योजनने मानें रे ॥ प्रथम आरकथी अनु
क्रमें, कहुं केवलज्ञानें रे ॥ ए ती० ॥ १७ ॥ सीतेर
शाठ पच्चास ते, बार योजन सात हाथ रे ॥ ठठे
आरे जाणीयें, एम नाखे जगनाथ रे ॥ ए ती० ॥

॥ १० ॥ शत्रुंजय महात्म विषे, कह्यो अधिकार वि
शेष रे ॥ ढाल पन्नरमी ए कही, मयाविजयें लवले
श रे ॥ ए ती० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सरवालो सवि टुंकनो, तारीज कहियें जेह ॥
साची सरधा आणीने, नमीयें जिनवर तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ तीरथनी आशातना, नवि करीयें ॥ ए देशी ॥

॥ ए तीरथने वंदीयें, त्रण कालें ॥ निज आत्म
शक्ति उजाले, मोहराय तो साहामुं न जाले, जाये
दुःखदंड ॥ ए तीरथने वंदीयें, त्रण कालें ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ एकशो पन्नर देहरां, जिहां ठाजे ॥ देह
रीयो ठरें बिराजे, उपर बावीश समाजे, कहुं प्रतिमा
जेह ॥ ए ती० ॥ २ ॥ आलीयें मालीयें जालीयें,
सवि लहीयें ॥ नव सहसने सात शें कहीयें, उपर
वली वेदज चहियें, प्रणमुं जिनराज ॥ ए ती० ॥ ३ ॥
बड़ें एकत्रीश धातुनी, जिन सरखी ॥ सिद्धचक्र एक
शो दश निरखी, काउसगीया बहोंतेर ते हरखी,
नमीयें निज काज ॥ ए ती० ॥ ४ ॥ मुनिमुझ ठत्री
शने, वली गणीयें ॥ एक साधवी काउसग नणी

यें, पगलां नव सहस ते शुणीयें, पंचाशी तेम ॥
 ॥ ए ती० ॥ ५ ॥ नाजि मरुदेवा मातजी, दश जा
 णो ॥ जुगलिक एक जोड वखाणो ॥ हस्तिवर आठ
 प्रमाणो, दिगपाल ते एक ॥ ए ती० ॥ ६ ॥ एक चो
 री नेम नाथजी, नवि परणे ॥ दोय लोक नालिने वर
 णे, पांमव पंच नमीयें चरणे, माता कुंता दोय ॥
 ॥ ए ती० ॥ ७ ॥ एक डुपदी एक सांढीयो, पुण्य पा
 पें ॥ शिव एक ते स्वस्तिक आपें, गणपति अन्न पूरणा
 आपे, अंगारशा एक ॥ ए ती० ॥ ८ ॥ यद्द मूरति
 तिहां शोल ठे, सुखकारी ॥ चक्केसरी आर्दे जुहारी,
 पंचवीश देवी उपगारी, हनुमान ते चार ॥ ए ती० ॥
 ॥ ९ ॥ एक वाघण शेर दंपती, तिहां नणीयें ॥ चा
 लीश उपर दश गणीयें, टांका आठ प्रचुजी न्हवणी
 यें, कुंम चउदज होय ॥ ए ती० ॥ १० ॥ उपर हेतें
 मारगें सवि जाणो ॥ वृद्ध त्रण शत त्रीश प्रमाणो, त्र
 ण्य वाव्य वली मन आणो, विसामा दश जोय ॥
 ॥ ए ती० ॥ ११ ॥ चंदन तलावडी साधुजी, घणा
 सीधा ॥ उलखा जोले पण लीधा, कइ घेटीनी पागें
 कीधा, नदी शेत्रुंजी एक ॥ ए ती० ॥ १२ ॥ कदंब
 गिरि हस्तीगिरि, वली जश्यें ॥ नाडवे चढी सिद्धवड

(११३)

रहियें, तिहां साहामी वात्सल गुन कहियें, लाहो ली
जें एम ॥ ए ती० ॥ १३ ॥ अंक तीरथ कलना कली,
नवि होइ ॥ प्रत्यह जे नजरें जोइ, अण जाण्युं रहुं
जे कोइ, वंदूं सवि आज ॥ ए ती० ॥ १४ ॥ ढाल
शोलमी अंक समुच्चय पूरी ॥ आदीजिन पाय हजू
री, डुरमतिने कीधी दूरी, मया विजयें एम ॥ ए० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीरथ गुण वरणव किया, मुऊ मतिने अनु
मार ॥ नाइचंद आग्रह्यकी, कीधो नव्य उपकार ॥
॥ १ ॥ द्वितीय ढाल पूरण करी, देवगति नाइचंद ॥
तस आग्रह पूरण कखो, अतिही परमानंद ॥ २ ॥

॥ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गाया गाया रे में, सिद्धगिरिना गुण गाया ॥ मुऊ
मन हरख सवाया रे ॥ में० ॥ सि० ॥ अनुजव दाता,
मुऊगुरु ग्याता, सौनाग्य विजय कवि राया ॥ तास
पसायें गिरि गुण गाया, आतम अनुजव पाया रे ॥
॥ में० ॥ १ ॥ श्रीविजय धरणींइ सूरिश्वर राज्यें, ए
अधिकार बनाया ॥ संवत उगणी पांत्रीशनी शा
लें, मास आषाढ कहाया रे ॥ में० ॥ २ ॥ एह रास
जे नणरो गुणरो, सुणतां अति सुखदाया ॥ श्रीसि

द्वाचल जात्रा केरुं, घर बेठां फल पाया रे ॥ में० ॥
 ॥ ३ ॥ अल्पमति वरणन किम होवे, गिरि गुण नंत
 कहाया ॥ सिद्ध अनंत नये जीउ केवल; परमानंद
 पद पाया रे ॥ में० ॥ ४ ॥ सौजाग्य प्रताप नयो मोहे
 पूरण, हीरविजय सुपसाया ॥ मयाविजय मनवंछित
 पाया, सिद्धिगिरि गुण गाया रे ॥ में० ॥ ५ ॥ इति
 श्रीतीर्थमाला गर्जित सिद्धाचल रासः समाप्तः ॥ तत्स
 माप्तौ समाप्तोयं द्वितीयोद्धासः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयोद्धासप्रारंभः ॥

॥ तन्मध्ये प्रथम ॥

॥ शास्त्ररहस्य प्रकाश बालावबोध गुर्जर जाषा
 मां अनेकांत स्याद्वाद रूप श्रीजैनशैली समजवा नि
 मित्त स्वपर हेतुयें लखीयें ठैयें ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसायर्थें, शास्त्र रहस्य प्रकाश ॥
 स्यादवाद हेतें नणी, रचना बालक जाष ॥ १ ॥ बा
 ल जीव समजे सुखें, स्यादवाद रस रूप ॥ नय ए
 कंत हठ नवि ग्रहे, पडै नही चम कूप ॥ २ ॥ ते
 माटें जाषा करुं, शास्त्र तणे अनुसार ॥ स्यादवाद
 जिनमत विना, पामे नहिं नवपार ॥ ३ ॥

॥ अत्र व्याख्या ॥ स्याद्वाद रूप इव्य गुणपर्याय नय
निक्षेप प्रमाणं तत्त्वज्ञेय संयुक्त श्रीवीतराग देव जाषि
त सिद्धांत रहस्य एतत्ते वस्तुगतं वस्तुनું लक्षण जड
चैतन्य निन्नानिन्न विवेचन करी समजावे जावित जे
एां आत्मा जाव्यो ठे. एवा नव्य जीवो अनादि क
र्मबंधनथी ठूटी अनंत सुखमय जन्ममरणादि नय
रहित एवुं जे मोक्षपद, ते प्रत्ये पामे, तेमां कांइ पण
संदेह नथी. इहां कांइ स्वपर लिंगनुं पण प्रमाण
नथी, केम के पन्नर जेदे सिद्ध थाय ठे. तेमां अन्यलिंगें
सिद्ध थवानो पण एक जेद ठे, माटे इव्यलिंगनुं कांइ
प्रयोजन नथी. इहां मोक्ष साधन करवामां तो जावलिंग
ज प्रमाण ठे. गमे ते लिंग धारण कखुं ठतां राग द्वेष
रहित समता सहित वीतराग जावे आत्माने जावतां
मोक्ष पामे, जे माटे श्री संबोधसित्तरीनी आदिमां क
खुं ठे, के ॥ सेअंबरो वा दिगंबरो वा, बोधो अहअन्नो
वा ॥ समजावे जावि अप्पा, लहइ मुस्कं न संदेहो ॥
॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ तथा वली सम्यक्त्व प्राप्ति
थया विना मिथ्यादृष्टि वासित जीवें जो श्रीजिनलिंग
मुनिवेश धारण कखो ठे, अने सत्तरजेदे संयम पाजे
ठे, बेहेतालीश दोष रहित आहारादि ग्रहण करे ठे, पं

ચમદાવ્રત પાલે છે, તો પણ તે અનંતો કાલ સંસાર
 બ્રમણ કરશે. એ વાત પણ એજ ગ્રંથમાં કહી છે ॥યતઃ॥
 વિરિયા સાવચાત્ર, કસાય હીણા મહવ્યધરાવી ॥
 સમદિષ્ઠિ વિદૂણા, કયાવિ મુક્તં ન પાવંતિ ॥ ૨ ॥
 દંસણ નછો નછો, દંસણ નછસ્સ નંહિ નિવાણં ॥ સિ
 ઘંતિ ચરણ રહિયા, દંસણ રહિયા ન સિઘંતિ ॥ ૨ ॥

॥ તેમજ બીજા પણ ઘણા શાસ્ત્ર સિદ્ધાંતમાં તથા
 ઉપદેશમાલામાં અજ્ઞાનીની જે ક્રિયા છે, તે સર્વ કાય
 ક્લેશમાં ગણી છે. પરંતુ નિર્જરામાં ગણી નથી, વલી જ્ઞા
 ની પુરુષની જે ક્રિયા છે, તે એક શ્વાસોહ્વાસ અથવા લ
 વમાત્રમાં પણ અત્યંત કઠિન કર્મને નિર્જરવાની હેતુ
 થાય છે. જે માટે ઉપાધ્યાય શ્રીયશોવિજયજીયેં સાડા
 ત્રણશો ગાથાના સ્તવનમાં કહ્યું છે, કે ॥ “કિરિયા લવ
 પણ જે જ્ઞાનીની, દૃષ્ટિ ચિરાદિક લાગે ॥ ઇતિ વચનાત્”
 ॥ પુનઃ શ્રીજગવતીસૂત્રેં “આયા સ્વલુ સામાશ્યં” એ
 વચનથી આત્મા તેહિજ સામાયિક છે, તથા શ્રીયશો
 વિજય ઉપાધ્યાયજીયેં સવાશો ગાથાના સ્તવનને વિ
 શે “જિહાં લગેં આતમ ડ્વ્યનું, લક્ષણ નવિ જાણું ॥
 તિહાં લગેં ગુણઘણું નહું, કેમ આવે તાણું ॥ આ
 તમ તત્ત્વ વિચારીયેં ॥ ” તથા યશવિલાસમાં પણ

“स्यादवाद पूरन नय जाणे, नयगर्जित जस वाचा ॥
गुनपर्याय इव्य जे बूजे, सोही जैन है साचा” तथा
श्रीसूयगडांग मध्ये ॥ “एगंते होइ मिच्छाउ” ए वचन
उपरथी जे एकांत नयनुं ग्रहण तेज मिथ्यात्व कहियें.

॥ ए रीतें अनेक शास्त्र सिद्धांतोने विषे आत्म
अनुभव विना जे जे क्रिया, ते सर्व आश्रव खाता
मां ठे. तेथी कांइ सकाम जिझारायें मोक्ष प्राप्ति नज
होय. तेमाटें हे नव्यजीवो ! आत्मोपयोग सहित सा
पेक्ष गुह व्यवहारमां वर्तवुं. जे माटे श्रीनयचक्रनी
टीकामां कह्युं ठे. तद्यथा ॥ “बाह्यक्रियाधर्मत्वं, धर्मकार
णस्य धर्मत्वेन कथनं ॥ इति वचनात् ॥” बाह्यक्रियायें
जे कांइ धर्म करवो, ते सर्व, धर्मनुं कारण ठे, अर्थात् तेने
कथन मात्रज धर्म कहियें. केम के कारण विना कार्यनी
उत्पत्ति न होय. जेम मृत्तिकाने विषे घट थवानी शक्ति
रही ठे, परंतु चीवर, दंम, चक्र, इत्यादि निमित्त का
रण मलवार्थी घटोत्पत्ति थाय ॥

॥ तथा श्रीसिद्धांतें पांच कारण कहां ठे ॥ गाथा ॥
काल सहावो नियइ, पुव्वकय पुरिस कारणे पंच ॥
समवाइय सम्मत्तो, एगंते होइ मिच्छाउ ॥ १ ॥

अर्थ:- काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत, पुरुषाकार,

એ પાંચ સમવાય કારણ જે માને, તે સમ્યક્તિ જાણવો.
 એ પાંચે મલેજ મુક્તિ હોય. તથા કર્તા, ક્રિયાદિ ષટ્
 કારક કહ્યાં છે. એ સર્વ નિમિત્ત કારણ વ્યવહાર રૂપ છે.

॥ વલી આવશ્યક નિર્યુક્તિ મધ્યે વ્યવહારને બલિ
 ષ્ટ કહ્યો છે ॥ ઠગમઠ સમયંચઘા, વિવહાર નયાણુ
 સારણી સઘા. ॥ તં જહા સમાયરંજો, સિઘઈ સઘોવિ
 સુઘમણો ॥ ૧ ॥ સંવિવહારોવિ બલી, જિણસુઘંપિ
 ગિહિયં સુવિવહીએ ॥ કોવડ ન સઘાણુ, વંદશ્ય કયાં
 ઠગમઠ ॥ ૨ ॥

અર્થ:- જિહાં સુધી ઠગમઠસ્યાવસ્થા છે, તિહાં સુધી
 સર્વ વ્યવહારનય આશ્રી વર્તવું છે, તેમજ શુદ્ધ વ્યવહાર
 વિશુદ્ધ મન સમાચરતે થકે સિદ્ધગતિ પ્રત્યે પામે.

॥ તથા જે મુનિ સાપેક્ષ શુદ્ધ વ્યવહારેં બલિષ્ટ છે,
 તે મુનિનો આણેલો આહાર કેવલી જગવાન્ પણ જું
 જે. વલી કોણેક શિષ્યને કેવલજ્ઞાન ડપનું છે, અને
 ગુરુ હજી ઠગમઠ પણે છે, તો પણ તે શિષ્યેં ગુરુને
 વાંદવાનો વ્યવહાર કહ્યો છે. પરંતુ ગુરુને જાણવામાં
 આવે, તેવારેં કેવલીની આશાતનાને લીધે વંદાવે નહીં.

॥ માટે હે જઘ્યો! નિશ્ચયદૃષ્ટિ હૃદયમાં ધારણ કરીને
 સુવ્યવહારેં વર્તવું, તે મહાશ્રેય છે. કારણ કે

व्यवहारनो उद्भेद थावाथी तीर्थनुं, गुरु शिष्यनुं, तथा अरिर्हतादिक दश गुणीनुं जे विनय वैयावृत्त्यादि करवुं, ते सर्वनो उद्भेद थाय. अने श्रीजिनशासननी शैली तो अनेकांत स्याद्वाद निश्चय व्यवहार उत्सर्ग अपवाद मार्ग समस्त नय निक्षेप प्रमाण युक्त ठे तेने अंगीकार करतां थकां पूर्वे अनंता जीव मोक्ष पाम्या ठे, अने अनागत काले अनंता मोक्ष पामरो ॥ इत्यर्थः ॥

॥ इहां व्यवहारने बलिष्ठ कह्यो. ते पांच प्रकारनुं मिथ्यात्व, गयां थकां जेने सम्यक्त्व प्राप्ति थई होय, तेनो व्यवहार समजवो. पण ज्यां सुधी सम्यक्त्व पाम्या नथी त्यां सुधी व्यवहारमां मोक्ष पद नथी.

॥ ते पांच मिथ्यात्वनां नाम कहे ठे:-एक अजिग्रहिक, बीजुं अनजिग्रहिक, त्रीजुं अजिनिवेशिक, चोथुं संशयिक अने पांचमुं अनाजोगिक ए पांच मिथ्यात्व जाणवां. तेनुं किंचित् स्वरूप लखुं बुं.

१ तिहां प्रथम अजिग्रहिक मिथ्यात्व कहे ठे. जे हठनुं ग्रहण कीधुं, ते पकडी टेक मूकाय नही. जेम हालर नामें पट्टी थाय ठे, तेनी माता जेवारें पोताना बच्चाने उडवा शीखवे, तेवारें तेना पगमां एक लाकडानी कटकी ग्रहण करावे, पढी ते

लाकड़ाने जीवतां सुधी मूके नही. कारण के ते पढ़ी ना मनमां एवी च्रांति पडी जाय ठे. के आ लाकड़ा ने आधारेंज हुं उडी शकुं बुं. अने एनेज आधारें र ही शकुं बुं. एवी खोटी शंकाथी उलटी लाकड़ानी उपाधि ग्रहण करी लीये ठे. तथा केटलाएक जीवो ने तो पूर्वं आपणा बडीलोयें जे धर्म अंगीकार कखो तेज प्रमाण ठे. एवी रीतें परंपरायें कुलाचारनेज धर्म मानी लेवानी च्रांतिनी टेव होय ठे, पण ते गुहागुहानो विचार कांइ समजे नही, जेम कोइकने घरें विवाह हतो ते वखत तेना घर आगल बिलाडीनां बच्चां आडां अवलां फरतां हतां, तेने जोइने विवाहना का ममां ए अपशुकन अश्रेयस्करी जाणी ज्यां सुधी विवाहनुं कार्य हतुं, तिहां सुधी तेने सुंडला तन्ने ढांकी राख्यां. पढी तेनी बे चार पहेढिमां एवोज चाल पडी गयो. तेथी परंपरायें तेना गोत्रीयानो पण एवोज चाल थयो, के जेवारें विवाहादिक आवे, तेवारें जो बिलाडीनां बच्चां पोताना घरमां न होय, तो पाडोसीने घेरथी लइ आवीने पण सुंडला नीचे राखीने पढी विवाहनुं कार्य करे. एवी रीतें इहां पण जे कुगुरु, कुदेव अने कुधर्म ग्रहण कीधेलो ते हठ मूके नही.

એવી રીતનું હરૂપ અનિગ્રહિક મિથ્યાત્વ છે. તેને
 આ પંચમકાલમાં જરત ક્ષેત્રને વિષે કેવલી વિના ઘ
 ણા બાલ જીવો ગ્રહણ કરી રહેલા છે. જેમાટે શ્રીયશો
 વિજયજી ઉપાધ્યાયે સવાશો ગાથાના સ્તવનમાં કહ્યું
 છે, જે “કુગુરુની વાસના પાસમાં, હરણ પરેં જે પડ્યા
 લોક રે” इत्यादि આ વર્તમાન કાલેં પ્રાયેં ઘણા બિચા
 રા બાલજીવો ધર્મના રાગી તો હોય, પરંતુ શ્રીજિનવ
 ચન ઉત્સર્ગ, અપવાદ, નિશ્ચય, વ્યવહાર તથા સાધુ
 શ્રાવક સંબંધી મૂલગુણ ઉત્તર ગુણ રૂપ જે ક્રિયા, તે
 ના સર્વથા અજાણ, આત્મબોધરહિત, ધામ ધૂમ વા
 હ્યામંબરના રાગી, તેવા જીવ ગજી પરંપરાનાં સામાચા
 રી તેનેજ મોઢું માની રહ્યા છે. તેવા જીવોને ઘણા
 મહારા જેવા જિંગધારી તથા મુનિયો પોતાના સંઘાડા
 ના તથા માન અને યશઃ કીર્તિના લોની થકા સૂ
 ત્ર સિદ્ધાંતના પાઠ જણાવે છે, પણ તે નિશ્ચય જ્ઞાન
 આત્મબોધથી વિમુક્ત છે. તેવા જનોને ઉપાધ્યાય
 શ્રીયશોવિજયજીયેં સાડાત્રણશો ગાથાના સ્તવનમાં
 જિનશાસનના શત્રુજૂત કહી વરવાળ્યા છે. “જિમ જિમ
 બહુશ્રુત બહુજન સમ્મત, બહુ શિષ્યેં પરવરિયો ॥ તિ
 મ તિમ જિનશાસનનો વયરી, જો નવિ નિશ્ચેં દરિયો

॥ १ ॥ "माटे एवा लिंगधारीना मुखयी नाना प्रका
 रना विकल्परूप एकांत मार्ग क्रिया कलाप उपदेश
 सांजली हठ वाद ग्रहण करी बेसे ठे, केम के जेने
 जेवा गुरु मजे,तेने तेवोज बोध थाय ठे. तेवा जनो,
 हमणां केवल एकांत बाह्य क्रिया,लोचादिक कायक्वेश
 तप, योग वहन करे, तेने मुनि संज्ञा ठे. अने उप
 धान वहेवां,माला पहेरवी, उजयकाल प्रतिक्रमणादि
 क्रिया करे,तेने श्रावक संज्ञा ठे. माटे एवी रीतमां व
 र्त्तता देखे, तेने श्रीजिन मार्गमां परिपूर्ण सम्यक्त्व
 धारी गणे ठे अने ते विना बीजा साधु तथा श्राव
 क ते सर्व इव्यथकी क्रियामां शिथिल ठे. एवुं कही
 ने तेवा पुरुषोना ते प्रतिवादीयो अवर्णवाद बोले,
 निंदा गर्हा करे, श्रावकजनने उपदेश करवा माटे
 व्याख्यान पण तेवुंज वांचे,अने ते श्रावकोने पोताने
 मानवा रूप समकेत धारण करावे. एवी रीतें पोतें स
 मकितधारी, तरण तारण सुगुरु नाम धरावी, पोता
 नो पद्द तथा संघाडो संप्रदाय वधारवानी लालचें जो
 ला लोकोने एकांत मिथ्या उपदेश रूप जालमां पाडे
 ठे तथा एकांत व्यवहारनय पद्द एवो दृढ करावे के ते
 नइक जीवोने जो कोइ सारा, सद्ज्ञानी, निःस्पृही,

આત્મોપયોગી એવા મુનિ આવીને હિતોપદેશ રૂપ શિ
 રામણ આપે, તો પણ તે મુનિનું વચન માને નહીં, અ
 ને તેવાનું વિનય વેચાવણ પણ અંગીકાર કરે નહીં,
 કેમ કે તે જોલા જીવો એવું સમજે કે અમે સુગુરુ પા
 મેંથી સમકિત ધારણ કહ્યું છે. તેને અતિચાર રૂપ દૂષ
 ણ આવશે, પણ તે વિચારા જોલા જીવો સમ્યક્ત્વ પ
 દાર્થ વસ્તુ, વસ્તુ સ્વરૂપે શું છે? એવી સમદૃષ્ટિ સમજાવ
 ને જાણતા નથી માટે જેમ વૃદ્ધના મૂલ વિના શાસ્ત્રા તે
 ક્યાંથી હોય? તેમ એવા જીવોને નિશ્ચય સમકિત પણ
 ક્યાંથી જ હોય? અને નિશ્ચય વિના અવહાર સમ્યક્ત્વની
 તો જનના જાણવી. એટલે હોય પણ અને નહીં પણ
 હોય. તેતો જ્ઞાનિગમ્ય છે. એવી રીતે જૂઠ સાચની પ
 રીક્ષા કરવાની અસમર્થતાને લીધે વિચારા જોલાં લો
 કો ઠગાય છે. તે ઉપર ઉપાધ્યાય શ્રીયશોવિજયજીયે
 શ્રીપાલના રાસમાં એક દૃષ્ટાંત કહ્યો છે. તે ફ્હાં લચ્વી
 યે થૈયે. કોઈ એક નગરની બાહેર એક યોગી અને ચેલો
 રહે છે. તે ચેલાયે શહેરમાં નિક્ષા લેવા આવતાં કોઈ
 શેઠના ઢોકરાના હાથમાં સોનાનાં કડાં પહેરેલાં દે
 સીને ગુરુને કહ્યું, કે મને પણ સોનાનાં કડાં પહેરાવો, તે
 ને ગુરુયે કહ્યું જે આપણે જોગી લોકોને સોનાનાં ક

ઢાં પહેરવાં પણ ન જોઈયેં અને મલે પણ ક્યાંથી? તે
 સાંનલી ચેલાયેં ગુરુથી રીષ કરી જૂદો થઈને નિહા
 વૃત્તિ કરવા માંમી. ઘણા દિવસ નિહા કરતાં દરરોજ
 થોડો વધારો કરી કેટલાએક વર્ષે ઘણે કષ્ટે પાંચશો રૂ
 પૈયા નગદ એકઠા કરી કોઈ, સોનારની પાસેં કડાં ઘ
 ડાવ્યાં. જેવારેં તડ્યાર થયાં તેવારેં સોનીયેં યોગીને કહ્યું
 કે મહારી સાર્યેં ગામનાં લોકો ઘણીજ ઈર્ષ્યા રાખે છે,
 મહારા દ્રેષી છે, માટે તમે કડાની કિમ્મત કરાવવા
 જાઉં. તેવારેં કોઈ પાસેં મહારું નામ લેશો નહીં જો
 નામ લેશો તો સોનાને વદલે પીતલના કડાં કહેશે.
 એવો મત દૃઢ કરાવીને ચેલાને કડાં આપ્યાં, ચેલે
 પણ ગામના બધા સરાફોની પાસેં કિંમત કરાવી, તારેં
 બધાયેં કહ્યુંકે સોનું તો શ્રીકાર છે, તારે ચેલાયેં વિચા
 હું જે આ સોનું ખરું છે અને આ સોની પણ સારું માણ
 સ છે. એવો નિશ્ચય કરી કડાં લાવી સોનીને ઝજ
 લાવવા દીધાં. સોનીયેં પણ એવાંજ બીજાં પીતલ
 નાં કડાં તૈયાર કરી રાખેલાં હતાં તે અજુવાલતી વ
 સ્વર્તેં બદલાવીને ચેલાના હાથમાં આપ્યાં અને કહ્યું
 જે ગામના સરાફો સર્વ મહારા ઉપર દ્રેષ રાખે છે, એ
 પરીહા જોવી હોય તો હવે તું બધા સરાફો પાસેં મ

हारुं नाम लइने पूढजे, तो बधाय पीतलनां कहेसो. चे लायें पण तेमज कखुं, तो बधाय कहेवा लागा के आ कडां पीतलनां ठे. गइ कालें देखेवाच्यां ते नथी. अरे मूर्ख ! तुं ठगाइ गयो !! एवां लोकोनां सत्य वचन सांजली ने ते जोगी कहेवा लाग्यो के तमें सर्व सत्यवादी सो नीना द्वेषी ठो. ए में तमारुं प्रत्यक्ष पारखुं दीतुं, ए दृष्टांत विचारीने जे कोइ परीक्षक सम्यक्त्वधारी साधु श्रावक हसो, ते कदापि हठ विवाद करसो नही. ए वात विस्तारें श्रीहरिजइसूरिकृत प्रथम पंचाशकनी वृत्तिमां दे. ते जोजो ॥ इति प्रथम आनिग्रहिक मिथ्यात्वस्वरूपम् ॥

२ हवे बीजा अननिग्रहिक मिथ्यात्वनुं स्वरूप कहे ठे. एमां तो कांइ कदाग्रह न होय पण “सर्वेदेवा सर्वे गुरु” ए वचन थकी सर्वे देव, कुदेव, सुगुरु, कुगुरु तथा धर्म अधर्म, ए सद्गुने सरखा तुल्य गणे ठे. माटे एतो निविड महा मिथ्यात्व जाणवुं. कारण के ए ने तो शत्रु अने मित्र, सर्प अने फूलमाला, चिंतामणि रत्न अने पाषाण, चंद्र अने सूर्य, दिवस अने रात्रि, दयाधर्म अने यागहोमधर्म, नरक अने स्वर्ग, सिद्ध अने संसार, ए सर्व तुल्य मानवामां आव्या, माटे एथी वली बीजो वधारे मूर्ख मिथ्यात्वी ते कोण हो

य? अर्थात् कोइ नही होय. एने तो अनवस्थित जाव ठे, एटले कोइ स्थानके तेनुं स्थिरीनूतचित्त नथी. एवा जीवोने सम्यक्त्व प्राप्ति अति दुर्लभ ठे. ए अधिकार सिंदूर प्रकरणनी टीकाथी जाणजो. ए बीजुं अनिग्रहि क मिथ्यात्वनुं स्वरूप जाणवुं ॥

३ हवे त्रीज्ञा आजिनिवेशिक मिथ्यात्वनुं स्वरूप क हे ठे:— विपर्यास पणो उपयोग रहित थकां कोइ उप देश निमित्तें सजा सम्ह कोइ जिनवचन सिद्धांत वि रुद्ध वचन बोलाइ गयुं, पढी ते वचन सर्वथा असत्य ठे, एवुं पोतानी समजमां आव्युं, तो पण पोताना मुख थी निकलेलुं वचन हठवाद मूके नही ते एम विचारे के महारा मुखमांथी निकलेलुं वचन खोटुं थाय तो लोकमां महारी प्रतिष्ठा घटी जाय? तेने लीधे नाना प्रकारना विकल्प कुंयुक्तियो करीने पण पोतानुं मत स्था पन करे, एवो मिथ्यात्वी जीव घणा काल संसारमां परि च्रमण करे ए अधिकार श्रीगणंगजीने सातमे ठाणे त था उत्तराध्ययने सूत्रें जमालि, गोष्ठामाहिल प्रमुख नि न्हवने अधिकारें ठे. ए त्रीजुं आजिनिवेशिक मिथ्यात्व ॥

॥ हवे चोथुं सांशयिक मिथ्यात्व कहे ठे:—जे जिनव चनमां शंका कंखा करे, जेम के जगवंतें एक व्यवहार

રાશિનિગોદ, બીજો અવ્યવહારરાશિ નિગોદ, એવા બે પ્રકારે નિગોદનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે એકેક નિગોદમાં અનંતા જીવ કહ્યા છે, જેમ કે ॥ગાથા॥ગોલાઃ અસંખિક્ષ્ણા, સંખં ગોક્ષેય દ્વોઽ નિગોઅંમિ ॥ ઇક્ષિક્ષ નિગોયમ્મિ, અણં ત જીવા મુણેયવા ॥૧॥ ઇત્યાદિ શ્રીજિનવચન છે, તેમાં શંકા કરે કે આ વાત કેમ, હશે કે નહીં ! તથા મિથ્યા ત્વીનાં કષ્ટ ચમત્કાર દેખી તેની ઉપર અનિલાષા કરે કે આ ધર્મ પણ સારો શ્રેયસ્કર છે ! તથા વલી એવું વિચારે કે જૈન ધર્મ તો સારો છે પરંતુ સાધુને કપડાં ધોવાં સ્નાન કરવું વર્જિત છે માટે મલમલીન દેખાય છે ! એવી શંકા કરે. નરક, સ્વર્ગ, સિદ્ધ, એ સર્વ હશે, કિંવા નહીં હશે ! એવી શંકા કરે, તથા હરિકેશી મુનિ અને મેતાર્ય મુનિ ચંદ્રાલ કુલમાં ઉપના છે, માટે તેની ઉપર ડુંગળા કરે. એનો વિશેષ અધિકાર શ્રીઉત્તરાધ્યયન તથા નરદે સરવૃત્તિથી જાણવો. એ ચોથું સાંશયિક મિથ્યાત્વ કહ્યું ॥

પાંચમું અનાજોગિક મિથ્યાત્વ તે પ્રાયે સંમૂર્ધિ મની પેરેં શૂન્ય મને ક્રિયા કરે તથા એક બીજાની દેખાદેખીયેં ક્રિયા કરે, પણ તેનો પરમાર્થ સમજે નહીં. જેમ બીજા ઉઠ બેસ કરે, તેમ પોતેં પણ કરે, પરંતુ તે ક્રિયાનો હેતુ સમજે નહીં, જે ડું આ ક્રિયા કરું

બું, તે કેવા પ્રકારના ફલની પ્રાપ્તિ માટે કરું બું? એવી વાતને દેશથી એટલે લગાર માત્ર પણ જાણતો નથી, માત્ર જે રીતેં ગુરુયેં ક્રિયા વિધિ બતાવ્યો છે, તેહિજ વિધિ હવગ્રાહીપણે વ્યવહાર ધર્મ વ્યાપાર કરે, પણ તેમાં ઊંચ, નીચ, મધ્યમ, કનિષ્ઠ, લાજનારક કિંવા હાનિકારક રીતનું જે વ્યાપારમાં હિસાબ નામું રાખું, તે કાંઈ સમજે નહિં. એતો કેવલ શૂન્ય મનથી ક્રિયા વ્યવહાર કરી જાણે છે. તો તેવા વ્યાપારમાં પ્રાર્યેં લાજવૃદ્ધિ તો નહીજ થાય. એની ઊપર ઘણા સ્થલેં શાસ્ત્રોમાં લોહ વાણીયાનો દૃષ્ટાંત છે. પણ સ્વપર હેતુ જાણી એકત્વજ્ઞાવેં આત્મોપયોગ યુક્ત સંવરજ્ઞાવેં વર્તિને શુદ્ધ ક્રિયા કરવાથી જીવ અનંતકર્મ નિર્જરીને સ્વર્ગ તથા અપવર્ગ એટલે મોક્ષનાં સુખ પામે છે. તે કાંઈ સમજતો નથી. એ અનાજોગિક મિથ્યાત્વનું સ્વરૂપ કહ્યું

॥ એ પાંચ મિથ્યાત્વના વર્ગેં જીવ અનાદિ કાલનો ચારગતિ, ચોરાશી લાખ જીવાયોનિમાં અનંતા ગર્ના વાસનાં દુઃખ સહન કરે છે. તેમાં અનિષ્ઠનો સંયોગ તથા ઇષ્ટ જે અત્યંત પ્રિય હોય, તેનો વિયોગ થાય, તેને લીધે જીવને આર્ત રૌંડ ધ્યાન તથા હર્ષ શોક અત્યંત આક્રંદ સ્વરેં રુદન કરવું, શિર કૂટવું, હૃદય કૂ

ટલું, મન્ત્રકના કેશ ત્રોડવા.ઇત્યાદિ અનૈક પ્રકારેં કરી ફરી નવાં કર્મ બંધાતાં જાય છે. માટે એ મિથ્યાત્વ જે છે, તેજ સર્વ કર્મ બંધન કરવાનું મૂલ છે. એ અધિકાર શ્રીદશવૈકાલિક સૂત્રેં જિહાં ઇન્દ્રિયા, પોશ્યા, રસેં દિયા ઇત્યાદિ આઠ સ્વાણ ત્રસ જીવને ઉત્પન્ન થવાની કહી છે. ત્યાંથી તથા શ્રીપન્નવણા સૂત્રમાં સંમૂર્ઢિમ મનુષ્યને ઉપજવાનાં મલ મૂત્રાદિ ચૌદ સ્થાન કહ્યાં છે. ત્યાંથી તથા ગાય જૈંપનાં મલ મૂત્રમાં બેં ઇન્દ્રિયાદિક જીવને ઉપજવાનું કહ્યું છે ત્યાંથી તથા શ્રીતંડુલી વૈયાલી માં ગર્જાવાસના દુઃખ અને ગર્જની ઉત્પત્તિ સંબંધિવાન કહી છે, ત્યાંથી જાણીને અનાદિ મિથ્યાત્વ જે જીવને લાગેલું છે, તેનો ત્યાગ કરી શ્રીવીતરાગ નાષિત સમ્યક્ રત્નની પ્રાપ્તિ પામવાને અર્થેં પ્રથમ તો એ જીવ યથા પ્રવૃત્તિ આદિક ત્રણ કરણ કરે, તેનું સ્વરૂપ બાલ જીવોની સમજ માટે ઇહાં લખીયેં છે.

॥ પહેલું યથાપ્રવૃત્તિ કરણ, બીજું અપૂર્વ કરણ, અને ત્રીજું અનિવૃત્તિ કરણ, એ ત્રણ કરણ માંહેલા પ્રથમ યથાપ્રવૃત્તિકરણનું સ્વરૂપ લખીયેં છે.

॥ એક આયુઃકર્મ વર્જીને બાકી સાત કર્મ માંહેલા એક જ્ઞાનાવરણીય, બીજું દર્શનાવરણીય, ત્રીજું વેદ

નીચ અને ચોથું અંતરાય, એ ચાર કર્મની ઉત્કૃષ્ટી સ્થિતિ પ્રત્યેકે ત્રીશ ત્રીશ કોડાકોડી સાગરોપમ પ્રમાણ છે. અને નામકર્મ તથા ગોત્રકર્મની પ્રત્યેકે વીશ કોડી સાગરોપમ પ્રમાણ ઉત્કૃષ્ટી સ્થિતિ છે. તથા મોહનીય કર્મની સિત્તેર કોડાકોડી સાગરોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે. સર્વ સાતે કર્મની એક કોડાકોડી સાગરોપમ પલ્લોપમને અસંખ્યાતમે જાગેં ઉઠી એટલી સ્થિતિ જેવારેં પ્રત્યેકે એકેકા કર્મની શેષ રહે અને બાકી સર્વ સ્વપાવી નાસ્તે, તે જીવ પ્રથમ યથાપ્રવૃત્તિકરણેં આવ્યો કહીયેં. હ્રાં એવો વૈરાગ્ય જાવ આવે, પરંતુ સમ કિત રહિત છે એ પ્રથમ કરણ, સર્વ જીવ અનંતી વાર કરે, અજવ્ય પણ કરે, પણ જેમ કોશ્ક પુરુષ મહોટો સમુદ્ર તરી સમુદ્રના કાંઠા નજીક આવી ફરી પાણીના કદ્દોલમાં તણાડને સમુદ્રની વચમાં જતો રહે, તેમ પણ અશુભાધ્યવસાયના યોગેં હ્રાંથી પડે, તો પાઠો પૂર્વજા જાવને પામે. એવી રીતેં અનંતી વાર એ કરણના જાવપ્રત્યેં પામે. એ કરણેં અંતર મૂહૂર્ત કાલમાન રહીને જો ચડતા પરિણામને યોગેં ચડે, તો અપૂર્વ કરણેં પણ આવે ॥ ઇતિ પ્રથમ કરણ ॥

॥ હવે ત્રીજું અપૂર્વકરણ કહે છે. જે જાવ,

जीवने आ संसारमां रह्यां थकां पूर्वे कोइ वारें पण आव्यो नथी तेवो जाव आवे, तेने अपूर्वकरण कहियें. ए करणें आवतां अनंती पावडीयो चडवी थाय, ते विस्तारें कम्मपयडीनी टीकाथी जोवुं. हवे प्रथम करणें साते कर्मनी एकेकी कोडाकोडी सागरोपम पव्योपमने असंख्यातमे जागें न्यून स्थिति रही हती, तेमांथी एक सुहूर्त जेटली खपावे, तेवारें अपूर्व जाव वीर्योद्भास थाय. ते अपूर्व जाव रूप मोघर लइने अनादिनी राग द्वेषनी ग्रंथि जेदन करे, तेवारें ते जीव, त्रीजुं अनिवृत्ति करण करे, ते कहे ठे.

त्रीजा अनिवृत्ति करणने विषे अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चोकडी तथा पांचमी मिथ्यात्व मोहनीय, ए पांच प्रकृति अंतर सुहूर्त मात्र उपशमावे, तेथी उपशम सम्यक्त्व पामे. पढी ते उपशम समकितमां शुभ परिणामें रह्यो थको मिथ्यात्व मोहनीयनां दलियाने त्रण विजागें करी त्रण पुंज करे, तेमां एक शुद्धपुंज, बीजो अशुद्धपुंज अने त्रीजो शुद्धाशुद्ध पुंज, एवां त्रण ढगला करे, तेमां उपशम समकेतने अंतें जो शुद्धपुंजनो उदय थाय, तो क्षयोपशम समकेत पामे, अने जो अर्धविशुद्ध पुं

જનો ઉદય થાય, તો ત્રીજે મિશ્રગુણગણે આવે, તથા અશુદ્ધપુંજનો ઉદય થાય, તો મિથ્યાત્વ ગુણગણે આવે. એ ત્રણ પુંજમાં જે શુદ્ધપુંજ તે સમ્યક્ત્વ મોહની અને જે અર્ધ શુદ્ધપુંજ તે મિશ્રમોહની તથા જે અશુદ્ધ પુંજ તે મિથ્યાત્વ મોહની જાણવી. ઇહાં ત્રણ કરણ આશ્રયી સિદ્ધાંતની ગાથા લખાઈ છે ॥ યદુક્તં ॥ જા ગંતિતા પદમં, ગતિહિતં જવે બીતં ॥ અનિઅટ્ટી કરણં પુણ, સમ્મત્ત પુસ્કહે જીવે ॥ ૧ ॥

હવે ક્લયોપશમ સમકેતના ઘણા જેદ છે. જેમ લુહારની સાણસી ક્લણ વાર અગ્નિમાં અને ક્લણ વાર પાણીમાં હોય, તેમ ક્લયોપશમ સમકેતી જીવ પણ ક્લણે ક્લણે જૂદી જૂદી જ્ઞાનાદિ દશામાં પ્રવર્તે, માટે એના વિચિત્ર જેદ છે. તથા જ્ઞાનાવરણીય, દર્શનાવરણીય, મોહનીય અને અંતરાય, એ ચાર કર્મના ક્લયોપશમથી અને દર્શનમોહનીયના ક્લયોપશમથી જીવ, સમકેત પામે છે. તે સમકેત બે પ્રકારે પામે છે. તેમાં એક ગુરુ ઉપદેશ વિના જે સમકેત પામે, તે નિઃસર્ગી સમકેત જાણવું. અને ગુર્વાદિકના ઉપદેશથી પામે, તે બીજું ઉપદેશ સમકિત જાણવું, તથા એક કારક, બીજું રોચક અને ત્રીજું દીપક, એ ત્રણ પ્રકારે પણ

समकेत कह्युं ठे. तेमां जेवीरीतें सिद्धांतमां जाव कहा
 ठे, ते प्रमाणें वर्त्ते, क्रिया पात्रे, तेने कारक सम
 केत कह्यीं. तथा जीवादि पदार्थने याथातथ्य
 जाणीने निरपराध निरपेक्ष पणे संकल्पीने त्रसादिक
 जीवने हणे नही, ते जीव, चोथे अथवा पांचमे गुण
 ठाणे होय, ते बीजुं रोचक समकेत जाणवुं. तथा जे
 जीव पोतें मिथ्यादृष्टिको पर जीवने जीवाजीवा
 दि पदार्थनुं स्वरूप श्रीसिद्धांतने अनुसारें समजावी
 ने समकेत गुण पमाडे. ए तेनाथी प्रतिबोध पामेजा
 जीवो मोहें पण जाय, परंतु ते दीपक समकेतनो
 धरनार जीव, पोतें तो जो उत्सूत्र प्ररूपणा न करे
 तो उत्कृष्टथी नवग्रैवेयक पर्यंत जाय ॥ उक्तं च ॥
 जइलिंग मिहदिछी, जेविजे जाव जंति मुक्तोसं ॥
 पयमवि असदहंतो, सुत्तवं मिहदिछीउ ॥ १ ॥ ए अ
 धिकार, श्रीनगवतीसूत्रें प्रथम शतकना बीजा उद्दे
 शामां कह्यो ठे ॥ इति ह्योपशम सम्यक्त्वाधिकारः ॥

॥ हवे ह्यायिक सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे ठे:-अनं
 तानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तथा मिथ्या
 त्वमोहनी, मिश्रमोहनी, अने समकेतमोहनी, ए
 सात प्रकृति ह्य करीने द्वेषक श्रेणी मांमे, तेवारें

ह्याधिक समकेत पामे. कदापि कोइ जीवें प्रथम को इ गतिनुं आयु बांध्युं होय, ने पढी सांत प्रकृति ख पावे, तेने खंम श्रेणी ह्याधिक सम्यक्त्व कहियें.

एम उपशम सम्यक्त्व तो ए सात प्रकृति उपश मावे, तेने कहियें. अने जे पूर्वे कही आब्या मुजब सम्यक्त्व मोहनी रूप शुद्ध पुंजनो उदय थाय, ते ह्योपशम समकेत कहेवाय. वली जे जीव, सात प्र कृति खपावे, ते जीवने ह्याधिक समकेत कहेवाय.

तथा सास्वादन समकेत ते जेम कोइ पुरुष खीर खांमनुं जोजन करी तुरत वमन करे, तेने कांश्क स्वाद रही जाय, तेम इहां पण जीव उपशम समके तथी पडे, ते बीजा सास्वादन गुणाठाणे आवे, तेने सास्वादन समकेत कहियें. एनुं जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टुं ठ आवलिका प्रमाण काल मान ठे.

तथा वेदक समकेत ते जिहां समकेत मोहनी ह्य करतां करतां ठेछा एक समय मात्र जेटलां दली यां ह्य करवानां शेष रहे, तेने वेदक समकेत एक समय प्रमाण कहियें. केम के, तेज समयमां शेष द लीयां खपावीने बीजे समयें ह्याधिक समकेत पामशे.

हवे उपशमादिक समकेतने रहेवानी स्थितिनुं का

ल प्रमाण कहे ठे. तिहां प्रथम उपशम समकेतनो का
ल अंतर मुहूर्त प्रमाण ठे. सास्वादननो व आवलिका,
वेदकनो एक समय, क्षयोपशमनो ठाशठ सागरोपम,
अने क्षायिक समकेतनो काल, तेत्रीश सागरोपमनो ठे.

हवे एक जीवने संसारमां परित्रमण करतां कयुं
समकेत केटली वार आवे ? ते कहे ठे. एक उपशम,
बीजुं सास्वादन, ए बे समकेत उत्कृष्टथी पांच वार
आवे. अने क्षायिक तथा वेदक ए बे एकज वार
आवे, तथा क्षयोपशम असंख्याती वार आवे.

हवे समकेत आववानो विरह काल कहे ठे. एक
उपशम, बीजुं सास्वादन, अने बीजुं क्षयोपशम, ए
त्रणनो विरहकाल उत्कृष्टथी अर्ध पुजल परावर्त होय.
अने जघन्यथी अंतर मुहूर्त होय. तथा क्षायिक अने
वेदक ए बे सम्यकत्व तो जीवने एक वार आव्या, ते
पाठा जाय नही माटे एनो विरहकाल नथी.

हवे चौद गुणछाणानां मात्र नामज लखीयें ठेयें.
१ मिथ्यादृष्टि, २ सास्वादन सम्यग्दृष्टि, ३ मिश्रदृष्टि,
४ अविरति सम्यग्दृष्टि, ५ देशविरति, ६ प्रमत्त, ७
अप्रमत्त, ८ निवृत्ति, ९ अनिवृत्ति, १० सूक्ष्म संपरा
य, ११ उपशान्त मोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगी

(१३५)

केवली, १४ अयोगी केवली॥ इति गुणस्थानकनामानि
हवे चौद गुणस्थानकनुं कालमान कहे ठे. मि
थ्यात्व गुणस्थानक, अजव्यने अनादि अनंत अने
जव्यने अनादि सांत तथा सादि सांत पण होय, त
था पाचमुं, षष्ठुं, सातमुं, अने तेरमुं, ए चार गुणस्था
नकनुं कालमान देजें ऊणी एक पूर्वकोटी वर्षनुं जाण
वुं. तथा चोथानुं साधिक तेत्रीश सागरोपमनुं जाण
वुं, तथा बीजा सास्वादननुं ठ आवलि प्रमाण अने
चौदमानुं पांच ह्रस्व अक्षर उच्चार प्रमाण कालमान
जाणवुं, तथा शेष ठ गुणछाणानुं अंतरमुदूर्त काल
मान जाणवुं. ए उत्कृष्ट कालमान कवुं ॥

इति श्रीमद् पंक्ति प्रवर पन्यास गणी श्रीसौनाग्य
विजयजी महाराज तत् शिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविज
यजी महाराज तत् शिष्य मुनि मयाविजयेन विरचि
ते श्रीशास्त्ररहस्यप्रकाशे प्रथम वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय वर्ग प्रारंभः ॥

ए वर्गमां बूटक बूटक सिद्धांत शास्त्रना बोल कहीशुं.

१ जे यति वेषधारी श्रीजिनप्रतिमा नरावे, तथा
नविन जिनमंदिर करावे, प्रतिष्ठा स्थापन पोतें पोता
नुं इव्य खरचीने करावे, ते जिनबिंब पूजवा वांदवा

યોગ્ય નહીં. એ અધિકાર, શ્રીમહાનિશીથ સૂત્રમાં છે.

૧ શ્રીતીર્થકરની પ્રતિમા અન્યદર્શનીયે ગ્રહણ કરી હોય, તેને વાંદવી નહીં. એ વાત, ઉપાસકદશાંગમાં છે.

૨ સાધર્મિક શ્રાવકને જમાડવા, સાહામી વાત્સલ્ય કરવું, તે શંખ પુષ્કલી ને અધિકારે, તથા શ્રાવક શ્રાવકને નમસ્કાર કરવો, તે સનત્કુમાર ઇંદ્રને અધિકારે કહ્યું છે. એ વાત, શ્રીજગવતી સૂત્રના અગીયારમા તથા બારમા શતકમાં છે.

૪ સાધુને યોગવહીને સૂત્ર જણવાં તથા સજ્જાતિ બેસી ઉપદેશ આપવો, વ્યાખ્યાન કરવું, તે વ્યવહાર સૂત્રમાં જેટલે વર્ષે કહ્યું છે, તેટલે વર્ષે ચારિત્ર પચાસ પાલતે ગુરુ યોગ જાણી આજ્ઞા ઉપદેશ કરે, તે વિના કરે, તો તેમને ગુરુ વચન તથા જિનવચન અને સિદ્ધાંતના ઉઘાપક કહ્યા છે. કેમ કે શ્રીસિંદૂરપ્રકરમાં ગુરુ આજ્ઞા વિના જે ક્રિયા કરવી, તે સર્વ વૃથા કહી છે.

૫ શ્રાવક ગૃહસ્થારંજી હોય, અને સાધુમુનિરાજની પરેં સજ્જા જરી ઉપદેશ આપે, તથા વ્રત ઉપવાસાદિક પચ્ચસ્કાણ કરાવે, તે પણ ગુરુ આજ્ઞા લોપી સિદ્ધાંતના ઉઘાપક જાણવા. કારણ કે, જગવતીસૂત્રમાં ગૃહસ્થને શ્રોતા કહ્યા છે, પરંતુ ઉપદેશ આપના

रा कहा नथी. लक्ष्मण गहियछा पुब्बियछा इति जग
वती वचनात्. पण ए पाठमां उवएसिअच्छा कहा न
थी. तेमज प्रश्नव्याकरणना संवर द्वारमां पण देवता
तथा गृहस्थने सांनलवानो अधिकार ठे. पण सजा
जरीने उपदेश आपवानो अधिकार नथी. श्रीनिशीय
सूत्रमां जे साधु, गृहस्थने सूत्र जणावे, अने गृहस्थ
नुं जणेलुं सूत्र वखाणे, तो ते साधुनुं चार मासनुं चारि
त्र जाय, तथा तेने चार मासना चउविहार उपवास
नी आलोयणा आवे, एम कह्युं ठे.

६ वली सुपात्रदान साधु आश्रयी कह्युं ठे, केम
के श्रीसूयगडांगमां १ अन्नपुसे, २ पाणपुसे, ३ व
ड्डपुसे, ४ सेण पुसे, ५ लेणपुसे, ६ मणपुसे, ७ व
यणपुसे, ८ कायपुसे, ९ नमस्कारपुसे, ९ नव प्रका
रें पुण्य बंधनां स्थानक कहां ठे. तेमज श्रीउपासक
दशांगमां आनंद श्रावकें एम कह्युं ठे, के हुं साधु
विना बीजाने न आपुं. इहां कोइ एम कहेरो के शं
खजी प्रमुख श्रावक तो जम्या देखाय ठे? तेने उत्तर क
हीयें ठेयें. के तिहां साहामी वज्जल तथा पोसह करना
रा जमाडीयें एम नथी बोल्या, तिहां तो एक स्थान
कें जमयुं! एवोज पाठ ठे. तथा वली साहामीवात्स

(૧૩૭)

લ્ય તો સરસા સાધર્મિ જાડુંને સહાય કરવું, તથા ધર્મથકી પંડતાને સ્થિર કરવો. તેને કહીયેં ઠેયેં. પણ એકાંતેં જમાડવામાંજ સાહામીવાત્સલ્યની સ્થાપના ન થાય. તથા શ્રીજિનશાસનમાં સાતે ક્ષેત્રેં દાન આપવું કહ્યું છે. વલી અજયદાન, સુપાત્રદાન, કીર્ત્તિદાન, ંચિતદાન અને અનુકંપાદાન. એ પાંચ પ્રકારેં પણ દાન કહ્યું છે. તેમાં ગૃહસ્થને તો ડચ્ચથી તથા જાવથી જિહાં જેમ ઘટે, તિહાં તેમ ંપયોગ સહિત કરવું. પણ નજ કરવું. એવો નિષેધ નથી. જેમ શ્રી જિનશાસનની ંન્નતિ વધે, તેમ કરવું.

૭ ંયોગ વહ્યા વિના સાધુને સૂત્ર વાંચવાની ના કહી છે. તો જગવતીજીને વિષે, સ્વંધક તાપસ દીક્ષા લેને તરતજ દ્વાદશાંગી જણ્યા. વલી અનુત્તરોવવાને વિષે ધના કાકંમી, નવ મહીના ચારિત્ર પાલી ૬ ગ્યાર અંગ જણ્યાં, તેમાં કાંડ ંયોગ વહ્યાનો અધિકાર દેસાતો નથી. માટે ંયોગ વહ્યા વિના સાધુ નહીં હોય, એમ સમજવું નહીં. તથા વલી જે ંયોગ વહ્યા વિના સાધુ હોય, તે મોક્ષમાર્ગમાં નથી અને તે સાધુ સંસારમાં ઘણા જવ જમશે. એવો પાઠ પણ કોડ સિદ્ધાંત શાસ્ત્રમાં દેસાતો નથી. માટે એ વાત એકાંત નથી.

(१३ए)

७ वली श्रावकने उपधान वह्या विना नवकार प्रमु
ख सूत्र न जणवां, तथा उपधान वह्या विना कोइ
क्रिया स्वपमां न आवे, एवं पण एकांत नथी. कार
ण के श्रीवीरजगवानें स्वमुखें वर्णकेला एवा दश श्रा
वकना अधिकार, अथथी मांमीने इति सुधी श्रीउपा
सकदशांग सूत्रमां ठे. तेमां पण ते श्रावक बार व्रत
उच्चरीने तरतज पडिमा वह्या ठे. पण उपधान व
ह्यानो अधिकार कांइ नथी. माटे उपधान वह्या वि
ना श्रावक न कहेवाय, ए वात पण निश्चयवाचक
न समजवी. कारण के कोइथी वधारे व्रत पञ्चस्काण
न थइ शके, तो मात्र एक नोकारसीनुं पञ्चस्काण अ
ने एक काकना मांसनो त्याग एटलो नियम करना
र पण श्रावक कहेवाय ठे. ए वात में गुरु मुखथी
सांजली ठे के जघन्य तो उपधाननो कांइ निश्चय
नियम नथी. ते वात, श्रीजरहेसर वृत्तिमां पण वंक
चूलना अधिकारथी जाणवी. श्रीजैनमार्गानुसारी
आत्मानुयायीनी जे जे क्रिया, ते सर्व सफल ठे.

ए तथा श्रीउमास्वाति वाचक अने पादलिप्ताचार्य
कृत प्रतिष्ठाकल्पमां प्रगट लखेलुं ठे के “सूरिःप्रतिष्ठां
कुर्यात् ” ए पाठ प्रमाणें आचार्य तथा बहुश्रुत यति

प्रतिष्ठा करे, पण श्रावकें प्रतिष्ठा करवी एम कसुं नथी.

१० वली उत्सूत्र प्ररूपकना हार्थें प्रतिष्ठित तथा गृहस्थ प्रतिष्ठित एवां जे जिनबिंब, ते अवंदनीय ठे. एम सात प्रकारें मिथ्यात्वीनां चैत्य अथवा बिंब वां दवां निषेध ठे. ए वात श्रीजिनपति सूरिकृत प्रबोधोदय ग्रंथ तथा बृहत्कल्पजायनी चूर्णीना प्रथम खंमेंठे.

११ तथा श्रीविजयदान सूरिकृत सात बोलें समस्त साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकायें योग्य वर्त्तमान कालें मार्गानुसारी पणें वर्त्तवुं. ते सात बोलनो विस्तारें अर्थ संवत् १७४६ ना पौषशुद्धि १३ ने चार शुक्रने दिने श्रीअणहिलपुर पाटणे श्रीहीरविजय सूरियें लखी प्रगट कीधो, तेमां आचार्य श्रीविजयसेन सूरि, श्रीधर्मसागरउपाध्याय, श्रीविमलहर्ष उपाध्याय, श्रीशांतिचंद्रगणि उपाध्याय, श्रीकल्याणविजय उपाध्याय, श्रीसोमविजय उपाध्याय, पन्यास श्रीसहजसागर, पन्यास कान्हर्षि इत्यादिनी साह्मी करावी. एम समस्त संघें मली ए सात बोल विस्तारें वर्णव्या. तेमां इव्यलिंगी साधुयें पोतानुं इव्य खरची करेलां चैत्यो तथा साधु विना श्रावकनां प्रतिष्ठित करेलां चैत्यो, तेने वांदवा पूजवानो निषेध कस्यो ठे.

ગ્રંથ વધે માટે સાત બોલ, હાં વિસ્તારેં લખ્યા નથી.

૧૨ તથા શ્રીતીર્થંકર જગવાન્ સમવસરણમાં દેશ ના આપવાના અવસરેં પાદપીઠ ઉપરેં પોતાનાં ચરણ કમલ ચાપી બે હાથ યોગ મુદ્રાયેં રાખે. પુનઃ શ્રીઆ ચાર્ય પણ તેજ પ્રમાણેં રાખે. પરંતુ એટલું વિશેષ જે તીર્થંકર મુદ્દપત્તિ ન રાખે, અને આચાર્યજી મુદ્દપત્તિ રાખે, એ અધિકાર, શ્રીચૈત્યવંદન વૃહદ્નાથમાં છે.

૧૩ તથા જગવાન્ દેશનાવસરેં “નમોતિહસ્સ” એમ નમસ્કાર કરે, તે અધિકાર, આવશ્યકનિર્યુક્તિમાં છે.

૧૪ પુનઃ તીર્થંકર, દીક્ષાવસરેં તો નમોસિદ્ધસ્સ ક હી પોતેં પોતાને હાથેં લોચ કરે, કેમ કે સ્વયંબુદ્ધ છે, પોતાની મેલેંજ બોધ પામ્યા છે, માટે. એ અધિકાર શ્રી આચારાંગ સૂત્રના બીજા શ્રુતસ્કંધના ઠઠા અધ્યયને છે.

૧૫ શ્રીતીર્થંકર તથા શ્રીતીર્થંકરની પ્રતિમા નિમિત્ત જે ગૃહસ્થે આહાર પક્વાન્ નીપજાવ્યાં હોય, તે આહાર કોઈ સાધુ મુનિરાજ ગોચરી આવે થકે તેમને વોહો રાવી આપે, તે સાધુને લેવો કલ્પે, એ અધિકાર વૃહ ત્કલ્પનાથની ટીકામાં કહ્યો છે તથા ચૈત્યવંદન નાથની સંઘાચારનામેં ટીકામાં કહ્યો છે.

૧૬ તથા સાધુ આહાર કરવા બેઠા છે, એટલામાં

बीजो कोइ प्रादुणो साधु आवे, तेवारें निस्सही सांजली
ने वास करी रहेलो साधु आहार करवो ठांमीने ते
आवेला साधुने माटे आहारनी तजबीज करे. ए अ
धिकार विस्तारें तो उंघ निर्युक्ति सूत्रनी वृत्तिमां ठे,
परंतु ते एकज सामाचारी वाला साधु आश्रयीने ठे,
अने जिन्न सामाचारी वाला साधुने तो आहारनी
जरुर नही पण पीठ फलकादि निमंत्रणा करवी. ए
अधिकार, श्रीआचारांगसूत्रनी वृत्तिमां सातमा अ
ध्ययनने प्रथम उद्देशें कह्यो ठे ॥

१७ तथा रात्रिने विषे साध्वीयो उपाश्रयना वार
णां ढांके अने जिनकल्पी साधु नहीज ढांके तथा
थिविरकल्पी तो कारण विशेषें ढांके, कारण के उघाडा
दरवाजामां चोर, सिंह श्वानादिक प्रवेश करे, माटें. ए
अधिकार, बृहत्कल्पजाप्यनी टीकामां बीजे खमें ठे.

१८ वली साधु अटवी प्रमुख मार्ग उल्लंघन करतां
पोतानी पासें राखवा योग्य आहारादिक संबल राखे,
ते उत्सर्गथी तो नहीज राखे, पण अपवादें जो
नही राखे, तो एक उपवासनुं प्रायश्चित्त दूषण आ
वे, अने संयम विराधना तथा आत्मविराधना होय,
माटें सूजतो अथवा असूजतो आधाकर्मि आहार प

ણ રાખે. ઇત્યાદિ બૃત્કલ્પનાપ્યની વૃત્તિમાં બીજે સ્વર્ને ઢે. તથા ગોચરી પ્રમુખેં ફરતાં થકાં સાધુ જે ઢે, તે ગૃહસ્થના ઘરનું બારણું ઉત્સર્ગ માર્ગેં તો નહીજ ઉઘાડે, પરંતુ અપવાદ માર્ગેં કારણ વિશેષેં ઉઘાડે અથવા સાદ પણ કરે. એ અધિકાર આચારાંગસૂત્રની વૃત્તિમાં બીજે શ્રુતસ્કંધેં પ્રથમ ઉદ્દેશેં ઢે.

૧૯ તથા જે સાધ્વી બહુશ્રુત હોય, અપૂર્વ સિદ્ધાંત નણેલી હોય, તે સાધ્વી પાસેં કોઈ સાધુને નણવું. હોય તો તે સાધુ પણ નણાવનાર સાધ્વીને ફેટા વંદન કરે, અથવા કારણેં ઝસન્ના પાસઢાદિકને પણ સાધુ વંદન કરે, જો ન વાંદે, તો ઉપડવ ઉપજે, તે અજા પાલક વાચકને દૃષ્ટાંતેં જાણવું. એ અધિકાર ઘણો ઢે. તે પ્રશ્નોત્તરસાર્દશતક ગ્રંથથી જાણવો.

૨૦ તથા શ્રીજિન ગૃહમાં અથવા જિનપ્રતિમાની ઉપરેં વૃદ્ધાદિક તથા મધુપિંમ પ્રમુખ આશાતના થતી હોય અને તિહાં કોઈ શ્રાવક ઉપયોગવાન્ ન હોય, તો સાધુ પોતેં પોતાને હાથેં તે દૂર કરે, જો તેમ ન કરે, તો તે સાધુને પ્રાયશ્ચિત્ત દોષ લાગે, એ અધિકાર બૃહત્કલ્પનાપ્યમાં કહ્યો ઢે.

૨૧ તથા જે સાધુ ફાસુ પાણીથી વસ્ત્રનો મેજ

કાઢતા નથી તેમને તે મલના પ્રસંગથી જીવની ઉત્પત્તિ થાય તથા ડુગંઢનિક પળું ઇત્યાદિ ઘણા દૂષણ લાગે. એ અધિકાર, ઊઘનિર્યુક્તિ સૂત્રની વૃત્તિમાં છે. અને આચારાંગ સૂત્રે “ન ધોઈજ્ઞા” એવો પાઠ છે. તે પ્રાયઃ જિનકલ્પી સાધુની અપેક્ષાએ જણાય છે.

૨૧ તથા સાધુ સ્થંભિલ જૂમિકાયે જાય, તેવારેં વે સાધુ સાથે જાય પરંતુ તેમાં એટલું વિશેષ છે. જો તરુણ સાધુ હોય તો વે સાધુ એકઠા મલી જાય, પણ જો વૃદ્ધ સ્થવિર હોય તો એક પણ જાય અને વે પણ જાય. એ અધિકાર, ઊઘનિર્યુક્તિમાં વિસ્તારેં કહ્યો છે.

૨૨ વલી આચાર્યાદિક સાધુ પ્રમુખ જેવારેં વિહાર કરે, તેવારેં સર્વ પ્રકારેં ધર્મવૃદ્ધિ તથા શાસન્નોનતિ રૂપ સર્વ કાર્યની કુશલતા માટે મુદ્દર્ત લગ્નાદિકની શુદ્ધિ જો ઇને કરે. એ વાત વૃહત્કલ્પવૃત્તિના બીજા સ્વંમમાં છે.

૨૪ વલી જ્યાં સુધી ષદ્મસ્થાવસ્થા હોય, તિહાં સુધી સાધુ વસ્ત્રાદિક ઉપધિનું પડિલેહણ કરે, અને કેવલી ન ગવાન્ તો જીવની ઉત્પત્તિ થતી દેસે, તોજ પડિલેહણ કરે, નહીં દેસે, તો પડિલેહણ ન કરે. એ અધિકાર ઊઘનિર્યુક્તિમાં શ્રીજંબાદુ સ્વામીયેં કહ્યો છે.

૨૫ વલી ચરમ શરીરીપળું તથા તીર્થંકરપળું પામ

વાનું નિયાણું કરવું, તે પણ સાધુને અયુક્ત છે. અપવાદે પણ નિયાણું કરવું નહીં. એ અધિકાર, આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિમાં તથા ધ્યાનશતકમાં છે.

૧૬ વલી જયવીયરાય ઇત્યાદિ પ્રણિધાન ઠઠા ગુણ ઠાણાથી ઉપરાંત ન કરવું. કારણ કે પ્રણિધાન પ્રાર્થના જે શુન વસ્તુની ઇચ્છા, તે ઉપરલા સપ્તમાદિક અપ્રમાદિ ગુણઠાણામાં છે નહીં, માટે મનાડકરી છે. એ અધિકાર, પૂજા પંચાશક વૃત્તિમાં વિસ્તારે છે.

વલી શ્રાવકને જયન્યથી આઠ પ્રવચન માતા અને પ્રતિક્રમણાદિ પડાવશ્યક તથા ઉત્કૃષ્ટથી તો દશવૈકાલિક સૂત્રના ચોથા ઠ જીવણિયા નામે અધ્યયન સુધીજ નણવું કહ્યું છે. એ અધિકાર, આવશ્યક ચૂર્ણીમાં છે. તથા કોડક શ્રાવક અગિયાર પ્રતિમા વહ્યા પઠી પાઠો ઘરમાં આવે. એ વાત નિશીથ ચૂર્ણના બીજા સ્વંમને શોભમે ઉદ્દર્શે છે. તથા બૃહત્કલ્પ ટીકામાં અને ઉપાસક દશા, પ્રતિમાપંચાશકમાં પણ છે.

॥ તથા શ્રાવકની અગીયાર પ્રતિમા કહી છે, તે કહે છે. પહેલી એક માસની, બીજી બે માસની, ત્રીજી ત્રણ માસની. એમ એકેક માસ વધારતાં અગીઆરમી પ્રતિમા અગીઆર માસની થાય. તેવારેં સર્વ મલી ઠાસઠ મ

(१४६)

हीना एटले साडा पांच वर्ष थाय. तिहां १ सम्यक्त्व,
 २ व्रत, ३ सामाधिक, ४ पौषध, ५ काउस्सग, ६
 ब्रह्मचर्य, ७ सचित्तत्याग, ८ कृषीप्रमुख आरंज व
 र्जन, ९ बीजा पासैं आरंज न करावे, १० उद्देशी ते
 पोताने माटें आहार नीपजे ते आहार न लीये, अने
 अगीयारमी प्रतिमामां तो गोचरी प्रमुख साधुनी परें
 करे, ए रीतें प्रतिमां प्रतिमामां वर्त्तन करे. उक्तं चः—
 दंसण वय सामाश्य, पोसह पडिमा अवंज सच्चित्ते ॥
 आरंज पोस उद्दि, ८ वज्जए समणनूएय ॥ ए प्रतिमाधारी
 श्रावक ते उत्कृष्ट श्रावक कहेवाय. केम के श्रावक
 पण जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारना
 कहा ठे. श्लोक ॥ देवपूजा गुरुपास्तिः, स्वाध्यायः
 संयमस्तपः ॥ दानं चेति गृहस्थानां, षट् कर्माणि दि
 ने दिने ॥ १ ॥ ए षट् कर्म जे श्रावक नित्य करे, ते
 श्रावक प्रतिमा वहेवानो अधिकारी थाय. ए अधिका
 र, पूजापंचाशक तथा उपासकदशांगथी जाणवो.

तथा श्रावकें जे पञ्चरकाण करवुं, ते एक आ
 त्मानी साखें करवुं, बीजुं श्रीजिनप्रतिमा आगल कर
 वुं, अने त्रीजुं तो प्रगट वाच्यवाचक संबध रूप प्र
 त्यक्षआत्मस्वरूपदर्शि, जवनयहरण, संसारसमुद्भूत

રણતારણ એવા આચાર્યાદિક શ્રીમુનિરાજાદિ ગુરુ પાસેં કરવું, કેમ કે? ગુરુ આણા વિના સર્વ ક્રિયા નિઃફલ છે. એટલે ફલીનૂત થાય નહિં. જેમ રાજા વિના સૈન્ય કદાપિ વિજય નહીજ પામે. એ અધિકાર, શ્રીસિં દૂરપ્રકરની ટીકામાં ઘણો વિસ્તારેં છે. તથા ઉત્તરાધ્યયનના પ્રથમાધ્યયને કુલવાલુયાના દૃષ્ટાંતમાં પણ એ ત્રણની સાથેં પચ્ચસ્કાણ કરવું કહ્યું છે. વલી એ અધિકાર, યોગ શાસ્ત્રના ત્રીજા પ્રકાશમાં પણ છે.

તથા શ્રીમહાનિશીથ સૂત્રેં કહ્યું છે, કે ગુરુ હોય તે પ્રથમ શ્રાવકને જૈનમાર્ગની શ્રદ્ધા કરાવવા માટેં સવારમાં ઊઠી શ્રીજિનપ્રતિમા તથા યોગવાહી ગુરુનાં દર્શન કહ્યા વિના મુખમાં પાણી પણ લેવું નહી, એવી પ્રતિજ્ઞા વ્યવહારથી જવ્ય જીવોને કરાવે. એ પ્રતિજ્ઞા પ્રથમ સમ્યક્ત્વ પામવાની કારણનૂત છે. તથા ઉત્તર ગુણરૂપ જે દશ પચ્ચસ્કાણ છે, તે પણ શ્રીજિનમાર્ગની શૈલી તથા ધર્મ પામવાનાં કારણ છે.

તથા ઠ આવશ્યક શ્રાવકને ઝનયકાલ કરવાં. તેનો પરમાર્થ કહે છે:— શ્લોક ॥ સ્વસ્થાનાદ્યત્ પરસ્થાનં, પ્રમાદસ્ય વશાજતઃ ॥ તત્રૈવ ક્રમણં જૂયઃ, પ્રતિ ક્રમણમુચ્યતે . ॥ ૧ ॥ જે પોતાના સ્થાનકથી પરસ્થા

नकें एटले प्रमादने वश गयो, तेने आलोझे फरी पोताने स्थानकें आवुं, ते प्रतिक्रमण कहियें.

तथा उत्तर गुण रूप दश पञ्चस्काणनां नाम कहे ठे. १ जाविपञ्चस्काण, २ अतीत पञ्चस्काण, ३ कोटि सहित, ४ नीयंत्रित, ५ सागार, ६ अणागार, ७ परिमाणकृत, ८ निर्विशेष, ९ सांकेत, १० अक्षा.

हवे ए दश पञ्चस्काणोना अर्थ कहे ठे:—जे पजो सणादि पर्वने विषे कोइ कारणने लीधे ठछ अछमादि तप थइ शकरो नही? एवुं विचारीने ते पर्व आव्यानी पहेलांज ते पञ्चस्काण करी लीये, ते प्रथम जाविपञ्चस्काण कहियें. एमज पजोसण पर्व वीती गया पढी जे तेज पर्व संबधि ठछ अछमादि तप करी लेवुं, ते बीजुं अतीत पञ्चस्काण जाणवुं. तथा उपवास, आंबिल एका सणादि तप करीने फरी ते तपने बीजे दिवसें प्रजा तथी वली बीजुं पञ्चस्काण करवुं, ते त्रीजुं कोटि सहित पञ्चस्काण जाणवुं. तथा प्रथमथी धारणा करी राखवी, जे महारे अमुक दिवसें अमुक तप करवुं ठे. ते चोथुं नि यंत्रित पञ्चस्काण. तथा जे आगार सहित पञ्चस्काण करवुं, ते पांचमुं सागार पञ्चस्काण, अने जेमां कोइ आगार न होय, एवुं आगाररहित पञ्चस्काण करवुं,

તે ઠું અણાગાર પચ્ચસ્કાણ. તથા ઘરની સંખ્યા કરવી, એક બે ઇત્યાદિ કોલીયાની સંખ્યા કરવી, તે સાતમું પરિમાણરૂત પચ્ચસ્કાણ તથા અશનાદિ ચારે આહારનો ત્યાગ કરી અનશન કરવું, તે આઠમું નિર્વિશેષ પચ્ચસ્કાણ, તથા નવમા સાંકેત પચ્ચસ્કાણના આઠ નેદ છે. તે કહે છે. કોઁકેં પ્રથમ પોરિસિ પચ્ચસ્કાણ કરેલું હોય, પઢી કાંડ કામ આવી પડવાંથી પોરિસીનો કાલ પૂર્ણ થઈ ગયાથી મનમાં વિચારે કે એટલો વચત, મહારો વ્રત વિનાનો જાય છે, તેથી હું સાંકેત પચ્ચસ્કાણ કરું, તો નિરંતર વ્રતમાં રહું ? એટલા માટે ૧ જ્યાં સુધી હું મુઠિમાં અંગુઠો રાખું, તે અંગુઠ સહિયં ૧ મુઠી વાલી રાખું ત્યાં સુધી વલી મહારે પચ્ચસ્કાણ છે. તે મુઠસહી, ૨ ગંઠિસહી, ૪ ઘરસહિયં, ૫ અંગનો પરસેવો થાય, ત્યાં સુધી તેને સેઝસહિયં પચ્ચસ્કાણ કહિયેં, ૬ ઝ સાસસહિયં, ૭ થિબુગ સહીયં તે પાણીના બિંદૂઆ સૂકે, ત્યાં સુધી, ૮ જોડસહિયં એટલે દીવા પ્રમુચ્ચની જ્યોતિ રહે ત્યાં સુધી, ૯ આઠ પ્રકારે સાંકેત પચ્ચસ્કાણ કહ્યું.

હવે દશમું અધાપચ્ચસ્કાણ. ઇહાં અધા શબ્દે કાલ જાણવો. તે કાલ, મુદ્દર્તથી માંમીને પોરિસી ઉપવાસાદિ ક મલી દશ પ્રકાર, એ પચ્ચસ્કાણના છે. તે કહે છે:-

૧ નવકારસી, ૨ પોરિસી, ૩ પુરિમટૂ, ૪ એકાસણું,
 ૫ એકલછાણું, ૬ વિગડ, ૭ આંબિલ, ૮ ઉપવાસ, ૯
 દિવસચરિમ અથવા નવચરિમ, ૧૦ અનિગ્રહ. એ
 દશ પ્રકારેં અષ્ટાપચ્ચસ્કાણ કહ્યું. તથા નાવિ પચ્ચસ્કા
 ણાદિક જે છે, તે સર્વ ઉત્તર ગુણ પચ્ચસ્કાણ જાણવાં,
 અને મૂલ ગુણ પચ્ચસ્કાણ તો સાધુને પાંચ મહા
 વ્રત રૂપ છે, અને શ્રાવકને અણુવ્રત રૂપ છે.

હવે વ્યવહાર જાણ્ય મધ્યેં શ્રીજિનજવનની આશા
 તના ટાલવા માટેં સાધુ તથા શ્રાવકને ઉત્કૃષ્ટ ચૈત્ય
 વંદન કરવા પર્યંત રહેવું કહ્યું છે, અને બીજું વલી શ્રા
 વકને પૂજા પ્રતિષ્ઠા પ્રમુખ કારણેં રહેવું કહ્યું છે, પરં
 તુ ઉપરાંત રહેવાની ના કહી છે.

તથા પાંચ પ્રકારનાં શ્રીજિનચૈત્ય કહ્યાં છે, તેનાં
 નામ કહે છે. ૧ નક્તિચૈત્ય, ૨ મંગલચૈત્ય, ૩ નિશ્રા
 કૃત ચૈત્ય, ૪ અનિશ્રાકૃતચૈત્ય, ૫ શાશ્વત ચૈત્ય.
 તેમાં પ્રથમ જે પોતાના ઘરને વિષે ત્રણ કાલેં નક્તિ
 કરવાને અર્થેં કરાવે, તે પ્રથમ નક્તિચૈત્ય, બીજું ઘર
 ના બાર સાંચને વિષે જિનમુડા ચિતરાવે, તે મંગલ ચૈ
 ત્ય. એ મથુરા નગરીયેં શ્રીપાર્શ્વનાથની મુડા કરેલી
 દેશાય છે. ત્રીજું પોતાના ગજનું ચૈત્ય, તે નિશ્રાકૃત

ચૈત્ય કહેવાય. ચોથું સર્વ સંઘોના સમુદાયનું ચૈત્ય હોય, તે અનિશ્ચય ચૈત્ય કહેવાય. પાંચમું જે સિદ્ધાચતન તે શાશ્વત ચૈત્ય કહેવાય. એ પાંચ પ્રકારનાં ચૈત્ય શ્રીપ્રવચનસારોદ્ધારમાં કહ્યાં છે. તથા વલી સાધર્મિક ચૈત્ય પણ તેજ ગ્રંથે વારતકમુનિના પુત્રે પોતાના પિતાની મૂર્તિ સાધુના ચિન્હ સહિત કીધી છે.

હવે સામાયિક ચાર પ્રકારનાં કહે છે:—પહેલું શ્રુત સામાયિક, બીજું સમ્યક્ત્વ સામાયિક, ત્રીજું દેશવિરતિ સામાયિક, અને ચોથું સર્વવિરતિ સામાયિક, શ્રાવકને દિવસ સંબંધિ તથા રાત્રિને વિષે વલી પર્યુષણાદિ પર્વને વિષે તથા દેવદ્ય, ગુરુદ્ય અને સાધારણ દ્યના રક્ષણને અર્થે જે જે માર્ગાનુસારે વર્તેવું, તે સર્વ દેશવિરતિપણું જાણવું. એ અધિકાર, શ્રાદ્ધવિધિ ગ્રંથથી જોવો. હાં લખ્યો નથી.

હવે સાધુની બાર પ્રતિમા કહી છે, તેને વિષે એટલો વિશેષ છે કે જે, સાધુનું વજ્રરૂપજનનારાચ સંઘયણ હોય, અને અત્યંત મનની સ્થિરતા હોય, વલી સ્વપરૂપજાયક, જાણંગ એવા મુનિરાજ સાનુકૂલ તથા પ્રતિકૂલ ઉપસર્ગ સહન કરવાને સમર્થ હોય, તે બારે પડિમા વહે. વલી તે પડિમાધારી મુનિની પાંચ જા

વના છે, તેનું સ્વરૂપ વિસ્તારેં વ્યવહારજ્ઞાણની ટીકા માં છે. તે બાર પડિમાનું કાલમાન કહે છે:—પહેલી એક માસની, બીજી બે માસની, ત્રીજી ત્રણ માસની, એમ યાવત્ સાતમી સાત માસની જાણવી. તથા આ ઠમી, નવમી, અને દશમી, એ ત્રણે સાત સાત અહોરાત્રની અને અગીયારમી એક અહોરાત્રની તથા બારમી એકજ રાત્રિની હોય. એ પડિમા તથા અગ્નિગ્રહ એ એકજ નામેં છે. એનો વિશેષ અધિકાર, શ્રીપ્રવચન સારોદ્ધારની બૃહદ્વૃત્તિમાં છે, તિહાંથી જોવો.

તથા કલ્પચૂર્ણી મધ્યેં જિનકલ્પી મુનિનો અધિકાર છે. તેવીજ રીતેં પ્રાયેં યથાલંદી મુનિનો કલ્પ પણ જાણવો. તે યથાલંદી બે પ્રકારનાં છે. એક ગહ્વ પ્રતિબદ્ધ, બીજા ગહ્વ અપ્રતિબદ્ધ, એ સાધુડને ગુરુ તેમની સાંહામા જડ્ને સૂત્રાર્થ આપે છે, કારણ કે, અપ્રતિબદ્ધ મુનિડ જે છે, તે બીજા કોઈ મુનિયોને વાંદતા નથી, તેથી કદાચ બીજા મુનિડ દ્વેષ કરે, તે માટેજ ગુરુ તેમને સાંહામા જાય. ઇહાં યથાલંદ શબ્દેં કાલનું માન છે. તે જઘન્યથી તો પાણીથી નીંજેલો હાથ સૂકાઈ જાય, તેટલા કાલમાનનું એ પચ્ચસ્કાણ છે.

તથા બીજા લઘ્વિ પ્રતિપન્ન મુનિયો, તે જંઘાચા

रण, विद्याचारण, व्योमचारण, जलचारण, अग्नि
शिखाचारणादि अनेक जेदें सिद्धांतें कहां ठे.

तथा स्थविरकल्पी मुनिनो व्यवहार तो ए ठे जे,
मार्गानुसारें वर्तवुं, तेनो सिद्धांतें विस्तार घणो ठे, प
रंतु इहां स्वल्प मात्र लखुं बुं ॥ गाथा ॥ पञ्चा सत्त्वा विर
मण, पंचिंदिय निग्गहो कसाय जउ ॥ दंढ तियस्स
विरइ स, तरस्सहा संजमो होइ ॥ १ ॥ अर्थः—१ प्रा
णातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन,
५ परिग्रह. ए पांच आश्रवथी विरम्या एटले दूर थ
या, पांच इंदियनो निग्रह एटले पांचे इंदियोना विष
यो जे ठे, तेनो त्याग कखो, तथा क्रोध, मान, माया
अने लोभ, ए चार कपायने जीत्या ठे, तथा मन, व
चन अने काय, ए त्रण दंढ, तेना अकुशलपणाने
जेणें वर्ज्युं ठे, ए सत्तर जेदें संयम पाले, तथा मूलोत्तर
गुण ते चरणसित्तरी अने करणसित्तरीना धरनार होय,
ते गाथायें करी कहे ठे ॥ वय समण धम्म संजम, वे
यावच्चं च बंज गुत्तीउ ॥ नाणाइ तियं तव को, हनिग्ग
हाइं चरण मेयं ॥ १ ॥ पिंढविसोही समइ, जावणा
पडिमाय इंदिय निरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीउ, अजि
ग्गहो चेव करणं तु ॥ २ ॥ बली ते मुनि आहार, उ

पाश्र्वय, वस्त्र अने पात्र ए चार प्रकारें पिंमविशुद्धि करनार, बेहैतालीश दोष रहित आहारना ग्रहण क रवा वाला. ए अधिकार, विशेषथी पिंमनिर्युक्ति ग्रंथनी श्रीजडबाहु स्वामिकृत टीका तथा श्रीमलयगिरि महा राजकृत सात हजारी टीका तथा श्रीजिनवद्वजसूरि कृत पिंमविशुद्धि ग्रंथ तेनी श्रीजिनपति सूरियें टीका करेली ठे, तेमां तथा श्रीनेमिचंड सूरिकृत प्रवचन सारोद्धार ग्रंथ तेनी टीका श्रीसिद्धसेन सूरिकृत ठे. तथा श्रीहेमचंड सूरिकृत योगशास्त्रथी जाणवो.

तथा मुनि ठ कारणें आहार लीये, ते कारण क हे ठे:—एक दुधावेदनी न सहन थवाथी, बीजुं वेया वच्च करवाने अर्थें, त्रीजुं संयम पालवाने अर्थें, चोष्टुं प्राण रक्ष्णार्थें, पांचमुं पांच समिति शोधवाने अर्थें, ठहुं धर्मध्यान करवाने अर्थें, ए ठ कारण जाणवां.

तथा मुनिराज ठ कारणें आहार न लीये, तेनां नाम कहे ठे:—१ ज्वरादिक रोग प्राप्त थये थके, २ उ पसर्ग सहन करवाने अर्थें, ३ माता पिता व्रत मू कावे ते वखतें, ४ ब्रह्मचर्यनी गुप्ति राखवाने अर्थें, ५ जीवदया निमित्तें जयणा पालवाने अर्थें, ठठ अ

(૧૫૫)

ઠમાદિ કરે, ૬ અંત અવસ્થાયેં અનશન કરે, તેવારેં
 ૯ ઠ કારણ આહાર ન લેવાનાં કહ્યાં.

હવે સિદ્ધાંતમાં મુનિને પાંચ પ્રકારના અવગ્રહ ક
 હ્યા ઠે, તેનાં નામ કહે ઠે:- જરત દેત્રના સાધુ
 હોય, તે સૌધર્મ ઈંડની આજ્ઞા લીયે, અને ઈરવત દે
 ત્રના સાધુ ઈશાનેંડની આજ્ઞા લીયે, તે પ્રથમ દેવેંડ
 ની આજ્ઞા સંબેધી અવગ્રહ જાણવો. બીજી રાજાની,
 ત્રીજી વસ્તિના માલેકની ઇટલે ગૃહપતિની આજ્ઞા
 લીયે, ચોથી સાગારિકની, પાંચમી સાધર્મિકની આ
 જ્ઞા લીયે, ૯ પાંચમાં જિહાં જેનું સ્થાનક તથા દુકુમ
 આદેશ હોય, તિહાં ૯ પાંચેની આજ્ઞા જાણે સાધુ મુનિરા
 જ વસ્તિમાં નિવાસ કરે, તે પાંચ અવગ્રહ જાણવા. તથા
 વલી બે કોશ સુધીનો વહોરી લાવેલો આહાર સાધુને ક
 લ્પે. ડપરાંત નહીં કલ્પે. તથા પ્રથમ પહોરનો લાવેલો
 આહાર, તે ત્રીજા પહોર સુધી વાવરવો કલ્પે, ડપરાંત ન
 હીં કલ્પે. તથા આહારનું બત્રીશ કવલનું પ્રમાણ ઠે. ૯
 સર્વ વાત, વિસ્તારેં શ્રીપ્રવચનસારોદ્ધાર ગ્રંથમાં ઠે.

તથા શાસ્ત્રમાં ચાર પ્રકારની જાણા કહી ઠે:- ૧
 સત્યજાણા, ૨ મૃષાજાણા, ૩ સત્યા મૃષા જાણા, ૪
 અસત્યા મૃષા જાણા. તેમાં પ્રથમ સત્યજાણા દશ

પ્રકારેં છે. તે કહે છે:— ૧ જેમ કુંકણદેશમાં પા
 ણીને પીચં કહે છે. તે જનપદ સત્યનાષા, ૨ કુ
 મુદ, કુવલય, ઉત્પલ, શ્યાદિકને વિષે પંકજ ક
 મલ એ સર્વનું નાષણ, વચન, જૂડં જૂડં છે; પરં
 તુ વસ્તુ પદાર્થ કમલ એકજ સમ્મત છે. તે સ
 મ્મતસત્યનાષા, ૩ જેમ અંક સ્થાપના, એક, દશ
 શ્યાદિ તેમજ માસો, રતિ, તોલો, શેરં, મણ, જે નિ
 ધારી લખી આપીયેં, તે તોલ કહેવાય. તેમજ આચા
 ર્યાદિક જિનપ્રતિમા પ્રમુખની આપના કરીયેં, તે સર્વ,
 સ્થાપના સત્ય જાણવું. ૪ જો કુલવૃદ્ધિ ન કરતો
 હોય, તો પણ કોશ્કનું નામ કુલવર્ધન હોય છે. તે
 નામસત્યનાષા, ૫ જો કપટં કરી સાધુનો વેષ લી
 ધો હોય, તો પણ તેને સાધુ કહીયેં, જેમ નવાશ્યા
 પ્રમુખ જે છે, તે સાધુનો, મહાદેવનો, રામકૃષ્ણ શ્યા
 દિકનો વેષ લીયે, તેવારેં તેને લોકો પણ જેવો વેષ
 દેખે, તેવું નામ કહી બોલાવે, તે રૂપસત્ય જાણવું.
 ૬ જેમ પાંચ અંગુલમાંહે અનામિકાને દેખી તેની અ
 પેક્ષાયેં મધ્યમા અંગુલી મહોટી કહીયેં થાયેં, એવી મ
 હોટી ન્હાનીની પ્રતીતેં પ્રતીતસત્ય જાણવું. ૭ જેમ
 પર્વત ઉપર ઘાસ કાષ્ઠ બલતાં દેખી પર્વત બલે છે,

એમ કહેવાય, તથા પાણી વાસણમાંથી જવે છે, તેને વાસણ જવે છે, એમ કહેવાય, તે વ્યવહારસત્ય જાણવું. ૬ જેમ પાંચ વર્ણ રંગના છે, તેમાં જે સ્થાનકે જે જે વર્ણના રંગની અધિકતા દેખાય, જેમ ત્રમરમાં પીલાશ તથા લાલાશ છે, તથાપિ કાલા રંગની અધિકતાને યોગે મુખ્યતાયે ત્રમરો કાલો કહેવાય, તે જાવસત્ય જાણવું. ૭ જેમ લિંગના યોગથી લિંગી કહેવાય, તે યોગસત્ય જાણવું. ૧૦ જેમ મહોદું તલાવ દેખીને આ તલાવ સમુદ્ર જેવું છે, એવી ઉપમા અપાય, તે ઉપમાસત્ય. ૯ દશ પ્રકારે જાણાસત્ય છે.

બીજી મૃષા જાણા. તે પણ દશ પ્રકારે કહે છે:—
 ૧ ક્રોધે, ૨ માને, ૩ માયાર્યે, ૪ લોજે, ૫ પ્રેમે, ૬ દ્વેષે, ૭ હાસ્યે, ૮ જયે, ૯ વ્યાખ્યાનવિષે કાંઈક કલ્પિત બોલવું, ૧૦ ચોરને ચોર કહેવાથી તેને ઉપમા તથા. ૯ દશ પ્રકાર મૃષાજાણાના જાણવા.

ત્રીજી સત્યામૃષા જાણા. પણ દશ પ્રકારે કહે છે. આજે આ નગરમાં અટલાં માણસ, મરણ પામ્યાં, અટલાંનો જન્મ થયો, તથા કાંઈક દિવસ ઠતાં પણ કહે કે, રાત્રિ પડી. તથા સૂર્યોદય થયા વિના, ઊઠો જાણ સૂર્ય ઊગ્યો, ઇત્યાદિ મિશ્રજેદે દશ જેદ થાય છે.

चोथी असत्यामृषा जाषा. ते केवल व्यवहार मात्र जे सांची पण नही, अने जूठी पण नहिं ते जाणवी. ए चार प्रकारनी जाषामां सत्य जाषाना कहेनार एवा अने शांत, दांत, धैर्य, औदार्य, गांजी र्यादि गुणोपेत. मित्र शत्रु समचित्त, तृण मणि तुल्य, निःस्पृही, पंचमहाव्रत धारक, ठक्कायना रक्षक, सत्य जापक, सालंबन ठेके गुणगणो वर्त्तता होय, तो पण जावना, सातमा अप्रमत्त गुणस्थानकनी ठे. एवा साधु मुनिराजनां लक्षण पूर्वे महामुनिउये जे प्रमा एं कहां ठे, ते लखीयें ठैये.

श्लोकः॥ चेतोवृत्तिनिरोधनेन करणग्रामं विधायोद्ध शं, तत्संहृत्य गतागतं च मरुतो धैर्यं समाश्रित्य च ॥ पर्येकेन मया शिवाय विधिवत् स्थित्वैकजूनृद्वरी, मध्य स्थेन कदाचिदर्पितदृशा स्थातव्यमंतर्मुखम् ॥ १ ॥ तथा श्रीहेमचंद्रसूरिकृतश्लोकः ॥ वने पद्मासनासीनं, क्रीडस्थितमृगार्जकम् ॥ कदा स्थास्यंति मस्ते मे, च रंतो मृगयूथपाः॥१॥ अर्थः— अहो दुं चित्तनी वृत्तिनुं रो धन करी, इंडियोना विषयनो ध्वंस करी, तथा गतागत वायुनो प्राणायाम करी पर्येक एटले पद्मासने, एक पर्व तनी गुफामां बेसी एकाकी दृढासन, आत्मानुयायी ता

(१५९)

दृश अंतर्दृष्टि करीने क्यारें रहीश !! ॥१॥ तथा महा
अरण्यने विषे पद्मासनें स्थित, एटले स्थिरीनूत थये
ढते, वनचर मृग महारा शरीरें तथा मस्तकें क्यारें आ
रूढ थज्ञे ? तथा केवारें मुऊने मृगजानां टोलां आवीने
परस्पर मुखें मुख चुंबन करज्ञे ? एवा महामुनि योगी
श्वर आत्मानुयायी ते निरंतर अढीढीपने विषे वर्त्ते ढे,
तेमने महारो त्रिविधें त्रिविधें नमस्कार हो.

तथा वर्त्तमाने आ दक्षिण जरतमां बत्रीश हजा
र देश कह्या ढे, परंतु तेमां धर्मनां स्थानक तो मात्र
साडा पचवीश आर्यदेश कह्या ढे, तेमनां नाम त
था ते मध्येनी मुख्य एकेकी नगरीनां नाम कह्यीयें ठैयें.

देश.	नगरी.	देश.	नगरी.
मगध.	राजगृही.	अंगदेश.	चंपा.
वंगदेश.	ताम्रलीति.	कलिंगदेश.	कांचनपुर.
काशी.	वाराणसी.	कोसल.	साकेतन०
कुरुदेश.	गजपुर.	कुशावर्त्त.	सौरिपुर.
पंचाल.	कंपिन्न०	जंगल.	अहिबत्ता.
सोरठ.	धारावती.	विदेह.	मिथिला.
वज्रदेश.	कोसंबी.	शांमिव्य.	नंदिपुर.
मलय.	जदिलपुर.	मत्स्य.	वैराटनगर.

વરુણ. અહ્મ. દશાર્ણ. મૃત્તિકાવતી.
 ચેદિદેશ. શુક્તિમતી. સિંધુસૌવીર. વીતનય.
 શૂરસેન. મથુરા. જંગદેશ. પાવપુરી.
 માસદેશ. પુરીવટ્ટા. કુળાલ. શ્રાવસ્તી.
 લાટ. કોટિવર્ષ. કેકઈચ્છર્ધ. શ્વેતંબિકા.

એ સાડા પચવીશ દેશને વિષે અષ્ટ પ્રવચન માતા
 ના ધારક, પંચ મહાવ્રત પાલક, એવા મુનિ મહારાજ
 પાંચમા આરાના બેહડા પર્યંત વિચરશે. તેમાં બેહેલા
 ડુઃપ્રસહ આચાર્યાદિ ચતુર્વિધ શ્રીસંઘ રહેશે. અને ઠાં
 આરો બેસતાં આ ક્ષેત્રમાં પહેલે પહોરે ધર્મનો વિભેદ
 થશે. એનો વિશેષ અધિકાર, દીવાલીકલ્પ તથા તિહો
 ગાલી પયન્નામાં છે, અને સાડા પચવીશ આર્યદેશનો
 અધિકાર તો આવશ્યકચૂર્ણીમાં છે.

તથા આ પંચમકાલે જરતક્ષેત્રમાં એક બકુશ, બી
 જા કુશીલ, એવા બે પ્રકારના નિર્ઘેય કહ્યા છે, તે મૂ
 લગુણ ચારિત્રને તો દૂષણ ન લગાડે, પણ ઉત્તર ગુણ
 માં કોઈ કોઈ દૂષણ લગાડે, અને નિર્ઘેય, સ્નાતક,
 પુલાક એ ત્રણનો તો આ કાલે વિભેદ છે. એ અધિકા
 ર, શ્રીજગવતીજીના પચ્ચીશમા શતકને ઠેકે ઉદ્દેશે છે.

વલી પાંચ પ્રકારનાં ચારિત્ર કહ્યાં છે. તેમાં પહે

હું સામાયિક ચારિત્ર અને બીજું બેદોષસ્થાપનીય ચારિત્ર, એ બે ચારિત્ર વર્તમાન કાલે છે. અને પરિહારવિશુદ્ધિ, સૂક્ષ્મસંપરાય તથા યથાસ્વાત, એ પાઠનાં ત્રણ ચારિત્ર, તે આ કાલે વિહેદ ગયાં છે, એ અધિકાર, શ્રી દેવાચાર્યકૃત નવતત્ત્વ પ્રકરણની ટીકામાં તથા જગવતીજી અને પન્નવણાજી સૂત્રની વૃત્તિથી જાણવો.

તથા જે મુનિને વ્રતજંગ થયો હોય, તો તેજ વ્રતનું આલોચન લીધે નિર્મલ થાય, કારણ કે એક વ્રતનો જંગ થવાથી કાંઈ પાંચે વ્રત જંગ થતાં નથી, એ આલોચન લીધે શુદ્ધ થવાનો અધિકાર, શ્રીઠાણાંગ સૂત્રમાં છે. તે મજ જીવાનુશાસન સૂત્રવૃત્તિ તથા નિશીથસૂત્રમાં પણ કહ્યું છે, જે મૂળગુણે તથા ઉત્તરગુણે કાંઈક વ્રતને દૂષણ લાગવાથી કાંઈ સાધુનો સંયમ જાય નહીં, જેમાટેં જ્યાં સુધી ઠક્કાયની દયા છે, તથા પ્રાયશ્ચિત્ત એટલે પાપની આલોચના લેવાના પરિણામ વર્તે છે, ત્યાં સુધી તેને સંયમીજ કહીયે. આ કાલમાં બકુશ અને કુશીલ એ બે પ્રકારના મુનિથીજ પાંચમા આરાના બેહડા સુધી શાસન રહેશે. એમ શ્રીઅજયદેવસૂરિયે જગવતીની ટીકામાં પચ્ચીશમા શતકને બેઠે ઉદેશે કહ્યો છે.

તથા શ્રીવિશેષાવશ્યકની ટીકામાં પાંચ અણુવ્રત

(१६१)

नी चञ्जंगी करी ठे. तेमां १ इव्यें हिंसा अने जावें न
थी, २ इव्यें हिंसा नथी अने जावें हिंसा ठे, ३ इव्यें
हिंसा अने जावें पण हिंसा ठे. ४ इव्यें हिंसा नथी,
अने जावें पण हिंसा नथी. ए चोथो जांगो तो सिद्ध
ना जीवोमां पामीयें, पण संसारी जीवोमां न पामियें.

तथा आ पंचम कालें त्रिषष्टिशिलाका पुरुष न
होय, ते तो चोथा आरामांज होय. ते त्रेशतनां ना
म लखुं तुं. १ ऋषभ, २ अजित, ३ संजव, ४ अजि
नंदन, ५ सुमति, ६ पद्मप्रज ७ सुपार्श्व, ८ चंद्रप्रज, ९
सुविधि, १० शीतल, ११ श्रेयांस, १२ वासुपूज्य, १३
विमल, १४ अनंत, १५ धर्म, १६ शांति, १७ कुंथु,
१८ अर, १९ मल्लि, २० मुनिसुव्रत, २१ नमि, २२
नेमि, २३ पार्श्व, २४ श्रीवर्द्धमान. ए चोवीश तीर्थक
रनां नाम कहां. तथा १ जरत, २ सगर, ३ मघवा,
४ सनत्कुमार, ५ शांति, ६ कुंथु, ७ अरनाथ, ८
सुनूम, ९ महापद्म, १० हरिषेण, ११ जय, १२ ब्र
ह्मदत्त, १३ बार चक्रवर्तिनां नाम कहां. तथा १ त्रिष्ट
ष्ठ, २ द्विष्टष्ठ, ३ स्वयंभु, ४ पुरुषोत्तम, ५ पुरुषसिंह,
६ पुरुष पुंफरीक, ७ दत्त, ८ नारायण, ९ कृष्ण. ए
नव वासुदेवनां नाम कहां. तथा १ अश्वघ्रीव, २

(१६३)

तारक, ३ मेरक, ४ मधुकैटज, ५ निशुंज, ६ बली, ७ प्रल्हाद, ८ रावण, ९ जरासंध, १० नव प्रतिवासुदेवनां नाम कहां। तथा १ अचल, २ विजय, ३ जड, ४ सुजड, ५ शुद्धशील, ६ आनंद, ७ नंदन, ८ रामचंद्र, ९ बलजड, १० नव बलदेवनां नाम कहां। एम चोवीस तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलदेव मली त्रेशठ थया।

तथा चक्रवर्तीने पुण्योदयें करी चौद रत्न प्रगट थाय, तेनां नाम कहे ठे:— एक सेनापति, बीजो गाथापति कौटुंबिक ते सर्वजातिनां धान्य, घृत, प्रमुख तेना स्वाधीनमां रहे ठे, त्रीजो पुरोहित ते शांतिकर्म करे, चोथुं गजरत्न, ते मस्तकें मणिरत्न बांधी तिमिरा गुफामां प्रथम प्रवेश करे, पांचमुं अश्वरत्न ते गुफाना बारणां खडखडावे अने पाठे पगें बार योजन चाले, ते अश्व विना बीजो अश्व होय, तो गुफानी बाफथी कोणीकनी पेरें मरण पामे, ठहुं वार्धिक रत्न, ते सूत्रधार कर्म करे, निमग्रा नदी प्रमुखना पुल बांधे, सातमुं स्त्रीरत्न, ते चक्रवर्तीनां शरीर साथें जोगमां आवे, ते विना बीजी चोशठ हजार स्त्री, तथा सवा लाख पिंम विलासिणी स्त्री होय, ए सात पंचिंइय रत्न जाणवां।

तथा १ चक्ररत्न ते एक वाम प्रमाण होय, ते सर्व शत्रुजनो ह्वय करे, तेने एक हजार अधिष्ठायक देव होय, बीजुं ठत्र रत्न पण एक वाम प्रमाण होय, त्रीजुं चर्मरत्न बे हाथ प्रमाण होय. इहां एटलुं विशेष जे ठत्ररत्न तथा चर्मरत्न ए बेहुने जेवारें चक्रवर्तिना हाथनो स्पर्श थाय, तेवारें विस्तार पामतां बार योजन सुधी पसरें, वली चर्मरत्न उपर पहेले पहोरे शालि वावे, ते शालि पाठले पहोरे जमवामां काम आवे, चोथुं मणिरत्न ते चार अंगुल लांबु अने बे अंगुल पहोलुं ठतां बार योजन सुधीमां प्रकाश करे, पांचमुं कांगणिरत्न ते आठवो वार्षिकि प्रमाण होय ते गुफामां प्रकाश करे, अने सर्व प्रकारना विषने हरण करे, तथा चक्रवर्ती ते रत्ने करीने गुफामां उंगण पच्चाश मांमलां आलेखे, ठहुं खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण होय, सातमुं दंम रत्न, ते एक वाम प्रमाण होय. एक हजार योजन नूमिकानुं विदारण करी उंहुं जाय. ए सात एकेंडिय रत्न कह्यां. तेनी साथें पूर्वोक्त सात रत्न मेलवतां चौद थयां. ते चौदे रत्न प्रत्येकें एकेक हजार यद्द देवें करी अधिष्ठित होय. तथा वासुदेवने सात रत्न होय. तेनां नाम कहे

(१६५)

ढे:-१ चक्र, १ खड्ग, ३ मणि, ४ शार्ङ्ग धनुष्य, ५ मा
ला, ६ गदा कौमोदिकी, ७ पांचजन्य नामें शंख ॥ इति ॥

हवे चक्रवर्तिना नव निधान कहे ढे:-पहेला
नैसर्पिनामा निधानथी ग्राम नगरादि स्थापन अने
तेने फरता कोट किछा वाडी प्रमुख आय, बीजो पां
हुक नामा निधान ते सर्व वस्तुनी गणितविद्या तथा
राग रागिणी अने चोवीश जातिना धान्यनी उत्प
त्तिनुं कारण आय. त्रीजा पिंगलक नामा निधानें
करी पुरुष स्त्री तथा गज अश्व प्रमुख सर्वनां आज्ञ
रण उत्पन्न आय, चोथो सर्व रत्न निधान तेनाथी
चक्रवर्तीनां महोटां प्रधान चौद रत्न प्रगट होय, पां
चमा महापद्म निधानथी सर्व प्रकारनां वस्त्र तथा
तेना रंग तथा तेने धोवानो विधि अने त्रांबा प्रमुख
साते धातु ते सर्व आय, षष्ठा कालनामा निधानथी
तो समस्त कालज्ञान, ज्योतिष संबंधि ज्ञान, तथा व
र्त्तमान चोवीशीना तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासु
देव, ए सर्वना वंशनुं कहेवापणुं, वर्त्तमान वर्षमां
जे थयुं तथा याशे, तेनुं कहेवा पणुं तथा लोहखंरु,
चित्र, वस्त्र, नापिक, शिला ए पांचना वीश जेद ढे
ते, तथा व्यापार, वाणिज्य, ए सर्व ए निधानथी

कहेवाय, सातमो महाकाल निधान ते अनेक प्रकारें लोह, रूपुं, सोनुं, मणि चंङ्कांतादि, मोती, शिला स्फाटिक, प्रवालां, ए सर्वनो प्रगट करनारुं थाय, आठ मो माणवक निधान, ते शूरवीर योद्धा पुरुष तथा सर्व जातिनां शस्त्र आयुध, तथा साम, दान, जेद अने दंभ, ए चार प्रकारनी राजनीति, ए सर्वनी उत्पत्ति करनारुं थाय, नवमो शंख नाभें निधान ते सर्व प्रकारना जरतादिक नाटक तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश अने संकीर्ण ए चार प्रकारें काव्य तथा गद्यबंध पद्यबंधनुं आवडवुं, अने सर्व प्रकारना वाजिप्रीति प्राप्ति करनारुं थाय. ए नव निधाननुं विशेष वर्णन श्रीगणेश सूत्रने विषे कयुं ठे. वली चौद रत्ननो अधिकारं, तो महात्माउयें शास्त्रांतरथी जाणवो. ए शिलाका पुरुष, चौद रत्न, नव निधाननी रुद्धि ते आ जरत क्षेत्रमां पांचमे आरे न पामियें. ए तो ते कार्लेज पामीयें ॥ इत्यर्थः ॥

तथा श्रीजंबुचरित्रमां जंबुस्वामी मोक्ष गया पढी दश वस्तु विभेद गइ, तेनां नाम कहे ठेः—१ मनःपर्यवज्ञान, २ परमावधिज्ञान, ३ पुलाकलब्धि, ४ आहारक शरीर, ५ ह्यायिक सम्यक्त्व, ६ अगीयारमं उ

પશાંતમોહ ગુણગણું, ૭ જિનકલ્પ માર્ગ, ૮ સંયમ ત્રિક એટલે મન,વચન અને કાયાયેં ચારિત્ર લેવું, એ કેવલજ્ઞાન, ૧૦ મોહમાર્ગ, એ દશ વાનાં વિભેદ ગયાં છે.

ચોથો આરો એક કોડાકોડી સાગરોપમમાં બેહેં તાલીશ હજાર વર્ષ ન્યૂન છે. તેમાં એકવીશ હજાર વર્ષનો પાંચમો આરો અને એકવીશ હજાર વર્ષનો ઠ છો આરો, એમ બેહેંતાલીશ હજાર વર્ષ પૂર્ણ થયાં, હ બે ત્રીજા આરાના શોષ નેવ્યાશી પદ્ધ રહ્યા, તેવારેં શ્રીકૃષ્ણદેવ મોહ ગયા, અને શ્રીમહાવીર જગવાન્ તો ચોથા આરાના નેવ્યાશી પદ્ધ રહ્યા તેવારેં મોહ ગયા. તે શાસન નાયક શ્રીવીર મોહ ગયા પછી ચો રાશી હજાર વર્ષ ગયે થકે ઉત્સર્પિણી કાલનો ત્રી જો આરો તેના નેવ્યાશી પદ્ધ શોષ રહે થકે, શ્રીશ્રે ણિકરાજાનો જીવ, તે પદ્મનાભ એવે નામેં પ્રથમ તીર્થ કર થશે. અને આ પાંચમા આરાના અંત સુધી ચતુર્વિધ શ્રીસંઘ જિનશાસન વર્તશે.

વલી આ નરતદ્વેત્રમાં પંચમ કાલેં શ્રીજિનનાપિ ત સૂત્ર તથા દશ પૂર્વીનાં કહેલાં સૂત્ર, વલી સુવિદિ ત પૂર્વાચાર્યનાં રચેલાં સૂત્ર તેનો અતિ ગંજીર ઝંમો આશય સમજવો ઘણોજ કઠિણ છે. માટેં હે જવ્ય !

શ્રીજિનશાસનની શૈલી સ્યાદ્વાદ ઉત્સર્ગ અપવાદ રૂપ છે, તેમાં સૈજ સાજ વાત વાતમાં શંકા ન કરવી. કારણ કે શ્રીવીર નિર્વાણથી ૫૮૫ વર્ષે શ્રીઆર્યરક્તિ આચાર્ય થયા, તેમણે સાડા નવ પૂર્વ જણી મુશ્વપાતે કહ્યાં, તેમને ઇન્દ્રમહારાજે વૃદ્ધ બ્રાહ્મણનું રૂપ કરી નિગોદનું સ્વરૂપ પૂછ્યું. તથા હવે મહારું આયુષ્ય કેટલું છે? એવું પણ પૂછ્યું. તેવારે આચાર્યે ઉપયોગ દેશ વિચાર્યું, જે આ જરતક્ષેત્રમાં પાંચમે આરે શો વર્ષથી અધિક તો હોય, બીજી વાર ઉપયોગથી વર્ષો વર્ષ, એમ ત્રીજી વાર ઉપયોગ દેશ વિચાર્યું જે કોઈ દ્વીપ, સ્વંમ, ક્ષેત્ર તથા કોઈ જીવ આશ્રયી ત્રણજો વર્ષથી અધિક આયુ આ જરતક્ષેત્રમાં પાંચમે આરે નિશ્ચે ન હોય. એમ ન્યૂનાધિક જે કોઈ વ્યવહારનયને મતેં વદુજતાયેં વચન છે. કોઈ ટેકાણેં નિશ્ચય નયને મતેં સૂક્ષ્મ વચન છે, એ બન્ને વચનની વ્યાખ્યા એક વચનેં સમુચ્ચય ન થાય. તે તો અનુક્રમેં એક પછી બીજું વચન કેડાવેડેં કહેવાય. માટે અનેકાંત છે. પરંતુ શ્રીજિન નાષિત વચન એકાંત નથી તેથી એમાં જે શંકા કરવી તે મિથ્યા છે. એ કથાનક આવશ્યકસૂત્રના સામાયિક અધ્યયનની ઉપોદ્ધાત નિર્યુક્તિમાં છે.

(૧૬૯)

તથા બહુલતાયે સૂત્રકારે લખ્યું છે, જે સર્વ તારાના વિમાન મેરુ પર્વતને પ્રદક્ષિણા કરે છે, એ વચન પૂજ્ય શ્રીજિનજડગણિ ક્ષમાશ્રમણે વિશેષ એવતી ગ્રંથમાં કહ્યું, તે પ્રમાણ છે. તથા મહોટી સંઘયણમાંહે તો સપ્તરુષિ નામાદિ જે તારા છે, તે તો ધૂતારાનેજ પ્રદક્ષિણા આપે છે, પણ મેરુને પ્રદક્ષિણા નથી આપતા. એવું લખ્યું છે, તે વચન પણ સત્ય છે, પણ એ વચન બહુલતાયે નથી ॥ ૬૨૪૯ ॥

તેમાટેં હે નવ્યજીવો ! શંકા કાંઠાદિ દૂષણેં રહિત પરમહિતકારી, આ લોક પરલોક સુખકારી, સ્વર્ગ પવર્ગ દાયક એવોજે જિનધર્મ, તેનું આરાધન તે પૂર્વેં કહ્યું છે, તેમ સાધુમુનિરાજ તથા શ્રાવકનેં ધર્મ આરાધન અર્થેં નિરુપાધિક, એકાંતસ્થાનેં, સ્થિર આસનેં, તથા ઝના રહીને ઉત્તર અથવા પૂર્વ સન્મુખ કમલવંધ ધ્યાન પંચ પરમેષ્ઠિનું કરવું તે કહું હું. આઠ પાંચડીનું કમલ હૃદયને વિષે ચિંતવે, તિહાં મૂળ મધ્ય કર્ણિકામાં તો શ્રીઅરિહંત પદ, અને પૂર્વ દિશિની પાંચડીમાં સિદ્ધપદ, દક્ષિણ પાંચડીમાં આચાર્યપદ, પશ્ચિમ પાંચડીમાં ઉપાધ્યાય પદ, ઉત્તર પાંચડીમાં સાધુપદ, બાકી જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપ, એ ચાર ચૂલિકાનાં પદ, તે

अनुक्रमें अग्नि कोणथी चार विदिशियें थापे. एम
 अष्टकमल दंलनुं हृदयने विषे ध्यान करे, ते श्रीहेमा
 चार्यकृत योग शास्त्रना आठमा प्रकाशमां कह्युं ठे.
 ॥ श्लोक ॥ अष्टपत्रे सितांजोजे, कर्णिकायां करस्थि
 तः ॥ आद्यं सप्ताक्षरं मंत्रं, पवित्रं चिंतयेत्ततः ॥ १ ॥
 पूजाकोटिसमं स्तोत्रं, स्तोत्रकोटिसमो जपः ॥ जप
 कोटिसमं ध्यानं, ध्यानकोटिसमो लयः ॥ २ ॥ ए
 ध्यान जे ठे, ते आत्माने इहलोक परलोकें सुखदाय
 क परंपरायें मोक्ष सुखनुं देवावाळुं ठे.

तथा साधुने अने श्रावकने उत्कृष्टथी दिनप्रत्ये
 सात चैत्यवंदन करवां, ते कहे ठेः—एक प्रजातने प
 ढिक्रमणे, बीजुं जिनमंदिरमां, त्रीजुं आहार कखा
 पहेलां, चोथुं देवस चरिम पञ्चस्काण करती वखतें,
 पांचमुं देवसी पढिक्रमणे, षष्ठुं सूती वखतें अने सातमुं
 सुशने उठे ते वखतें करे. एम महानिशीथ सूत्रें कह्यो ठे.

॥ तथा चार अनुष्ठान कह्यां ठे, ते कहे ठे. एक प्रि
 ति सहित करवुं, ते प्रीतिअनुष्ठान, बीजुं नक्ति सहि
 त ते नक्ति अनुष्ठान, त्रीजुं वचन प्रमाण बहुमान
 पणुं ते वचनानुष्ठान, चोथुं निरालंबन क्रिया रहित
 ते असंगानुष्ठान, ए चार विना धर्मारधन थाय नही.

॥ તથા યોગશાસ્ત્રમાં ગુરુ આવે, બેઠાં થવું, શાતા પૂઠવી. બેસવાને આસન આપવું, આહારાદિ વસ્તુની નિમંત્રણા કરવી, ઇત્યાદિ ગુરુ નક્તિ વિશેષ પ્રકારેં કરે, તે જીવ, પરમપદ પ્રત્યેં પામે.

॥ તથા હરિન્નિઙ્સૂરિયેં પાંચમા અષ્ટકમાં નિહ્ના ત્રણ પ્રકારેં કહી ઢે. પ્રથમ મુનિની નિહ્ના, તે સર્વસત્કરી મહાશ્રેષ્ઠ ઢે, બીજી પુરુષવિગ્નકરી નિહ્ના તે સાધુ વૈંષ તથા ગૃહસ્થાવસ્થામાં લષ્ટ પુષ્ટ થકા માગી ખાવું એમ સાધુગુણરહિત નિહ્ના તે આત્માને વિગ્નકારી જાણવી, પણ સારી નહી. કેમ કે ? શ્રાવક પણ પ્રતિમાધારી વિના નિહ્ના માગી ખાય તે નિહ્ના મહાહુષ્ટ, ધર્મની હેલ ના કરનારી જાણવી. જેણેં પૂર્વજ્ઞા જવમાં જિનાઙ્ગા સ્વંમિત કરી હોય, તેનું ફલ માગી ખાવું ઢે. ત્રીજી વૃત્તિનિહ્ના તે જેના કુલપરંપરાયેં ચાલી આવેલી જેમ બ્રાહ્મણાદિક તથા આજીવિકા રહિત ગૃહસ્થ આંધલો, પાંગલો, રોગી પ્રમુખ હોય તે નિહ્ના માગી ખાય, તે આ જીવિકાવૃત્તિનિહ્ના જાણવી.

॥ વલી જેના કુલમાં એક જણ પણ સાધુ મુનિરાજ થયો હોય, તે કુલ મહા ઉત્તમ પુણ્યવાન્ જાણવું. એવું શાસ્ત્રમાં કહ્યું ઢે. શ્લોક ॥ તાવદ્ વ્રમંતિ સંસારે,

પિતરઃ પિંમકાંદ્રિણઃ ॥ યાવત્કુલે વિશુદ્ધાત્મા, યતિઃ
પુત્રો ન જાયંતે ॥૧॥ ઇતિ શ્રીમદ્ પ્રવર પંમિત પંન્યા
સગણિ શ્રીસૌનાગ્યવિજયજી તઙ્ગિષ્ય પંન્યાસ શ્રીપ્ર
તાપવિજયજી તઙ્ગિષ્ય પંન્યાસ શ્રીહીરવિજયજી તઙ્ગિ
ષ્ય મુનિશ્રી મયાવિજયજી વિરચિત શાસ્ત્રરહસ્યપ્રકા
શે દ્વિતીયવર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

॥ અથ તૃતીયવર્ગ પ્રારંભઃ ॥

॥ એ વર્ગમાં એક શ્રીજૈનદર્શન વિના શેષ જે પાં
ચ દર્શન છે, તે એકાંતનયમતવાદી છે, માર્ટેં તેનું સ્વ
રૂપ કિંચિત્ લખિયેં ઠેયેં.

॥ પ્રથમ બૌદ્ધદર્શનનું સ્વરૂપ કહે છે. એનું બીજું
નામ સૌગતમત છે. એ મૂલ મત તો એવું છે, જે તે બૌ
દ્ધો આત્માને ક્ષણ જંગુર માને છે, કેમ કે પર્યાયનેજ
મૂલ સત્તા જીવ કરી માને છે. જેવારેં પર્યાયનો વ્યય
થાય, તેવારેં જીવનો પણ વ્યય થાય અને નાશ થાય.
અને નવો પર્યાય ઉત્પન્ન થાય, તેવારેં નવો જીવ ડ
પજે. એવી પર્યાય બુદ્ધિ વાલો એકાંતમતિ મિષ્યાત્વી
જાણવો. કારણ કે એણે મૂલ સત્તાયેં આત્મા અસ્વંમ
અવિનાશી રૂપ જીવ છે, તેને જાણ્યો નહીં માર્ટેં એમને
મતેં આત્માને બંધ મોક્ષ સુખ દુઃખ કાંઈ ઘટતું નથી,

केम के पर्यायनुं समय समय विणसवुं थाय ठे, ते वारें आगलो जीव नाश पामे ठे, अने नवो पर्याय उपजे तेवारें नवो जीव आवे, तो क्रिया व्यापार पण एक जीव करे, ने बीजो जोगवे. एम अनवस्थि त पणुं थाय ठे. पण कोइ प्रमाण ठरतुं नथी, ते प्रत्यक्ष प्रमाणें एटलुं देखता नथी के कोइ वृद्धनुं एक पुष्प नाश थवाथी कांइ संपूर्ण वृद्धनो नाश थतो नथी ? तथा वली बीजो दृष्टांत कहीयें ठैयें. जेम के, कोइ साहुकारें कोइ व्यापारीने एक लाख रुपैयानी रक. म उधारी आपीने पांच दिवस पढी ते रुपैया पाठा लेवा जाय तो ते रुपैया साहुकारने पाठा मलवा न जोइयें, कारण के एमने मतें समय समय जीव मरण पामे ठे. तो रुपैयानो देनार तथा लेनार ए बे तो मरण पामी गया. हवे कोण आपे, ने कोण ली ये ! माटे ए मतप्ररूपक पण डुष्ट डुर्बुद्धिना धणी डुर्गति जावावाला समजवा ॥ इति बौद्धदर्शनम् ॥

१ बीजुं नैयायिकमत एनुं अपर नाम योगमत पण कहे ठे. तेमज त्रीजुं वैशेषिक दर्शन ते पण नैयायिकनेज मलतुं ठे. पण एटलुं विशेष ठे के, ते प्रत्यक्ष अने अनुमान ए बे प्रमाण माने ठे, अने नै

યાયિક મતવાલા પ્રત્યક્ષ, અનુમાન, ઉપમાન અને શબ્દ, એ ચાર પ્રમાણ માને છે. પણ બીજું વર્તન સર્વે નૈયાયિક અને વૈશેષિકનું એક સરખુંજ છે, તે માને છે કે, આ જગતની સ્થિતિ, उत्पत्ति, વિનાશ, એ સર્વ નો કર્તા પુરુષ ईश्वर છે, કેમ કે કર્તા વિના આનું જગત્સ્વરૂપ કેમ બને ? એવું તેમનું મત છે. પણ તે અસત્ય છે. કેમ કે, તેમને પૂછીએ જો તમે ईश्वરને કર્તા કહો છો, તો તમે પોતે તો જડરૂપ છો. તમારે મતે તો સર્વ સત્તા માત્ર જ્ઞાન, વિજ્ઞાન, પુણ્ય, પાપ, એ સર્વ કર્તાને હાથ છે, તેવારે તમો શુનાશુન કરણી કષ્ટ ક્રિયા કરો છો, તે વ્યર્થ જાય છે. માટે એ કરવાનું કાંઈ કારણ નથી ? કેમ કે, એનું ફલ તો કર્તાને હાથ છે, તેવારે ફોકટ કષ્ટ શા વાસ્તે કરો છો ? વળી તમારે મતે તો જીવાદિ પદાર્થ સર્વને કર્તાએ નવીન કર્યા છે. તેવારે પૂર્વે તો કાંઈ પણ નજ હતું, એવું તથ્ય છે. તે રીતે જોતાં તો નવિન કર્ત્રિમ પદાર્થનો અવશ્ય નાશ પણ થવો જોઈએ. તેથી પૂર્વ કર્તાએ જે રચના કરી, તે સર્વ વૃથા થઈ જાય. વળી કર્તાએ આ સૃષ્ટિની નવીન રચના કરી તો, તેથી આગલ આ સૃષ્ટિ નહોતી જોઈએ. તો પ્રથમ શું હતું ? તે કહો. વળી કર્તાએ

(१७५)

नवीन रचना करी, तेवारें आ जीवादि सर्व पदार्थ
क्यां पड्या होता. के ज्यांथी लावीने आ सृष्टि बना
वी? वली तमें तमारा न्याय शास्त्रमांज कहो ठो के,
सात पदार्थ तथा नव इव्य तो सदा सर्वदा शाश्वता
ठे, तेनो तो कोश्वारें नाश थतोज नथी, तेवारें कर्ता
पुरुषें वली क्या नवीन पदार्थनी रचना करी, ते दें
खाडी आपो? युक्तियें विचारतां तो तमाराज कहे
वा प्रमाणें कांइ पण नवीन रचना करी संजवती न
थी. कर्ता जोक्ता सर्व पोतें पोतानो आत्माज ठे, अने
ए सर्व वस्तु पण स्वजावें अनादि अनंत ठे. ए सर्वज्ञ
वचन सिद्ध ठे. शास्त्रमां कहुं ठे के ॥ श्लोक ॥ यः
कर्ता कर्म जेदानां, जोक्ता कर्मफलस्य च ॥ संसक्ता
परिमिर्धृक्ता, स ह्यात्मा नान्यलक्षणम् ॥ १ ॥

॥ तथा श्रीजागवतना एकादशस्कंधना अष्टावीश
मा अध्यायने विषे श्रीजगवानें उद्भवजी प्रत्यें उपदे
श करेलो ठे के ॥ श्लोक ॥ शोक हर्ष जय क्रोध, लोभ
मोह स्पृहादयः ॥ अहंकारस्य दृश्यंते, जन्म मृत्युश्च
नात्मनः ॥ १ ॥ जावार्थः— हर्ष, शोक, जय, क्रोध, त
था इंडिय जनित विषयादि सुखनी वांठा, अने अहंका
र ममकार तथा जन्म अने मरण इत्यादि जडजा

વ વિનાવ પુજલદશા એ સર્વ પદાર્થમાં અત્માના ઘર નું કાંડ નથી. એ વચનથી જે સૃષ્ટિની રચના કરવી, તે તો સર્વ જડનાવની રચના કરી કહેવાય. એવી રચના જગવાન જ્યોતિ સ્વરૂપીને કરવી ઘટે નહીં !

તથા શ્રીજગવજીતામાં કહ્યું છે ॥ શ્લોક ॥ યથૈધાંસિ સમિદોગ્નિ, જૈસ્મ સાત્ કુરુતેઽર્જુન ॥ જ્ઞાનાગ્નિઃ સર્વકર્માણિ, જસ્મસાત્ કુરુતે તથા ॥ ૧ ॥ જાવાર્થઃ—શ્રીજગવાન કહે છે, કે હે અર્જુન ! જેમ અગ્નિ જ્વલિત કાષ્ટને જસ્મ કરે છે. તેમ જ્ઞાનરૂપ અગ્નિ તે સર્વ કર્મોને બાલો જસ્મ કરે છે. એ વચનથી આત્મા પોતેજ કર્મોનો કર્તા તથા હર્તા જણાય છે. વલી પુરાણમાં કહ્યું છે. કે આ શરીર છે તેજ હું બું. એમ દેહનેજ આત્મબુદ્ધિયે આત્મા માની લીધો છે, તે તથા વેદની શ્રુતિમાં પણ કહ્યું છે, કે જે દેહાન્નિમાની જીવ છે, તેનેજ સર્વ દોષ ઉત્પન્ન થાય છે, તેના સરખો કોઈ પાપી નથી, તેના શિર ઉપર એક કોટિ ગોવથ કરવાનું પાપ ચડે છે, અને જેને આત્મબુદ્ધિ છે, કે હું સચ્ચિદાનંદ આત્મારામ અશ્વંદ અવિનાશી બું. અને આ સંસારસુખ જડરૂપ ઇન્દ્રિયજનિત છે. તે મહારૂં સ્વરૂપ નથી. એવી બુદ્ધિ જે પુરુષની છે. તે પુરુષ, મહોદું પુણ્યાનુબંધી પુણ્યવાન કહ્યો છે ॥ શ્લોક

ક ॥ દેહાત્મબુદ્ધિજં પાપં, ન તદ્ગોવધકોટિજિઃ ॥ આ
ત્માહંબુદ્ધિજં પુણ્યં, ન જૂતં ન જવિષ્યતિ ॥ ૧ ॥ માટે
મનાદિ જે તત્ત્વ છે, તે સર્વ જડ રૂપ છે, તેનો જે આ
ત્મા સાર્યે સંયોગ તે પરવસ્તુસંયોગ જાણવો. કેમ
કે, તે પદાર્થ સર્વ રૂપી છે, અને આત્મા તો અરૂપી છે.
માટે જેમ સુવર્ણમાં કુધાતુનો મેલાપ તેની પરેં એ
આત્માને કલંક રૂપ છે, જ્યાં સુધી એ વિજાવ છે, ત્યાં
સુધી મુક્તિ નજ હોય. એ અધિકાર વિસ્તારેં ન્યાયશા
સ્ત્રમાં કહ્યો છે. ઇતિ વૈશેષિક દર્શનમ્ ॥

હવે ચોથું સાંખ્ય દર્શન કહે છે:—એ મતના સાધુ
ત્રિદંત્રી થાય છે, પાણી ગલીને પીયે છે, તેડ કહે છે,
કે એક જલબિંડુમાં ઘણા જીવ છે, જો તે જીવોના
ઘમરા જેવડા મહોટાં શરીર કરીયેં, તો ત્રણ લોકમાં
સમાય નહીં. એટલા જીવ એક જલબિંડુમાં છે, એવું
તે માને છે. એનું બીજું નામ પાતંજલ પણ કહેવાય છે.
એ સાંખ્ય દર્શનના બે જેદ છે. એક પ્રાચીન બીજું નવી
ન. તેમાં પ્રાચીન તો ઈશ્વર માનતા નથી, અને નવીન
માને છે, એ સાંખ્ય મતનું મૂળ કપિલાદિ આચાર્ય
છે. તે પચ્ચીશ તત્ત્વ માને છે. એમના આચાર્યનો કરે
જો સાંખ્યસપ્તતિ નામેં ગ્રંથ છે, તેમાં પ્રકૃતિનો વિ

ચાર ઘણો કહ્યો છે. તથા તેમાં પ્રત્યક્, અનુમાન અ
ને શબ્દ, એ ત્રણ પ્રમાણ કહ્યાં છે, તથા પ્રકૃતિની સં
ખ્યા કરી છે, માર્ટે સાંખ્ય એનું નામ છે ॥ ઇતિ સાંખ્ય ॥

પાંચમું મીમાંસક દર્શન કહે છે:—એનું બીજું નામ
જૈમિનીય પણ છે. તેમના મતમાં સંન્યાસી બ્રાહ્મણ
પ્રમુખ થાય છે. તે એક દંત્રી તથા ત્રિદંત્રી થાય છે.
મૃગચર્મનું આસન કરે છે, રક્તવસ્ત્રલિંગ ધારણ કરે
છે, અને તેમના ગુરુ તો કેવલ એક વેદજ છે, વેદ વિ
ના બીજા કોઈ પુરુષનો ઉપદેશ તેમનામાં નથી. તથા
એના એક પૂર્વ મીમાંસક, બીજો ઉત્તર મીમાંસક એવા
બે જેદ છે. એ મતમાં જે પરમહંસ થાય છે, તેતો ચારે
વર્ણના ઘરનું અન્ન જમે છે. તે ઉત્કૃષ્ટ સાધુ કહેવાય
છે; અને બીજા બ્રાહ્મણના ઘરનું અન્ન જમે છે. તથા
એમાં જે પાંચ પ્રમાણના માનનારા છે, તે પ્રાજાકર ક
હેવાય છે, તથા જે ઠ પ્રમાણ માને છે, તે જાટ કહે
વાય છે. એમ એના બે જેદ છે, એ વેદુને વેદનું ગ્રહણ છે.

આંહી વેદની ઉત્પત્તિ કેવીરીતે અને ક્યાંથી ચા
લી? તેનું સ્વરૂપ જેમ પૂર્વાચાર્યે કહ્યું છે, તેમ હું કાંશ્ક
કહું બું. જે માર્ટે વૃહદારણ્યક ઉપનિષદના જાણ્યમાં
લખેલું છે, કે યજ્ઞ હોમાદિના કહેવા. વાજા તે યજ્ઞ

(१ ७ ९)

वल्क्य ठे, तेनो पुत्र याज्ञवल्क्य थयो. एज प्रमाणें व
ली ब्राह्मणोना शास्त्रमां पण कहेलुं ठे, के पूर्वली ब्रह्म
विद्या त्यागीने सूर्य पासें नवीन ब्रह्मविद्या चलावी,
ते उपरथी पण एमज जणाय ठे, के पूर्वला वेद न
थी, ए वर्तमान कल्पित वेद जे यज्ञ होमादिकना उ
पदेशक ठे, ते याज्ञवल्क्यथीज चालेला संजवे ठे.

तथा वली त्रिषष्टिशिलाका पुरुष चरित्रना आठ
मा पर्वने बीजे सगें कह्युं ठे, जे काशीपुरीमां एक सु
लसा अने बीजी सुजडा एवे नामें बे संन्यासिणीयोर
हेती हती, ते बेदु बेहेनो हती, अने वेदशास्त्रनी पारंगत
हती, तेणीयें घणा एक वादी विद्वानोने जीती निरुत्तर
कखा, ते अवसरें याज्ञवल्क्य परिव्राजक पण ते संन्या
सिणी सार्थें वाद करवा आव्यो, अने वादकरतां एवो बं
दोबस्त कखो के, आपणे बेदुमांथी जे हारी जाय, ते जी
तवावालानी सेवामां रहे. एवी प्रतिज्ञा थया, पठी याज्ञ
वल्क्यें सुलसाने जीती लीधी, तेवारें सुलसा, ते या
ज्ञवल्क्य परिव्राजकनी सेवा करवामां तत्पर रही,
परंतु बेदुजण तरुण अवस्थावालां हतां, तेथी वि
षयसुख जोगववा लाग्यां, तेने योगें सुलसाने पुत्र
प्राप्ति थइ. ए अकार्य करवाथी लोक, तेमनी घणी

જ નિંદા કરવા લાગ્યા, તેથી લજ્જા પામીને એક પીપલાના વૃક્ષ નીચેં બાલકને નાચી દેશ્ને બેઠુજણ તિહાંથી નાશી ગયાં, એ વાત તે સુલસાની બેહેન જે સુજડા હતી, તેને જાણવામાં આવી; તેવારેં સુજડાયેં તે ઠોકરાને પીંપલાના વૃક્ષની નીચેથી ડપાડી પો તાને ઘેર લાવી પ્રતિપાલન કરીને મહોટો કહ્યો, અને પીપલને તલેથી ડપાડ્યો માટે પિપ્પલાદ એવું નામ રાખ્યું. અનુક્રમેં તે પિપ્પલાદ વેદ શાસ્ત્ર જાણીને લોકોમાં પ્રસિદ્ધિ પામતો ઘણા વાદીયોને જીતવા વાલો થયો, તેવારેં સુલસા અને યાજ્ઞવલ્ક્ય એ બેઠુ જણ તેની સાર્થેં વાદ કરવા આવ્યા, તે વચ્ચેં પિપ્પલાદેં પ્રણ પોતાની સુજડા માશીના કહેવાથી જાણ્યું, જે આ વાદ કરવા આવ્યા છે, તે મહારાં માતા પિતા છે, અને મુઝને પ્રસવીને બાલ્યાવસ્થામાંજ પિંપલાના વૃક્ષ નીચેં નાચી ગયા છે, માટે એમને હું પૂર્ણ શિક્ષા આપું! એવું ચિંતવી માતા આગલ માતૃમેધ યજ્ઞ અને પિતા આગલ પિતૃમેધયજ્ઞ કરી દેવ થવાની આશા દેખાડી નિર્દયપણે બેઠુ જણને યજ્ઞમાં હોમાવી દીધા, તે દિવસથી માતૃમેધ, પિતૃમેધ, અશ્વને હોમવો તે અશ્વમેધ, બોકડાને હોમવો, તે અજામેધ. સ્ત્યાદિ.

મહા અનર્થકારી જીવહિંસા કરવાના યજ્ઞ ચાલુ થયા. એ મીમાંસક મતના મુખ્ય આચાર્ય પિપ્પલાદ થયા, પઠી તેના શિષ્ય બાતલી નામે થયા. એ રીતે યાજ્ઞવલ્ક્યથીજ આ જીવહિંસા ચાલેલી જણાય છે, પરંતુ શ્રીતીર્થંકર નાષિત વેદ તો એ નથી. આ જીવહિંસાયુક્ત વેદ તે સર્વ નવીન કલ્પિત કરેલા જણાય છે; વલી શ્રીઆવશ્યક સૂત્રમાં પણ લખ્યું છે કે, જીવહિંસા ચાલી તે સર્વ યાજ્ઞવલ્ક્યથી ચાલી છે; અને વેદના ઉપનિષદોમાં પણ પિપ્પલાદનું નામ છે. તેમજ બીજા ઋષિયોનાં પણ કેટલીએક જગાયેં નામ છે. વલી જમદગ્નિ કશ્યપનું નામ તો મુખ્ય છે, માટે એ નવીન કલ્પિત વેદ બનેલા છે, એ વાતમાં કાંઈ શંકા નથી.

તથા વલી ઋગ્વેદમાં “ અર્જૈર્યષ્ટવ્યમિતિ વંચનાત્ ” એ વેદશ્રુતિનો જૂઠો અર્થ કરીને નિર્દય પણે ઠાગ બોકડા પશુને અગ્નિમાં હોમી તેમનો વધ કરીને કહે છે, કે અમે એમને સ્વર્ગ પહોંચાડીયેંઠેયેં ! એ પણ કલ્પિત અર્થ કરે છે, પરંતુ એ શ્રુતિનો અર્થ એમ નથી, તે ઉપર કથા કહું બું.

એક દિવસ, બ્રાહ્મણોયેં ઘણીજ જીવહિંસા, રાજાનાં ચલાવેલી દેસીને નારદજી રાવણ પાસેં

फरियाद करवा आव्या. तेमने रावणें पूछुं के, ए ड
 छ जीवहिंसां रूप कुकर्म क्यांथी चालु अयुं ठे? एवं
 रावणनुं बोलवुं सांजलीने नारदजी कहेवा लाग्या
 के, शुक्तिमती नदीने किनारे शुक्तिमती नगरीयें हरि
 वंशमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थकरनी परंपरामां अनिचंइ
 नामें राजानो पुत्र वसु एवे नामें महाबुद्धिमान् अने
 सत्यवादी राजा थयो. हवे ते नगरीमां खीरकदंबक
 नामें उपाध्याय रहे ठे. तेनी पासें एक तो तेहिज
 उपाध्यायनो पुत्र पर्वत नामें तथा बीजो वसुराजा
 अने त्रीजो हुं नारद, ए त्रण जण साथें जणतां ह
 ता, एक दिवस रात्रिने समयें अमें सूता ठैयें, ते व
 खतें वे चारण मुनियो आकाश मार्गें चाल्या जता ह
 ता, तें पोतपोतामां वातो करतां कहेवा लाग्या के,
 आ उपाध्यायना वे शिष्य नरकें जवाना ठे, अने
 एक स्वर्गें जशे! ते वात खीरकदंबक उपाध्यायें सांज
 ली पढी त्रणे शिष्यनी परीक्षा करवा माटे लोटना त्र
 ण कूकडा बनावीने त्रणे जणने हाथमां एकेको कूकडो
 आपीने कह्युं के, आ कूकडा लइ तमें त्रणे जण जूढ़े
 जूढ़े स्थानके जइ जिहां कोइ देखे नही, तेवे स्थानकें
 मारीने महारी पासें लइ आवो. एवं उपाध्यायनुं

बोलवुं सांजली, पर्वत तथा वसुराजा तो कोइएक स्थ
 लें जइ जिहां कोइ माणस दीतुं नही, तिहां जइ कूकडा
 ने मारी उपाध्याय पासैं आव्या, अने हुं तो घणो
 जंगल फखो, पण ज्यां कोइ पण जीव देखे नही, ए
 वी जगा तो कोइ पण महारा दीठामां आवी नही.
 केम के, जिहां तिहां प्रथम हुं पोतें तो अवश्य देखुंज
 बुं. अने बीजां ज्ञानी पुरुषो पण सर्वत्र देखी रह्या
 ठे. वली महारा गुरु उपाध्याय पण कूकडो मारवा
 नी आझा आपेज नही. एतो कोइ कारणें परीक्षा
 लेवा निमित्तें गुरुयें मोकब्यो जणाय ठे? एवुं विचा
 री ते लोटनो कूकडो पाठो लावीने पोताना मनमां
 विचारेली सर्व वात गुरु आगल निवेदन करी, ते
 सांजली उपाध्यायें पण मुऊने हृदय सार्यें 'जीडी
 आलिंगन कखुं, मनमां जाएयुं, जे आ स्वर्ग जवावा
 लो ठे, अने पहेला बे नरकें जनारा ठे. माटे तेमनी गु
 रुयें निर्जृम्भना करी. पढी केटलेक कालें गुरु समाधिस्थ
 थया, वसुराजा राजगादी उपर बेठो, ते सत्यवादी ठे,
 माटे व्यंतर देवें सहाय आपी तेनुं आसन जमीनथी
 अधर राख्युं, अने पर्वत पण महाबुद्धिमान पंमित
 थयो ठे, ते विद्यार्थीयोने जणावतो हतो; तेवा अब

સરમાં હું પણ પર્વત પાસેં ગયો. તે વસ્તેં પર્વત પણ
 “ અર્જૈર્યપ્ત્યમિતિ ” એ શ્રુતિનો અર્થ અજ એ
 ટલે બોકડાને અગ્નિમાં હોમવો, અજામેથ યજ્ઞ ક
 રવો. એમ શિષ્યોને કહેતો હતો, તે વિપરીત અર્થ
 સાંજનીને મેં કહ્યું કે, જાડ આ તું જૂઠો અર્થ કરે છે!
 કેમ કે, ઉપાધ્યાયજીયેં તો એમ કહ્યું છે, કે ત્રણ વ
 ર્ષના યવ ધાન્ય હોય છે, તે વાવ્યા થકા અજા એટલે
 ન જન્મે, અર્થાત્ ન ઝગે એટલે ત્રણ વર્ષના જુના યવ
 જે વાવ્યા થકા ન ઝગે, તેનો હોમ કરવો કહ્યો છે,
 એમ કહ્યાથી પર્વતનો અને મહારો માંહોમાંહે વાદ
 થયો. પઠી ઢેવટ એવો ઠેરાવ થયો, જે આપણી સાથેં
 વસુરાજા પણ જણતો હતો, અને તે મહા સત્યવાદી
 છે. તે જૂઠું નહીં બોલે, માટે તેને સાક્ષી દાખલ પૂઠ
 બું, અને આપણે બેઠુ જણમાંથી જે જૂઠો પડે, તેની
 જીન ઢેદી નાખવી. એવી પ્રતિજ્ઞા કરી તે સાંજની
 પર્વતની માતાને સંતાપ થયો, જે મહારા પુત્રેં જૂઠો
 હત લીધો છે, અને ફોકટ જીન ઢેદાવશે. તેવારેં વસુ
 રાજા પાસેં ગઈ. રાજાયેં પણ પોતાના ગુરુની સ્ત્રીને
 માતા સમાન જાણી તેણેં કહેલી જૂઠી સાક્ષી આપ
 વાની વાત કબૂલ કરીને અજા એવું બોકડાનું નામ

पण कह्युं ठे. एवो असत्य अर्थ कहेतांज तेना उपर व्यंतर देवो कुपित थइ लात मारीने तेने आसन उपरथी नीचें जूमि उपर पाडी मारी नाख्यो, ते व सुराजा मरी नरकें गयो. पढी तेना आठ पुत्र अनुक्रमें गादीयें बेठा. तेने पण व्यंतर देवताउयें गादी उपरथी पटकीने मारी नाख्या, तेथी जय वामीने न वमो पुत्र त्यांथी नाशी नागपुर जतो रह्यो, अने दशमो बृहद्ध्वजनामा पुत्रें मधुरामां जइ राज्य कखुं. तेना कुलमां अनुक्रमें यडुनामैं राजा घणो तेजवंत लोक प्रसिद्ध थशे, तेनाथी हरिवंशनो लोप थइने यडुवंश प्रसिद्ध थशे. ए अजा शब्दना अर्थ उपरथी पण वेद नी उत्पत्ति पर्वत नामे ब्राह्मणथी नवीन थयेली सिद्ध थाय ठे. ए अधिकार आवश्यकसूत्र, आचारदिनकर तथा त्रिषष्टिशिलाका पुरुष चरित्रथी जाणवो. इति मीमांसक दर्शनम् ॥ एम ए पांचे दर्शन एकांतमत नयवादी मिथ्यात्वी ठे.

अने ठहुं जैनदर्शन तो अनेकांतनय स्याद्वाद रूप उत्सर्ग अपवाद मार्ग प्ररूपक मोक्षपद दायक श्री सर्वज्ञ जाषित ठे. ए ठ दर्शननुं स्वरूप कह्युं.

हवे ए ठ दर्शन विना पण बीजा कल्पित धर्म

આ પંચમ કાર્ત્તે ઘણા નિકલ્યા છે, તે કહીયેં ઠેયેં.

પ્રથમ નાંસ્તિક મત એને વામમાર્ગી પણ કહે છે. તથા ચાર્વાક પણ કહે છે. એ મત વાલા પુણ્ય, પાપ, નરક, સ્વર્ગ તથા જીવ ઇત્યાદિ પદાર્થને માનતાજ નથી. એ મતમાં કેટલાએક સંપ્રદાયનાં મનુષ્ય તો પાંચ ચત્રતનેજ માને છે. જેમ જલમાં જલના પર્પોટા થાય છે, તે ફૂટીને પાઠા જલમાંજ સમાઈ જાય છે, તેમ પૃથ્વી, જલ, અગ્નિ, પવન અને આકાશ એ પાંચ ચત્રતની શક્તિ છે. તે પાઠી એમાંજ સમાઈ જાય છે. એ ઉપર દૃષ્ટાંત કહે છે. જેમ જીતમાં ચિત્ર આલેખીયેં, તે સાક્ષાત્ રૂપ દેખાય છે, અને જીતનો નાશ થવાથી તે ચિત્રનો પણ નાશ થાય છે. તેમ પાંચ ચત્રતના મેલા પથી શરીરનું પુતલું બને છે, અને શરીરનો નાશ થવાથી પાંચે ચત્રત પોતપોતાના સ્વરૂપમાં સમાઈ જીન થાય છે, એવી રીતે માને છે. પરંતુ તે જડબુદ્ધિના ધણી, સાક્ષાત્ ચૈતન્ય સ્વરૂપ, સુખ દુઃખનો વેદક, કર્તા, જોક્તા, અવિનાશી, અસ્વંન, એવો જીવાત્મા છે. તેને તો જાણતાજ નથી. તથા એ વામમાર્ગી લોકો જે છે, તે એક સ્ત્રીને બેસાડી તેના જનનેંડિયની પૂજા કરે છે. એમ એ મતવાલા વિષય સેવનનેજ ધર્મ

માને છે. એવું તેનું મત મહાહુષ્ટ છે. તેથી હ્રાં જ
સ્વતાં શરમ આવે છે, માટે નથી લખ્યું.

હવે એ નાસ્તિક મતની उत्पत्ति લખું બું. એક વૃહ
સ્પતિનામેં બ્રાહ્મણ હતો, તેની બહેન મહા સ્વરૂપવ
તી હતી, પરંતુ તે બાલરંમા થઈ, અને તે વૃહસ્પતિની
પોતાની સ્ત્રી મરણ પામી તેવારેં પોતાની બહેન સાર્થેં
વિષય જોગવવા લાગ્યો. પઠી જેવારેં લોક નિંદા કર
વા લાગ્યાં, તેવારેં તે નવાં નવાં શાસ્ત્રો રચીને લો
કોને બોધ કરવા લાગ્યો, કે પુણ્ય, પાપ, જીવ, નરક,
સ્વર્ગ, ઇત્યાદિ કાંઈ પણ નથી. એ સર્વ પંચનૂત છે,
માટે એવો યોગ વારંવાર મલવો કઠિણ છે, તેણેં કરી
સ્વાબું, પીબું, વિષયસુખ જોગવવાં, એજ સંસારમાં સાર
છે. બીજો કાંઈ સાર નથી. ઇત્યાદિ વિષય સેવન રૂપ ના
સ્તિક ધર્મ, વૃહસ્પતિ બ્રાહ્મણેં ચલાવ્યો છે. એ વાત, શીલ
તરિંગિણી ગ્રંથથી જોવી ॥ ઇતિ નાસ્તિકં દર્શનમ્ ॥

હવે સાંખ્યમત ક્યારથી પ્રચલિત થયું? તેની ઉ
ત્પત્તિ કિંચત્ માત્ર લખું બું. કૃત્રિય વંશમાં પ્રથમ શ્રી
રુષ્ણદેવ થયા, તેમના પુત્ર નરતચક્રવર્તી થયો, તેમનો
પુત્ર મરિચીનામેં ત્રિદંતી તાપસ થયો, તેનો શિષ્ય ક

પિલ નામેં થયો, તેનો શિષ્ય આસુરિ નામેં થયો. હવે કપિલ મરીને પાંચમે બ્રહ્મ દેવલોકેં ગયો, તિહાં અવધિદ્વાનેં દેહીને પોતાના આસુરી નામેં શિષ્યને તત્ત્વો પદેશ કયો કે, અવ્યક્ત વ્યક્ત એવા સર્વ પદાર્થ પંચનૂતથી પ્રગટ થાય છે, ઇત્યાદિ ઉપદેશ સાંનલીને આસુરીયેં પશ્ચીતંત્ર નામેં નવીન શાસ્ત્ર બનાવ્યું. તેમાં લખેલું છે, કે પંચતત્ત્વ પ્રકૃતિથી અહંકાર ઉત્પન્ન થાય છે, અને અહંકારથી શોભ ગુણ પ્રગટે છે, તેમાં પશ્ચીશ પ્રકૃતિ બંધાય છે, એવી રીતેં ઈશ્વર ઇચ્છાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થઈ છે, એ ઉત્પત્તિનું કથન સાંખ્યમતના શાસ્ત્રમાં લખેલું છે. પછી અનુક્રમેં તે આસુરીના સંપ્રદાયમાં સાંખ્યનામેં આચાર્ય થયો, તેનાથી સાંખ્યમત એવું નામ પડ્યું છે. એ જોતાં તો એ સર્વ પરિવ્રાજક સન્યાસીયોના લિંગ તથા આચારાદિ ધર્મે તેનું મૂલ મરિચી છે. અને પ્રથમ બ્રહ્મા ઉત્પન્ન થયા, તે શ્રીરૂષ્ણદેવજી જણાય છે. વલી ઈશ્વરકર્તાનું કથન જે લોકો કહે છે, તે પણ શ્રીરૂષ્ણદેવજીજ કર્તા જણાય છે.

તે ઉપર પુરાણાદિ શાસ્ત્રોક્ત કથન લખીયેં ઠેયેં.
શ્લોક ॥ નાનિસ્ત્વજનયત્પુત્રં, મરુદેવ્યાં મહાદ્યુતિં ॥

(१८९)

रुषनं हृत्रियश्रेष्ठं, सर्वहृत्रियपूर्वजं ॥ १ ॥ रुषना
ज्जरतो जज्ञे, वीरपुत्रः शताग्रजः ॥ अग्निषिच्य च तं रा
ज्ये, महाप्रव्रज्यामाश्रितः ॥ एम ब्रह्मांमपुराणमां क
ह्युं ठे. वली पण ब्रह्मांमपुराणमां कह्युं ठे. ते जेम के:-
इह ह्रीद्वाकुलवंशोद्भवेन नानिसुतेन मरुदेव्या नंद
नेन महादेवेन रुषणेण दशप्रकारो धर्मः स्वयमेवाची
र्णः ॥ केवलज्ञानलाजाच्च प्रवर्तितः ॥ वली आर
ण्यक पुराणमां कह्युं ठे के:- रुषन एव जगवान्
ब्रह्मा तेन जगवता ब्रह्मणा स्वयमेव आचीर्णानि ब्र
ह्माणि ॥ तपसा च प्राप्तं परं पदं ॥ वली प्रजासपुरा
णमां पण कह्युं ठे के:- श्लोक ॥ युगे युगे महापु
ण्या, दृश्यंते द्वारकापुरि ॥ अवतीर्णो हरिर्यत्र, प्रजासे
शविनूषणं ॥ रेवताङ्गो जिनोनेमि, युगादिर्विमला
चक्षे ॥ रुषीणामाश्रमादेव, मुक्तिमार्गस्य कारणं ॥ ए
प्रकारें इहां लोकमां प्रथम न्याय, नीति, धर्मना प्रव
र्त्तानार तेमज आद्य तीर्थकर, तथा ब्रह्मा जे कहे
वाय ठे ते सर्व श्रीरुषनदेवजीज जाणवा ॥ इत्यर्थः ॥

माटें श्रीजिनवचन उपर साची श्रद्धा प्रतीत कर
वी परंतु गुरु मुखशी घणा सिद्धांत शास्त्रनां रहस्य
सांजव्या. विना मात्र मिथ्यात्वीयोनां कष्ट चमत्कार दे

स्त्रीने श्रीजिनवचनने विषे नाना प्रकारना संदेह मन मां आणवा नही. कारण के, मिथ्यात्वीयोमां जो को इ पुरुष इंद्रजालनो जाणकार होय, ते विचित्र प्रकार ना चमत्कार बतावी शके, ते जोइने मगवुं नही. जेम बोधिदेव नामें ब्राह्मणें इंद्रजाल विद्याना बलें करी कुमारपालराजानी सात पेहेढीना पुरुषोने नरककुंममां पडेला आक्रंद करता थका कुमारपालनी आगल न जरो नजर उजा राखेला देखाड्या, ते वली साक्षात् रूपें कुमारपालने कहेता होय, के हे पुत्र ! तें ज्यारथी जैन धर्म ग्रहण करेलो ते, त्यारथी अमें सर्व नरक कुंममां पड्या ठैयें ! माटें जो तुं जैनधर्मनो त्याग करे, तोज अमें आ दुःखथी विमुक्त अश्यें ! एवं प्रत्यक्ष स्वरूप देखी कुमारपाल राजा जयत्रांत थयो थको श्री हे माचार्य महाराज पासें आवी सर्व हकीगत निवेदन करी पूठवा लाग्यो, तेवारें हेमचंद्राचार्यें कहुं के, हे राजन् ! ए ब्राह्मणें सर्व इंद्रजाल करी तुज्जने त्रमित क ह्यो ते. बीजुं एमां कांइ पण विशेष जाणीश नही. ए वो तमासो हुं पण तुज्जने देखाडुं, ते तुं जो. एम कहिने कुमारपालने कोइ एकांत जगामां लइ जइने तिहां इंद्र जालना बलें करी चोवीश तीर्थकर सर्व जूदा जूदा सिंहा

(१ ए१)

सन उपर बेतेला देखाज्या, अने ते एकेक श्रीतीर्थकर देवनी पासें कुमारपालनी सात पहेडीना पुरुषो सर्व तीर्थकरोनी सेवा करता थका उजा रहेला देखाज्या. वली ते पुरुषो कुमारपालने कहेवा लाग्या, के हे वत्स ! तुं तो अमारा कुलमां महोठो पुण्यात्मा थयो, जेमाटे, जे दिवसथी तें श्रीजिनधर्म आदखो ठे, ते दिवसथी अमें सर्व नरक कुंममांथी निकलीने स्वर्गमां निवास करी वेग ठैयें. माटें अमारुं जलुं थवानी चाहना राखतो होय, तो क्यारें पण तुं श्रीजिनधर्म ठां मीश नही. एवुं कृतिम स्वरूप देखाडीने राजाने ते स्थलनी बाहेर तेडी आचार्य कहेवा लाग्या के, हे राजन् ! ते प्रथम ब्राह्मणें करेलो तमासो दीगो, अने पाठलथी आ में तमासो देखाज्यो. ए बे मांथी कौंने पण साचो जाणीश नही. ए बेहु देखवा मात्र इंजाल विद्या ठे. में योनिप्राज्ञत नामें शास्त्रथी ए इंजाल प्रगट करी देखाड्युं ठे. ए योनिप्राज्ञत विचार व्यवहार जाण्थनी चूर्णीमां ठे, पण आ पंचमकालना तुल्लबुद्धि मान्, अने गंजीरता रहित जीवोथी ए विद्या जीरवाय नही माटे गुप्त राखी ठे, प्रगट करी नथी. एम सम जावी कुमारपालने स्थिर कीथो. तथा तत्त्वार्थना म

હા જાણ્યમાં સામંતજ્ઞાચાર્યે એવું લખ્યું છે, કે ઇંડજા લખી તીર્થકરના સમવસરણની રૂઢિ બની શકે, માટે એ દેહીને જિનવચનમાં શંકા ન કરવી; કેમ કે, જિનવચન ઉપર જે સાચી શ્રદ્ધા છે, તેજ સમ્યક્ત્વ છે.

તથા વલી પૂર્વે જે પંચાંગી પ્રમાણ સૂત્રની આમ્ના યો છે. તેમાંથી ઘણાં શાસ્ત્રોનો હાલમાં વિષ્ણુદ થઈ ગયો છે. જેમાં પ્રથમ તો શ્રીઆર્યરક્ષિત સૂરિના વસ્તમાં ચાર અનુયોગ તોડીને બીજા નવીન રચ્યા, તથા સ્કંદિલ સૂરિને વારે બાર ડુકાલી પડવાથી સાધુમાત્ર ઘણા સૂત્ર જૂલી ગયા હતા, તેમાં પણ જેમને કંઠે જેટલો સૂત્રપાઠ રહ્યો હતો, તે સર્વ સાધુના સંઘે મલી દક્ષિણ મથુરામાં ફરી સૂત્ર લખ્યો, તે પછી દેવર્દિગણિહ્માશ્રમણ ના વસ્તમાં વલી સર્વ આચાર્યોયે મલીને એક ક્રોડ ગ્રંથસંખ્યાયે પુસ્તકો લખ્યાં, તથા વલી પ્રાજ્ઞાવિક ચરિત્રમાં લખ્યું છે, કે સર્વ શાસ્ત્રોની ટીકાઉ હતી, તેમાંથી ઘણો જાગ તો વિષ્ણુદ ગયો છે, પછી પણ બ્રાહ્મણ તથા બૌદ્ધ લોકોયે દ્વેષથી કેટલાએક જાગનો નાશ કર્યો છે. તેમજ મુસલમાનોના હાથમાં તો જે જે મતનાં શાસ્ત્ર આવ્યાં, તે તે સર્વને માટી પાણી સાર્યે મેલાવી દીધાં. એવી રીતે નુકશાન થતાં થતાં હાલ વર્તમાનકાલે

(१९३)

जे शेषसूत्ररूप श्रुत रह्युं ठे, ते प्रमाण करवुं, अने श्र
 ढापूवक अंगीकार करवुं ॥ इति श्रीमत्प्रवर पंमितग
 णि श्री सौजाग्यविजयजी तद्धिष्य पंन्यास श्रीप्रता
 पविजयजी तद्धिष्य पंन्यास श्री हीरविजयजी त
 द्धिष्य मुनि श्रीमयाविजयजी विरचितश्री शास्त्ररह
 स्यप्रकाशे तृतीयवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थवर्गप्रारंभः ॥

एमां श्रीजिनप्रतिमाना उद्गापक अने श्रीजिनवचन
 उद्गापक एवा लुंका लोकोनुं स्वरूप दर्शावीयें ठैये.

विक्रम संवत् १५०८ ना वर्षेमां श्रीगुर्जरदेशना
 अमदावाद शहेरमां दशा श्रीमाली ज्ञातीनो लुंको
 एवे नामें लहीयो ते पुस्तको लखवानो धंधो करतो ह
 तो. एकदा ग्रंथ लखतां जे स्थानकें जिनप्रतिमानो अ
 धिकार हतो, ते संबंधी पाठ लखतां जूली गयो, पढी
 लखावनारें कहुं, के तुं जूव्यो ठो? तेवारें साहामो
 हठ कदाग्रह करी साधु तथा श्रावकोने कहेवा लाग्यो,
 के पूर्वे जे पाठ लखेला ठे, ते जूलमां जूठा लखाणा
 ठे, अने में जे हमणां पाठ लख्या ठे, ते साचा ठे. एवां
 वचन सांजली तेना हाथें लखाववुं बंध करी तिरस्कार
 करी तेने उपाश्रयथी बाहेर काढयो. पढी ते देखें करी

(१९४)

तिहांथी निकलीने लींबडी शहरमां कोइ लखमशी नामें
वाणीयो राजानो कारजारी हतो, तेने जइ मल्यो, अने
कहुं के, हुं जगवंतना प्ररूपेलां वचन प्रमाणें पुस्तक
लखुं बुं, तो ते उपरथी श्रावक, महारा उपर द्वेष बुद्धि
राखे ठे. एवं तेनुं बोलवुं सांजली लखमशीयें तेने पो
ताथी बनती ए काममां मदत आपी, ते उपरथी तेणें
पण सूत्रोना पाठ फेरफार करी लोकोनें जिनप्रतिमा
विरुद्ध उपदेश करवा मांमयो. एम करतां संवत् १५३३
मां कोइ जाणा नामें वाणीयाने वेष आपी तेनुं रुषि
“ जुणा ” एवं नाम देइ पोतानो पंथ चालु कियो.
पढी ते जुणानो शिष्य रूपजी रुषि थयो, तेनो शिष्य
जीवाजी, तेनो शिष्य वरसिंहजी, तेनो शिष्य जशवं
तजी तिहां त्रण प्रकारना लुंका थया, एक गुजरा
ती लुंका, बीजा नाघोरी लुंका, त्रीजा उत्तराधि
लुंका, एम त्रण प्रकारनी लुंकामतनी उत्पत्ति थइ.
ए श्री रत्नशेखरसूरि, त्रेपनमे पाटें थयां, तिहांथी
लुंका थया ठे. पढी अनुक्रमें बाशठमे पाटें श्रीविज
यप्रज्ञसूरिनी वारें एज लुंका मतमांथी दूढीया मत
नी उत्पत्ति थइ. ते आवी रीतें के श्रीसूरतमध्ये वो
होरा वीरजी नामें दशा श्रीमाली वाणीयानी दीक

રી ફૂલીધાંનો ઠોકરો લવજી હતો, તે હુંકાના સાધુથી પ્રતિબોધ પામીને સાધુ થયો. પઠી તે બીજા હુંકાના સાધુને કહેવા લાગ્યો, કે તમે બરાબર દયા પૂર્વક સાધુમાર્ગ પાલતા નથી, અને મેં જે સાધુપણું લીધું છે. તે મને તો બરાબર દયા પાલવી જોશે? એમ કહી સાધુના ટોલાથી જૂદો પડી વાયુકાયની રક્ષાને અર્થેં મુર્ખેં એક મુહપત્તિ કપડાની બાંધી જૂદો પંથ કાઢાડ્યો, એમ લોકોમાં તો ગામરીયો પ્રવાહ ચાલે છે, પરમાર્થ જાણ્યા વિના માત્ર દેશ્વાદેશ્વીથી મૂર્ખ, અજ્ઞાની, જડબુદ્ધિ જીવો જે છે, તે શ્રીવીતરાગનો શુદ્ધ માર્ગ સમજ્યા વિના ટૂંઢીયામત રૂપ જાલમાં આવી ફસવા લાગા છે, પરંતુ તે દેવ, ગુરુ અને ધર્મ એ ત્રણ તત્ત્વ રૂપ સમ્યક્ત્વ તે નિશ્ચય વ્યવહાર જાણ્યા વિના પામવું હર્ષજન છે, એવું સમજતા નથી.

હવે તે ત્રણ તત્ત્વનો વિવરો કહું હું. તેમાં વ્યવહારથી દેવ તો અઢાર દૂષણ રહિત શ્રી અરિહંતજી જાણવા, અને નિશ્ચયથી દેવ તો જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્રાદિમય જેનો આત્મસ્વજ્ઞાવ છે, તેજ જાણવો. તથા વ્યવહારથી ગુરુ જે નિર્ગ્રંથ કંચન કામિની રહિત, પંચ મહા વ્રતના પાત્રક તે જાણવા, અને નિશ્ચયથી ગુરુ તો જેના

(૧૯૬)

આત્માને વિષે તત્ત્વ રમણતા હોય, તેજ જાણવા; ત
થા નિશ્ચયથી ધર્મ તો જે પોતાના આત્મ જાવપ્રાણ
થી ત્રષ્ટ થકો અનંતા જન્મ મરણ કર્મને વશથકો
કરે છે, તે જન્મ મરણના દુઃખથી ઢોડાવવું, તેજ જાણ
વો. અને એવો નિશ્ચય સ્વદયા ધર્મ જિહાં છે, તિહાં વ્ય
વહાર ધર્મ તો નિશ્ચયનયમાં છેજ. જે માટે ઉપાધ્યાય
શ્રીયશોવિજયજીયેં સવાશો ગાથાના સ્તવનમાં કહ્યું છે,
કે ॥ નિજદયા વિણ કહો પરદયા, હોયે કવણ પ્રકારેં
॥ લોક વિણ જિમ નગર મેદિની, જિમ જીવ વિણ કાયા
॥ ફોક તિમ જ્ઞાનવિણ પરદયા, જેસી નટ તણી માયા
॥ શુદ્ધનય અર્થ મન ધારિયેં ॥૧॥ એ વચનથી જાણવું.

તથા સર્વવિરતિ અને દેશવિરતિ જે સાધુ શ્રાવ
ક તે સર્વનો ધર્મ, દયામય છે, તે દયા, ધર્મ તત્ત્વ
છે, તે દયાધર્મ આઠ પ્રકારેં છે, તે કહે છે. ૧ દ્વ્યદ
યા, ૨ જાવદયા, ૩ સ્વદયા, ૪ પરદયા, ૫ સ્વરૂપદ
યા, ૬ અનુબંધદયા, ૭ વ્યવહારદયા, ૮ નિશ્ચયદયા.

તેમાં જે સર્વ પ્રકારની શુનાશુન ક્રિયા કરતાં થ
કાં જીવનું રક્ષણ કરવું, તે દ્વ્યદયા.

તથા કોઈ જીવને ડુર્ગતિમાં પડતાં રાખવા માટે
હિતોપદેશ કરી ધર્મ માર્ગમાં સ્થિર કરવો, તે જાવદયા.

(૧૯૭)

તથા પોતાના આત્માને કર્મરૂપ શત્રુથી ઢોડાવ
વા માટે ચારિત્ર ગ્રહણ કરી વિહાર કરવો, નવ્યજી
વોને હિતોપદેશ કરવા માટે નદી ઝતરવી, ઇત્યાદિ જે
ધર્મ કાર્ય આત્મોપયોગથી કરવું, તેમાં જો પણ કિં
ચિત્ માત્ર આરંજ થાય, તો પણ તે સર્વ સ્વદયા છે.

તથા ઢક્કાયના જીવોનું રક્ષણ કરવું, તે પરદયા
છે. તેમજ જિહાં પૂર્વોક્ત સ્વદયા છે, તિહાં પરદયા તો
નિશ્ચે છેજ, અને જિહાં ઁકલી પરદયા છે, તિહાં સ્વ
દયાની નજના ઁટલે હોય પણ અને ન પણ હોય.

તથા ઇહલોક અને પરલોકના સુખની ઇચ્છાને
માટે તથા લોકોની દેસા દેસીયેં જે જીવરક્ષા કર
વી, તે દયા મંદુક ચૂર્ણવત્ સંસાર વૃદ્ધિનું કારણ છે.
નાવથી તો તે હિંસાજ છે, પણ દેસવા માત્ર દયા
છે, તે સ્વરૂપદયા જાણવી.

તથા જે શ્રાવક મહોટા આમંબર સહિત તીર્થક
રને તથા મુનિને વાંદવા જાય તે, તથા શિષ્ય પ્રમુખ
બીજા જીવોને ધર્મ માર્ગમાં આણવાને અર્થે ગુરુ તે
મને આક્રોશ કરી આકરાં વચન કહે, અથવા તા
ડના કરે, તે દેસવામાં તો હિંસા છે, પરંતુ નાવથી
તે દયાજ.છે. ઁ અનુબંધદયા જાણવી.

(૧૯૮)

તથા જે સાધુ, શ્રાવક, વિધિ પૂર્વક જીવ દયા પાલે,ક્રિયા ઉપયોગ સહિત કરે,તે વ્યવહાર દયા ઢે.

તથા જે શુદ્ધ સાધ્ય ઉપયોગમાં એકત્વ અજેદ ઉપયોગ સાધ્ય જાવમાં એકતા જ્ઞાન તે નિશ્ચય દયા જાણવી. ઉપરલા ગુણઠાણાની વૃદ્ધિ કરનાર એ દયા ઢે, માટે સર્વથી શ્રેષ્ઠ તે એ નિશ્ચય દયાજ ઢે.

ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારે દયાનું સ્વરૂપ, સૂત્ર, નિર્યુક્તિ, જ્ઞાપ્ય, ચૂર્ણી, વૃત્તિ, એ પંચાંગી પ્રમાણથી સમજી લેવું. પરંતુ એકલા સૂત્રનું જ ગ્રહણ કરવું નહીં. વળી તે એકલા મૂળ સૂત્ર પણ વર્તમાને પોસ્તાલીશ સંસ્વાયે ઢે, તેમાંથી પણ ઢૂંઢીયા લોકો તો, હવગ્રાહી થકા માત્ર વત્રીશ સૂત્રને જ માને ઢે. તે વત્રીશનાં નામ લખું બું. ૧ આચારાંગ, ૨ સૂયગડાંગ, ૩ ઠાણાંગ, ૪ સમ વાયાંગ, ૫ જગવતી, ૬ જ્ઞાતાજી, ૭ ઉપાસકદશાંગ, ૮ અંતગડદશાંગ, ૯ અનુત્તરઉવવાઙ, ૧૦ પ્રશ્નવ્યાકરણ, ૧૧ વિપાક, એ અગીઆર અંગ. તથા ૧ ઉવવાઙજી, ૨ રાયપસેણી, ૩ જીવાજિગમજી, ૪ પન્નવણાજી, ૫ જંબૂદ્વીપપન્નત્તિ, ૬ ચંદપન્નત્તિ, ૭ સૂરપન્નત્તિ, ૮ નિર યાવલી, ૯ કપ્પિયા, ૧૦ કપ્પવિમંસિયા, ૧૧ પુપ્ફિયા, ૧૨ પુપ્ફચૂલિયા, એ બાર ઉપાંગ. તથા ૧ નંદી

(૧૯૯)

સૂત્ર, ૧ અનુયોગદ્વાર, ૨ દશવૈકાલિક, ૪ ઉત્તરાધ્યયન, ૫ નિશીથ, ૬ વૃહત્કલ્પનાથ, ૭ વ્યવહારકલ્પ, ૮ આવશ્યક, ૯ દશાશ્રુતસ્કંધ. એવં બત્રીશ સૂત્રનાં માત્ર મૂલ પાઠને માનવામાં પણ પોતાની મતિ કલ્પનાયેં સ્વહંદી પણે ઉપયોગ વિના જેમ પોતાના ધ્યાનમાં આવે, તેમ ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપતાં વિપરીત અર્થ કરવામાં પણ કાંઈ બીક રાખતા નથી. એવા જડ મૂર્ખોને સમજાવવા માટે કિંચિત્ ઉપદેશ લખું બું.

૧ શ્રીઆચારાંગ સૂત્રે સાધુને વસ્ત્ર “ ન ધોડજ્ઞા, ન રંગિજ્ઞા ” એવો પાઠ જિનકલ્પી મુનિ આશ્રયી ઢે, અને સ્થવિરકલ્પી સાધુને તો શરીરની શોના માટે નહી, પણ મેલને પ્રસંગેં જીવની ઉત્પત્તિ થાય, તથા લોકમાં ડુગંઢા નિંદનીય પણું થાય, માટે ડણ પાળીથી ધોડને વસ્ત્રનો મેલ કાઢાડવો કહ્યો ઢે. તેમ ઢતાં તમેં શા વાસ્તે કાઢાઢતા નથી ?

તથા રજોહરણની ઢાંખી અને ઢસી મલીને બત્રીશ આંગુલનું પ્રમાણ કહ્યું ઢે, તે તમેં ઘણુંજ લાંબો રજો હરણ પ્રમાણ વિનાનું કયા શાસ્ત્રને આધારેં રાખો ઢો ?

તથા રાત્રિયેં ફાસુ પાળી, ડુનો અને ત્રિફલાદિ નાચીને. સાધુયેં રાખવું જોડ્યેં, જેમાટે ઔદારિક

શરીર છે, તેથી કદાપિ વડીનિતિ પ્રમુખ અશુચિત્વ થાય, તો તેની શુદ્ધિ કરવાના કામમાં આવે, તેમ ઠતાં તમે તેવું ફાસુ પાળી નથી રાખતા, તેવારેં શો ડપાંચ કરી અશુચિ ટાલો શુદ્ધ થઈને સઘાય ધ્યાન કરો ઢો ?

વલી સ્ત્રીને ઋતુધર્મ આવે તથા પુત્રાદિ જન્મે, સુવાવડ થાય, તેના ઘરનો આહાર સૂતકના યોગથી ન લેવો, તેમ ઠતાં તમે ઋતુવતીને હાથે વંહોરો ઢો અને સુવાવડીને હાથે લાડુવા વહોરો ઢો, તે કયા શા સ્ત્રના આધારથી વહોરો ઢો ?

વલી શ્રીઅનુયોગદ્વાર સૂત્રમાં પ્રત્યેક પદાર્થના અનેક નિદ્દેષા કરવા કહ્યા છે, તે કરવાની શક્તિ તમારામાં નથી, તો પણ નામ, સ્થાપના, ડ્વ્ય અને જાવ, એ ચાર નિદ્દેષા તો વસ્તુ માત્રમાં અવશ્ય કરવા કહ્યા છે, તેમજ શ્રીઠાણાંગજીને ચોથે ઠાણે ચાર પ્રકારેં જાણા સત્ય, તથા દશમે ઠાણે દશ પ્રકારેં જાણાસત્ય કહ્યું છે, અને શ્રીપન્નવણાજીના જાણા પદમાં જાણા સત્ય કહ્યું છે, તેમજ બીજા પણ ઘણા શાસ્ત્ર સિદ્ધાંતમાં સ્થાનકેં સ્થાનકેં નિદ્દેષા કહ્યા છે, તે તમે શા માટે માનતા નથી ?

તથા શ્રીનંદીસૂત્રમાં સર્વ સૂત્રોનાં નામ કહ્યાં છે.

તે માંહેલાં વર્તમાને પીસ્તાલીશ સૂત્રો છે, તેમાંથી તેર સૂત્ર નહીં માનવાં અને બત્રીશજ માનવાં. તે તમે ક્યા ગુરુની આજ્ઞાથી માન્ય કરો છો ?

તથા શ્રીજગવતીજીની આદિમાં સુધર્માસ્વામીયે “અમો બંજીએ લીવીએ” એ પાઠે કરી બ્રાહ્મી લીપીને નમસ્કાર કહ્યો છે, તે બ્રાહ્મી લીપી જ્ઞાનની યાપના છે, માટે યાપનાનિદ્દેષો સત્ય છે, જે માટે શ્રીઅનુયોગદ્વારમાં ષડાવશ્યક કરતી વચ્ચે પછી યાપના યાપવી કહી છે, તે યાપના બે પ્રકારની છે, એક સદ્બાવ યાપના, બીજી અસદ્બાવ યાપના કહી છે. માટે યાપના તે ઈશ્વર છે, અને જ્ઞાનનો યાપના નિદ્દેષો તે ઈશ્વરશ્રુત છે, તો તે વાંદવા યોગ્ય છે. તેવારે શ્રીજિન પ્રતિમા તેતો શ્રીતીર્થંકરની યાપના છે, તેને તમે કેમ વાંદતા નથી ?

વલી સમવાયાંગની આદિમાં બ્રાહ્મી લીપિના અઠાર જેદ કહ્યા છે, તે અઠાર પ્રકારે ઈશ્વરશ્રુત અક્ષર ન્યાસ રૂપ છે, તેને ગણધર દેવે નમસ્કાર કહ્યો છે, તથા જગવતીમાં “ અમોસુયદેવઆએ ” એ વચનથી શ્રીજિનવાણીને ગણધરે નમસ્કાર કહ્યો છે, અને શ્રીજિનવાણી તે નંદીસૂત્રમાં ઈશ્વરશ્રુત કહેલી છે, અને જે ઈશ્વર તે જાવનું કારણ છે, એમ કારણ કાર્યનો

સંબંધ છે, કેમ કે કારણ વિના કાર્ય ન હોય, તથા શાસ્ત્રમાં ગુરુની તેત્રીશ આશાતના ટાલવામાં પાટ, પીઠ, સંયારાદિ ઉપકરણની આશાતના ટાલવી ક હી છે, તે ઉપકરણ તો સર્વ અજીવ છે, તથા વસ્ત્ર, પાત્ર, રજોહરણાદિ પણ સર્વ અજીવ છે, પણ તે ચારિત્રનાં સાધન છે, એથી ચારિત્ર સધાય છે, તો શ્રીજિ નપ્રતિમા તે સમક્તિ શુદ્ધિનું સાધન કેમ ન હોય ? જે માર્ટે બદ્ધસ્થ મુનિને પણ ધ્યાનનું આલંબન છે, પણ નિરાલંબન નથી, તો શ્રીજિનેશ્વરની સ્થાપના તે આલંબન કેમ ન હોય ? એ અધિકાર, ઉવવાડ સૂત્રે છે.

વલી દશવૈકાલિક સૂત્રે તથા ઉત્તરાધ્યયનના શો લમે અધ્યયને કહેલું છે કે, જિહાં સ્ત્રીનું રૂપ ચિત્રિત કરેલું હોય, તો તે સ્થાનકે મુનિને રહેવું નહીં. કેમ કે, સ્થાપનાસ્ત્રી પણ વિકારનું કારણ થાય છે, તેમ શ્રી જિનેશ્વરની સ્થાપના, તે આત્મધ્યાનનું કારણ થાય છે.

વલી જંઘાચારણ વિદ્યાચારણ મુનિયો મેરુપર્વતના શિખર ઉપર પાંચુકવનના ચૈત્યોને વાંદીને પઠી નીચે, સમન્નૂતલાથી પાંચશેં યોજન ઝંચું નંદનવન છે, ત્યાં નાં ચૈત્યોને વાંદે છે, પઠી એકજ મગલે ઇહાં આવીને ઇ હાંનાં અશાશ્વતાં ચૈત્યોને વાંદે છે, તેમાંથી જંઘાચારણ

મુનિયોને સ્થાંત્રી જાતાં લવણસમુદ્માંહેલી પાણીની વેલ શોલ હજાર યોજન ઝંચી છે, તેથી તે મુનિયો અપૂકા ય જીવોની વિરાધના ન થાય, એ હેતુ માટે સત્તર હજાર યોજન ઝંચા ચાલીને પઠી તીર્થિ ગતિ કરે છે, એ અધિકાર, શ્રી સમવાયાંગ સૂત્રમાં છે.

વલી ચૈત્ય શબ્દનો જ્ઞાન એવો અર્થ તમે કરો છો, તે સિદ્ધાંતોમાં તો જિહાં જ્ઞાન સંબંધી પાઠો છે, ત્યાં સર્વ છે કાણેં "ણાણં પંચવિહં પન્નત્તં" એવા પાઠો છે, પણ "ચેશ્યં પંચવિહં પન્નત્તં" એવા પાઠો તો ક્યાંય નથી, માટે જૂઠો અર્થ ન કરવો, ચૈત્ય શબ્દે જિનગૃહજ સમજવું.

વલી પરદેશી રાજાનો જીવ, સુધર્મ દેવલોકે સૂરિ યાજ્ઞ નામે દેવ થયો છે, તેણે શ્રી જિનપ્રતિમા તથા જિન દાઢાઉની પૂજા કરી છે, એ અધિકાર, શ્રીરાયપ્પસેણી સૂત્રમાં છે, તે જોડે લેજો.

વલી જંબૂદ્વીપપન્નત્તિમાં તથા નગવતીસૂત્રના દશ માશતકના પાંચમા ઉદ્દેશમાં શ્રી તીર્થંકરની દાઢાઉ પૂજવા વાંદવા યોગ્ય કહી છે. તો તે દેવો શ્રીજિન પ્રતિમા શા વાસ્તે ન પૂજે ? અર્થાત્ જે દાઢાઉ પૂજે, તે પ્રતિમા તો અવશ્ય પૂજેજ. તે વિચારી જોજો.

વલી તમે શાસ્ત્રના અજાણ થકા કહો છો કે, દે

વતા નોધમ્મિયા છે માટે તેની કરણી જે છે, તે મનુષ્ય ને કરવા યોગ્ય નથી. એ કહેવું પણ જૂલ જરેલું છે. કેમ કે, એમ કહેવાથી દેવતાના અવર્ણવાદ બોલો છો, માટે દેવતાના અવર્ણવાદ બોલવાથી તમોને ડુર્લજબોધિ પણ પ્રાપ્ત થશે ! એ વાત ઠાણાંગ સૂત્રમાં છે.

તથા શ્રીઊવવાઽ સૂત્રમાં અંબડ નામે પારિવાજક તથા તેના સાતઝોં શિષ્યોયેં મલી એવું કહ્યું છે, કે અમે શ્રી અરિહંતની પ્રતિમાને નમસ્કાર કરીયેં અમે ને અન્યદર્શનીયોયેં ગ્રહણ કરેલી જે શ્રીઅરિહંત પ્રતિમા, તેને નમસ્કાર ન કરીયેં, તે વિચારી જો જો.

વલી ઉપાસક દશાંગમાં આનંદ શ્રાવકેં શ્રીજિન પ્રતિમાને નમસ્કાર કહ્યો છે, અને તે વિના બીજા દર્શનીયોના દેવોની પ્રતિમાને તથા અન્યદર્શનીયોયેં ગ્રહણ કરેલી જિનપ્રતિમાને વાંદવાનો નિષેધ કહ્યો છે.

તથા શ્રીઠાણાંગ સૂત્રને દશમે ઠાણે શ્રીઅરિહંતા દિક દશ ગુણીનો વિનય કરવો કહ્યો છે, તે દશમાં શ્રીજિનપ્રતિમાનો વિનય પણ આવી ગયો છે.

જ્ઞાતાસૂત્રના શોભમા અધ્યયનમાં ડૌપદીયેં શ્રી જિનપ્રતિમાની સત્તર જેદેં પૂજા કીધી છે. તે પણ શ્રાવિકા હતી. જે માટે નારદ આવે થકે તેને અસં

યમી અપચ્ચકાણી જાણીને ઝની થઈ નથી. તથા વલી જે પ્રતિમાની પૂજા કરી તેની આગલ નમુઠું એનો પાઠ કહ્યો છે. તે જિનપ્રતિમા વિના બીજા ય દ્વાદિકની પ્રતિમા આગલ એ પાઠ કહેવાય નહીં.

તથા વ્યવહાર સૂત્રમાં કોઈ સાધુથી અયોગ્ય સ્થા નક સેવાઈ ગયું હોય, તો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાય પાસેં આલોચના લીયે, તેનો યોગ ન બને તો પો તાના સરસ્વાતી બરોબરીયા સાધુ પાસેં આલોચના લીયે, તેનો પણ યોગ ન બને તો જેણે કર્મને વર્ણ સાધુ પાસેં ત્યાગીને પાઠું શ્રાવક પણ અંગીકાર કરેલું હોય, પરંતુ શ્રદ્ધાયુક્ત હોય તેની પાસેંથી આલોચના લીયે, તેનો યોગ ન બને તો શ્રીજિનપ્રતિમાની આગલ આવી આલોચના લીયે, તેનો પણ યોગ ન બને તો ગામની બાહિર આવી પૂર્વદિશ અથવા ઉત્તરદિશની સન્મુખ જઈ આલોચના લીયે. હાં પણ સાધુને જિનપ્રતિમા આગલ આલોચના લેવાનું કહ્યું છે.

માટે જિનપ્રતિમાની પૂજા, તે શ્રીવીતરાગની આજ્ઞા છે. અને આજ્ઞાયેં ચાલવું, તેજ ધર્મ છે. જે માટે સિદ્ધાંતમાં “આણાએ ધમ્મો, આણાએ તવો, આણાએ સંજમો.” એવા પાઠ છે, તેથી આણા વિના ધર્મ, તપ

(૧૦૬)

તથા સંયમ દયા પ્રમુખ સર્વ વ્યર્થ છે. જે માટે શ્રીસૂ-
યગડાંગમાં કહ્યું છે, કે જે સાધુ અત્યંત ડુર્બલ શરીરે
માસ માસ દ્વમણે પારણું કરે છે, વલી વસ્ત્ર રહિત
નગ્ર રહે છે, તથાપિ એક શ્રીવીતરાગની આજ્ઞા બાહિ-
ર છે, તો તે સાધુ અનંતો કાલ નવત્રમણ કરશે. તો
તમે શા માટે આજ્ઞાલોપક થાઉં છો ?

તથા શ્રીજિન પ્રતિમા પૂજારૂપ શુંનકરણીમાં
હિંસા માનો છો, તો શ્રીજ્ઞાતા સૂત્રના પાંચમા અધ્ય-
યને શ્રીનેમીશ્વર નગવાન દ્વારિકાયે સમોસઘ્ના, તેવા
રે શ્રીકૃષ્ણ પ્રમુખ સર્વ વાંદવા ગયા. તિહાં નગવાન
ની દેશના સાંજલી થાવચ્છા કુમરને ચારિત્ર લેવાની
ઝત્કંઠા થઈ, તેવારે શ્રીકૃષ્ણે નગરમાં પડહ વજડા
વ્યો, જે થાવચ્છા કુમાર દીક્ષા લીધે છે. તેની સાર્થે
જેમને દીક્ષા લેવી હોય, તેને જે ડચ્ચ જોડ્યે, તે મ
હારા નંદારમાંથી લઈ જાય, તેમના માતા પિતાદિ
કનું પ્રતિપાલન હું પુત્રતુલ્ય થઈ કરીશ ! ઇત્યાદિ પ
ડહ સાંજલીને એક હજાર નાવિક પુરુષોયે થાવચ્છા
કુમરના સાર્થે દીક્ષા લીધી. અને શ્રીકૃષ્ણે ચતુરંગિ
ણી સેના સજી વાજિત્રાદિક આમંબર સહિત મહોટો
મહોત્સવ કહ્યો, તેમાં તમારે લેખે તો હિંસા થઈ હ

શે, પણ સિદ્ધાંતમાં તો એને કર્મનિર્ઝરાનું હેતુ કહ્યું છે.

વલી શ્રીગવવાઈમાં કોણિકરાજા તથા જગવતી ના તેરમા શતકને ઠંઠે ઉદ્દેશોં ઉદાયિનરાજા શ્રીવીર સ્વામીને મહોટા આમંબર સહિત ચતુરંગી સૈન્યા સ હિત સામેયું લઈને વાંદવા ગયા છે, તે પણ તમારે લેખે તો હિંસા થઈ હશે ! પણ શાસ્ત્રમાં તો એવા શુદ્ધ કૃત્યોને મહોટા પુણ્યબંધના કારણજૂત ગણ્યાં છે.

તથા જગવતીના બીજા શતકના પાંચમા ઉદ્દેશા માં તુંગીયા નગરીના શ્રાવકોયેં બલિકર્મ એટલે શ્રી જિનપડિમાની પૂજા કીધી છે, તેમને શ્રીવીરજગવાને વસ્વાળ્યા છે, તે વિચારજો.

તથા જ્ઞાતાસૂત્રેં શ્રીમદ્વિનાયકીયેં પોતાની પ્રતિ મા સ્થાપીને તેમાં નિત્ય પ્રત્યેં એક કવલ અન્ન ના રખ્યું, તેમાં યદ્યપિ હિંસા તો થઈ હશે, તથાપિ પૂર્વજ વના ઠ મિત્રોને પ્રતિબોધવા માટે લાજનું કારણ હ તું, તેથી એમ કરવું પડ્યું છે. માટે ત્રોટો કહ્યો ન થી. વલીબલિકર્મ શબ્દ જે છે તે પૂજાકર્મવાચક છે, તે શ્રીજ્ઞાતાસૂત્રેં તથા નિશીથસૂત્રેં જો જો.

વલી આવશ્યકનિર્યુક્તિમાં પણ બલિ શબ્દે નૈવે થ કહ્યું છે, તથા વાસ્તુ શાસ્ત્રમાં, જ્યોતિષ્ય શાસ્ત્રમાં

પણ ગૃહ દેવતાની પૂજા કરી નૂતને બલિદાન દેશ્ને ઘરમાં પ્રવેશ કરે. એમ સર્વત્ર બલિશબ્દથી નૈવેદ્ય પૂજા એ અર્થ સિદ્ધ થાય છે, તે વિચારી જો જો.

તથા જંબુદ્વીપપત્તનિમાં શ્રીતીર્થીકરનો જન્માન્વિષે ક કરવા માટે દેવતાયે સ્નાત્ર મહોત્સવ કહ્યો, તિ હાં સમુદ્ જેવો પાણીનો પ્રવાહ ચાલ્યો, તેમાં જો પણ હિંસા તો થઈ હશે, તો પણ જિન નક્તિની પ્રબલતા માટે કોઈ પણ શાસ્ત્રમાં સ્નાત્ર મહોત્સવને હિંસામાં ગણ્યો નથી ! પણ ઝલટો બોધિબીજ એટલે સમકેતને ઉપાર્જન કરનારો ગણ્યો છે, તેથી એ અહિંસાજ છે પણ એમાં પરિણામે હિંસાનો બંધ નથી. ઇતિ ટુંઢકોપદેશ.

એ ટુંઢકોને કરેલો શુનોપદેશ સાંજલીને હે નબ્ય જીવો ! તમે નામ, સ્થાપના, ઇચ્છ્ય અને જાવ, એ ચાર નિરૂપે કરી શ્રીઅરિહંતાદિક નવપદનું એકાગ્ર ચિત્તે સ્મરણ કરો. એમ કરવાથી પૂર્વે અનંતા જીવ સિદ્ધ પદને પામ્યા છે, અને હવે પામશે.

એ શ્રીઅરિહંતાદિક નવપદનું સ્મરણ કરવાની પદ્ધતિ શ્રીસિદ્ધાંતમાં આવી રીતે કહી છે, કે હાથની આંગુલિના પર્વે આવર્તથી જે નવકાર ગુણે, તેને પિ શાચાદિ નૂત પ્રમુખ ઢલ કરી શકે નહીં, તથા વિષ

(૨૦૯)

રીતપદેં એટલે ઝલટાવીને એક લક્ષ્ જાપ કરે,તો મહા કષ્ટ બંધનથી ટૂટે. કદાપિ હાથ ઉપર ન ગણી શકે, તો માલા હૃદયની સન્મુખ રાખે, તે માલા અંગુઠા ઉપર રાખી તર્જની અંગુલિથી ગણે, તથા મેરુને ઝલ્લંબે નહી, મૌનપણે સ્મરણ કરે.

તથા શ્રીપ્રાદક્ષિતાચાર્યકૃત પ્રતિષ્ઠા કલ્પમાં એ જાપ સંબંધી વિશેષ અધિકાર કહ્યો છે, તિહાં ત્રણ પ્રકારના જાપ કહ્યા છે, તેમાં પ્રથમ માનસ જાપ, તે મનમાં જાપ કરવો, એ તો સર્વોત્તમ છે. અને બીજો ઉપાંશુ જાપ તેમાં બીજો કોઈ ન સાંજલે પણ પોતાના અંતર્ગતમાં શબ્દનો ઝચ્ચાર થાય,માટે એ મધ્યમ છે. તથા ત્રીજો જાપ્યજાપ તે તો બીજા પણ સાંજલે, માટે એ અધમજાપ છે. એ ત્રણમાં પ્રથમ માનસ જાપ તે શાંતિને અર્થે છે અને બીજો ઉપાંશુ જાપ, તે પુષ્ટિને અર્થે છે, તથા ત્રીજો જાપ્યજાપ તે દેવાદિકનું આકર્ષણ એટલે તેમને બોલાવવાને અર્થે છે. તથા ફલની ઇચ્છા વાલાને તો ઈકાર સહિત ગુણવો, અને મોહની ઇચ્છા વાલાને ઈકાર સહિત ગુણવાની જરૂર નથી. એ અધિકાર, શ્રીદેમાચાર્યકૃત યોગ શાસ્ત્રમાં પણ કહ્યો છે.

(११०)

॥ दोहा ॥

नरुअच बंदिर जाग्यथी, मुनिसुव्रत जिनराज ॥
जेटे नव जावठ गइ, सीधां सयलां काज ॥ १ ॥ तेह
नयरमां दीपतुं, वेजलपुर वरवीर ॥ संघ सकल शो
जा अधिक, धर्म मेरु जुं धीर ॥ २ ॥ चउमासुं संघ
आग्रहें, कीधुं धर्म संकेत ॥ शास्त्र रहस्य प्रगट क
खुं, स्यादवादने हेत ॥ ३ ॥ संदत् उगणी चुंमालिगें,
ज्ञानपंचमी सुखवास ॥ प्रथम जिएंद एसायथी,
पूगी मननी आश ॥ ४ ॥ सौजाग्यविजय प्रता
पथी, हीरविजय सुपसाय ॥ मयाविजय जिनवच
नथी, आनंद अधिको पाय ॥ ५ ॥ इति ॥

इति श्रीमद्प्रवर पंफित गणिश्री सौजाग्य विज
यजी तद्धिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तद्धिष्य
पंन्यास श्रीहीरविजयजी तद्धिष्य मुनिश्री मयावि
जयविरचित श्रीशास्त्ररहस्य प्रकाशे चतुर्थे वर्गः ॥ ४ ॥
अथ चतुर्थे षट्पद्य नयप्रकाशकविलास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वर्द्धमान जिन प्रणमीने, जापण सार सिद्धांत ॥
इव्यह गुण पर्यायथी, ध्यावे विरला शंत ॥ १ ॥
नयनिक्षेप संयुक्त जे, तत्त्वजेद अलंकार ॥ तेमां पंच

जड जाणीयें, एक चेतना धार ॥ १ ॥ करे पर्यायें
रमण जे, तत्त्व न पामे सार ॥ जेदहेद षट् डव्यमां,
आतम गुण सुखकार ॥ ३ ॥ एह जगत स्थिति जा
णीयें, नादिनंत जव मूल ॥ पुगलादि पर रमणमां,
एह अनादी नूल ॥ ४ ॥ तातें सद्गुरु सेवियें, करि
थिर मन वच काय ॥ ध्येय ध्यान एकत्वता, जन्म
मरण दुःख जाय ॥ ५ ॥

प्रथम ठ डव्यनां नाम कहे ठे. १ धर्मास्तिकाय,
२ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुजलास्ति
काय, ५ जीवास्तिकाय, ६ कालडव्य, ए ठ डव्यशाश्वतां
ठे. अने जगतजाल बंधन रूप संसार, मूल ठे. तेमां
धर्मास्तिकायनो चलनस्वजाव, अधर्मास्तिकायस्थिर
स्वजाव, आकाशनो अवकाश स्वजाव, पुजलनो पूर्ण
गलन वर्ण गंध रस स्पर्श इत्यादि स्वजाव, जीवनों
ज्ञानादिगुण लक्षण चैतन्य स्वजाव, अने कालनो
नवा पुराणावर्तना लक्षण स्वजाव, ए कालडव्य उप
चार मात्र ठे ए ठ डव्यना नाम कहा.

ठ डव्यमां एक कालडव्यने प्रदेश नथी माटे अ
प्रदेशी ठे, अने शेष पांच डव्य सप्रदेशी ठे. माटे ए
पांच डव्यने सिद्धांतमां अस्तिकाय कहां ठे.

ઠ ડવ્યમાં એક પુજલડવ્ય રૂપી છે, અને શેષ પાં
ચ ડવ્ય અરૂપી છે. તથા એક જીવ ડવ્ય તે ચૈતન્ય લ
ક્ષણ છે. અને શેષ પાંચ ડવ્ય ચૈતન્ય રહિત જડનૂત છે.

ઠ ડવ્યમાં ધર્મ, અધર્મ, અને જીવ એ ત્રણ ડવ્ય
ના પ્રદેશ તો પ્રત્યેકે લોક પ્રમાણે અસંખ્યાતા છે,
તથા આકાશાસ્તિકાયના તો લોકાલોક પ્રમાણ અ
નંતા પ્રદેશ છે, તથા પુજલ ડવ્યના જંગતમાં અનંતા
સૂક્ષ્મ પરમાણુ નિત્ય શાશ્વતા છે, તે એકેકા પરમા
ણુમાં એક વર્ણ, એક ગંધ, એક રસ અને બે સ્પર્શ
છે, તથા બે પરમાણુ એકઠા મલ્લે, તેદારેં ઢઘણુક
સ્વંધ કહેવાય, એમજ ત્રણ પરમાણુયેં ડ્યણુક સ્વંધ
કહેવાય. એમ યાવત્ સંખ્યાતા અસંખ્યાતા તથા અ
નંતા પરમાણુ એકઠા મલી એક પિંડ બંધાય તથા
વલી વિશ્વરી પણ જાય. એવો પુજલનો પૂર્ણ ગલન
સ્વનાવ છે, તે એક આકાશ પ્રદેશેં પુજલના સ્કંધ અ
નંતા રહ્યા છે. એમ સર્વ ચોદરાજ લોકમાં સ્કંધ જ
હ્યા છે. તથા જીવ ડવ્ય અનંતા છે પરંતુ સર્વમાં ચૈ
તન્ય લક્ષણ સ્વનાવ એક સરસ્વો છે, તેમજ ધર્માસ્તિ
કાય ડવ્ય લોકપ્રમાણ છે, પ્રદેશ અસંખ્યાતા છે,
પણ ચલન સહાય ગુણ બધા પ્રદેશમાં એક સરસ્વો

હે, તેમ અધર્માસ્તિકાયમાં સ્થિતિ સહાય ગુણ, તથા આકાશાસ્તિકાય અનંત પ્રદેશી સર્વ ડ્વ્ય આધાર જૂત છે, પણ અવકાશ ગુણ એટલે જીવ પુજાને ચાલતાં માર્ગ આપે, તે સ્વજાવ એકજ છે. તથા પુજા પરમાણુ અનંતા છે, તે સર્વેમાં પૂર્ણ ગતિન પુજા સ્વજાવ એકજ છે.

તથા કાલડ્વ્ય તે અતીત, અનાગત અને વર્તમાનકાલ આશ્રયી સમય અનંતા છે, પણ વર્તમાન સમય એકજ છે. એમ સર્વડ્વ્ય પોતપોતાનું કાર્ય કરવામાં નિન્નનિન્ન સ્વજાવી છે, કારણ કે જ એ ડ્વ્ય એકજ આકાશ ક્ષેત્રમાં રહ્યાં છે પણ એક બીજાના સ્વજાવમાં મળે નહીં પોતપોતાના સ્વજાવમાંજ રહે. તથા એના ક્ષેત્રથી, કાલથી અને જાવથી ઘણા જેદો થાય, પણ સ્વડ્વ્ય, સ્વક્ષેત્ર, સ્વકાલ અને સ્વજાવને પ્રત્યેક ડ્વ્ય લીધું રહ્યું છે, માટે એ ચારના પિંડીજૂત સમુદાયને ડ્વ્ય કહીયે. તે ડ્વ્ય રૂપ કોઈ કાલાંતરે પણ બદલાઈને બીજે રૂપે ન થાય.

ડ્વ્યને વિષે સ્વસ્વકાર્ય એટલે પોતપોતાનું કાર્ય કરવાને સામર્થ્યરૂપ પર્યાય અનંતા છે, તે અવિજાગ રૂપ જેના એક સંમના બે વિજાગ ન થાય એવાને પ

ર્યાય કહીયેં, અને તે પર્યાયના સમુદાયને ગુણ કહીયેં
તથા નિન્ન નિન્ન એટલે જૂડું જૂડું કાર્ય કરવાને સા
મર્થ્યરૂપ પર્યાય જે છે, તેને પર્યાય કહીયેં. તે વલી જે
ઠતા પર્યાય અનંતા અસ્તિરૂપેં છે, તેથી પણ અનંત
ગુણ અવિનાશ રૂપ સામર્થ્ય પર્યાય જાણવા.

તથા ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રુવ, એ ત્રિપદીયેં કરી
યુક્ત હોય, તે ડ્વ્ય કહેવાય. તથા ડ્વ્ય તે ડ્વ્યાસ્તિક,
અને ગુણ પર્યાય, તે પર્યાયાસ્તિક એ બે નય કહ્યા છે.
માટે ગુણ પર્યાય સહિત તે ડ્વ્ય કહેવાય.

તથા અર્થક્રિયાનું કરવું, અનેક પ્રકારેં ન્યૂનાતિક
રૂપનું ધરવું, તે પર્યાયાસ્તિકનયનું લક્ષણ જાણવું.

એ પંચાસ્તિકાય જે ડ્વ્ય, તે સામાન્ય તથા વિશેષ
એવા બે પ્રકારેં છે, તેમાં સામાન્ય સ્વનાવ લક્ષણ તો
ડ્વ્ય, ગુણ, પર્યાયને વિષે વ્યાપક, પારિણામિક લક્ષ
ણ એક નિત્ય નિરવયવ અક્રિય સર્વગત તે સામાન્ય
લક્ષણ જાણવું, અને વિશેષસ્વનાવ તે નિત્ય તથા અ
નિત્ય નિરવયવ, સાવયવ, સક્રિય, અક્રિય અને દેશ
ગત, સર્વગત તથા વિશેષ પદાર્થ ગુણ પ્રવૃત્તિકારણ તે
વિશેષ લક્ષણ કહીયેં. પરંતુ એ વિશેષ વિના સામાન્ય
ન હોય, અને સામાન્ય વિના વિશેષ ન હોય. જેમ સૂ

(૨૧૫)

ચેવિના કિરણતેજ ન હોય અને કિરણ તેજ વિના સૂર્ય ન હોય. એ દૃષ્ટાંતે જાણવું.

હવે તે મૂલસામાન્ય સ્વજ્ઞાવ તો ઠ જેદે ઠે, તે કહે ઠે:-- ૧ અસ્તિત્વં, ૨ વસ્તુત્વં, ૩ ડ્યત્વં, ૪ પ્રમેય ત્વં, ૫ સત્ત્વં, ૬ અગુરુલઘુત્વં. તેમાં ૧ જે નિત્યત્વાદિ ના નિત્યસ્વજ્ઞાવ આદિ ઉત્તર સામાન્ય અનંતા તથા પારિણામિક વિશેષ સ્વજ્ઞાવ તે એ સર્વને આધાર જૂ ત તેને અસ્તિત્વ કહીયે. ૨ તથા ગુણપર્યાયને આધાર જૂત તે વસ્તુત્વ કહીયે. ૩ જે અર્થક્રિયાનું કરવું તથા ઉત્પાદ જે ઉપજવું તે પર્યાયને આવિર્જાવ લક્ષણ ક હીયે, અને વ્યય જૂત એટલે જે વિણસવું તે પર્યાયને તિરોજાવ કહીયે, એવી રીતે એ ઉત્પાદ અને વ્યય વે ઢુને આધાર જૂત તે ડ્યત્વ કહીયે. તથા ૪ સ્વપર વસ્તુનું જાણવું જે જ્ઞાનનું પ્રમાણ તેને પ્રમેયત્વ ક હીયે. તથા ૫ ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રુવ, તેણે કરી યુક્ત તે સત્ત્વ કહીયે. તથા ૬ પટગુણ હાણિ વૃદ્ધિ સ્વજ્ઞા વ જે અગુરુ લઘુ પર્યાય તેને આધાર જૂત તે અગુરુ લ ઘુત્વ કહીયે.

હવે પટગુણ હાણિ તથા વૃદ્ધિ એ સર્વ ડ્યને વિષે થઈ રહી. ઠે, તે કહે ઠે. ૧ અનંતજાગ હાણી, ૨ અસં

ख्यात नाग हाणी, ३ संख्यात नाग हाणी, ४ संख्या
त गुणहाणी, ५ असंख्यात गुण हाणी, ६ अनंतगुण
हाणी. ए ठ प्रकारनी हाणी जाणवी. हवे ठ प्रकार वृ
द्धिना कहे ठे:- १ अनंत नागवृद्धि, २ असंख्यातना
गवृद्धि, ३ संख्यातनाग वृद्धि, ४ संख्यातगुणवृद्धि, ५
असंख्यात गुणवृद्धि, ६ अनंत गुण वृद्धि, ए पइगुणवृ
द्धि जाणवी. ए मूल सामान्य स्वजाव ठ कह्या.

हवे उत्तर सामान्य स्वजाव अनंता ठे, तथापि
इहां तेर जेद शास्त्रांतरथी कहुं बुं. १ अस्तिस्वजाव,
२ नास्तिस्वजाव, ३ नित्यस्वजाव, ४ अनित्यस्वजाव,
५ एक स्वजाव, ६ अनेक स्वजाव, ७ जेद स्वजाव,
८ अजेदस्वजाव, ९ नव्यस्वजाव, १० अनव्यस्वजा
व, ११ व्यक्तस्वजाव, १२ अव्यक्तस्वजाव, १३ परमस्व
जाव. इत्यादि वस्तु उत्तर सामान्य जेद अनंतमथ ठे.

हवे ए तेर स्वजाव विवरीने देखाडे ठे:- १ अस्तिस्व
जाव ते स्वइव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वजाव, ए स्व
इव्यादि चारमां व्याप्य व्यापक संबंध पोतानाज स्व
रूपमां स्थिरीनूत परिणाम पण अंतर नही पोताना
स्वरूपमां प्रणमन परिणमे ते अस्तिस्वजाव जाणवो.

२ नास्ति स्वजाव ते स्वइव्यादिक चार मध्ये अ

ન્ય ડ્યનું જે સ્વડ્ય, સ્વદેત્ર, સ્વકાલ અને સ્વજ્ઞા
 વ, એ ચારેનો અજ્ઞાવ એટલે નાસ્તિપણું છે, અર્થાત્ સ્વડ્ય
 વ્ય મધ્યે પરડ્ય નથી જેમ જ્ઞાન દર્શનાદિ ઉપયોગ
 સહિત ચૈતન્ય ડ્યમાં અન્ય અચેતનાદિ જડ સ્વજ્ઞા
 વનું નાસ્તિપણું છે, જેમ ઘટને વિષે ઘટનું અસ્તિ પ
 ણું છે, અને પટનું નાસ્તિ પણું છે, તેમજ પટડ્યને વિષે પ
 ટનું અસ્તિપણું છે અને ઘટનું નાસ્તિપણું છે, એમ સર્વ
 ડ્ય વસ્તુ સ્વપર્યાયે અસ્તિરૂપ છે અને પરપર્યાયે ના
 સ્તિરૂપ જાણવા. એ અસ્તિ અને નાસ્તિ ઉન્નય એક
 સમયેં મુખેં કહેવાય નહીં. તે અસ્તિ નાસ્તિઅવક્તવ્ય
 નામેં ત્રીજો જાંગો. એ ત્રણ જંગ સકલાદેશી છે. અર્થાત્
 સર્વવસ્તુને વિષે આદેશ એટલે કહેવા યોગ્ય છે, એવી
 રીતેં હાં સાત જાંગા ઉત્પન્ન થાય, તેનાં નામ માત્ર
 પ્રસંગેં જણું બું:- ૧ જીવડ્ય જ્ઞાનાદિ ગુણેં અસ્તિરૂપેં
 છે, માટેં સ્યાત્ અસ્તિનામેં પ્રથમ જંગ. તથા ૨ શેષ અ
 ચેતનાદિ પરડ્યની જીવને વિષે નાસ્તિ છે, તે સ્યાત્
 નાસ્તિ નામેં બીજો જંગ. હાં સ્યાત્પદ જે છે તે ડ્ય
 નો સ્વધર્મ તથા પરધર્મનું ગ્રહણ કરવાને અર્થેં છે. સ્યા
 ત્ એટલે કથંચિત્ પણે ગ્રહણ કરવો. તથા ૩ ડ્યને
 વિષે પરધર્મનું નાસ્તિપણું અને સ્વધર્મનું અસ્તિપણું તે

स्यात् पदे ग्रहण करवा योग्य पण वचननुं कामे प्रव
 र्तन ठे तेथीं वर्तमान एक समयें वचनें अगोचर ए
 टले नथी कहेवा योग्य माटे ते स्यात् अवक्तव्य
 नामें त्रीजो जंग जाणवो. तथा ४ अवक्तव्यधर्म ते
 एक समयें वचनथी कहेवाय नही, केम के स्यादस्ति
 कथनें पण असंख्याता समय लागे, अने स्यात् नास्ति
 कथनें पण असंख्याता समय लागे, माटे एक समयें
 अस्ति नास्ति वेदुनुं ग्रहण ते स्यात् अस्ति नास्ति
 नामें चोथो जंग जाणवो. तथा ५ स्यात् अस्ति ना
 स्तिनुं वक्तव्य एटले कहेवुं अने अवक्तव्य एटले न
 कहेवुं, एवी शंका निवारवाने अर्थें स्यात् अस्ति अ
 वक्तव्य ए पांचमो जंग, तेमज ६ स्यात् नास्ति अव
 क्तव्य ठठो जंग जाणवो. अने ७ स्यात् पदे ग्रहण
 जे अस्तिनाव, तेनुं वक्तव्य तथा अवक्तव्य तथा ना
 स्तिनावनुं वक्तव्य अने अवक्तव्य ते एक वस्तुना
 गुण तथा पर्यायनुं एक समयमां न कहेवाय, केम
 के अस्ति कहेते थके नास्तिनो मृषावाद लागे अने
 नास्ति कहेते थके अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे वे
 दुनुं अवक्तव्य एक समयमां ठे, तेथी स्यात् अस्ति
 नास्ति अवक्तव्य ए सातमो जंग जाणवो.

(૨૧૯)

વલી એ સત્તજંગી નિત્ય તથા અનિત્યને વિષે તથા સામાન્ય ધર્મ વિશેષ ધર્મને વિષે તથા ગુણ પર્યાયને વિષે તથા જ્ઞાન દર્શન તથા સ્વજાતિ ધિજાતિને વિષે એમ પંચાસ્તિકાયામાં એકેક ડબ્બને નિત્ય અનિત્ય એક અનેક સત્ અસત્ વક્તવ્ય નવક્તવ્ય, એ આઠ પદ્ધતિ તેની સત્તજંગીયો કરવી એ અનંતી સત્તજંગી ઉત્પન્ન થાય, તે સુવિહિત ગીતાશ્રેષ્ઠી સમજી લેવી.

તથા અસ્તિજાવનો અજાવ કહો, તો પદાર્થમાં ગુણનો અજાવ હોય, તેવારે પદાર્થનું શૂન્ય પણું થઈ જાય. કદાપિ નાસ્તિજાવનો અજાવ કહો, તો પરજાવનું શૂન્ય પણું થઈ જાય, તેવારે સર્વ જીવ સિદ્ધસ્વરૂપી કર્મ રહિત થવા જોઈયે, એ મહોટું દૂષણ આવે ?

તથા તત્ત્વાર્થ ગ્રંથમાં અવ્યય, નિત્ય, એકં, અપ્રચ્યુત જે ચલાયમાન ન થાય, એ પ્રથમ નિત્ય કહ્યું છે. અને બીજું પરંપરાનિત્ય કહ્યું છે. વલી એ ડબ્બ તે એક કુર્ધ્વ પ્રચય અને બીજો તિર્યગ્ પ્રચય તે ડબ્બથી નિત્યસ્વજાવ કહીયે. અને નાના પ્રકારે પર્યાયનું ઉપજવું તથા વિણસવું તે અનિત્ય સ્વજાવ કહીયે.

તેમાં નિત્યસ્વજાવ બે પ્રકારે છે. કૂટસ્થ નિત્યતા અને બીજો પ્રદેશાદિ પારિણામિક જ્ઞાનાદિ જે ગુણ

તેનું ઉત્પાદ વ્યય અનેક પ્રકારે તથા વિસ્ત્રસા અને પ્રયોગસા એ બે પ્રકારના જે પુજ્જન અને સર્વ ધર્માસ્તિ કાયાદિ ડ્વ્યના જે ચલન સહકારાદિ ગુણ તથા ઉત્પાદ વ્યય પર્યાય ચલન સહકારાદિ જે ગુણ તે ધ્રુવ છે, એ વાત જેને વિસ્તારે જાણવી હોય, તેણે અનેકાંત જયપતાકા ગ્રંથથી જાણવી.

તથા સિદ્ધાત્મા કેવલજ્ઞાનેં કરી ઘટપટાદિ સર્વ પદાર્થને ચથાર્થ જાણે તથા દેખે, તેમાં પ્રથમ સમયે ઘટ પ્રતિજ્ઞાસ જાણે દેખે, બીજે સમયે ઘટ ધ્વંસને જાણે દેખે, તેવારે ઘટના પ્રતિજ્ઞાસનો વ્યય થયો અને કપાલાદિ જે ઠીકરા કટકા તેનો ઉત્પાદ થયો અને જ્ઞાનરૂપ જે જાણપણું તે તો ધ્રુવ છે, એ ત્રિપદી સિદ્ધાત્માને વિષે જાણવી.

તેમજ ધર્માસ્તિકાય ડ્વ્ય તે એક સમયે સંખ્યા તા પરમાણુને ચલન સહાય કરે, અને બીજે સમયે અસંખ્યાતા પરમાણુને ચલન સહાય કરે, તેવારે સંખ્યા તાનો વ્યય અને અસંખ્યાતાનો ઉત્પાદ થયો. અને ચલનસહાય ગુણ ધ્રુવ પાળે છે, એ ધર્માસ્તિકાયમાં ત્રિપદી જાણવી. એમ અધર્માસ્તિકાયાદિ સર્વ ડ્વ્યને વિષે ‘ઉપ્પન્ને વા, વિગમેવા, ધ્રુવે વા’ એ ત્રિપદી જા

ણવી. તથા વલી અગુરુ લઘુ પર્યાયનો ષડ્ગુણ હાનિ
વૃદ્ધિ રૂપ ઉત્પાદ વ્યય તો સર્વ ડ્વ્યને વિષે થઈ રહ્યો
હે અને તે સર્વ ડ્વ્ય પણે ધ્રુવ હે.

તથા તત્ત્વાર્થવૃત્તિમાં આકાશાસ્તિકાયને અધિકા
રેં અલોકાકાશને વિષે જો પણ જીવ પુજ્જાદિ અન્ય
કોઈ પણ ડ્વ્ય નથી તો પણ તેમાં અગુરુ લઘુ પર્યા
યની હાનિવૃદ્ધિ રૂપ ઉત્પાદ વ્યય અવશ્ય હે.

તથા જગવતીજીની ટીકામાં કહ્યું હે કે અસ્તિપર્યા
યથી સામર્થ્ય પર્યાય અનંત ગુણા અધિક હે, તેમાં
પણ પૂર્વ પર્યાયનો નાશ અને નવા પર્યાયનું ઉપજવું
તે ઉત્પાદ વ્યય જાણવો અને પર્યાય પણું તે ધ્રુવ હે.
એમ સર્વ પદાર્થને વિષે ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રુવપણું હે.

તથા નિન્ન નિન્ન પર્યાય પ્રવર્તન સ્વકાર્ય કરવાને
સામર્થ્યજૂત જે વિશેષ સ્વજાવ પર્યાય ॥તદ્યથા॥ ૧ પારિ
ણામિકતા, ૨ કર્તૃતા, ૩ ક્ષાયકતા, ૪ ગ્રાહકતા,
૫ જોકૃતા, ૬ રક્ષણતા, ૭ વ્યાપ્યવ્યાપકતા, ૮ આધા
રાધેયતા, ૯ જન્યજનકતા, ૧૦ અગુરુલઘુતા, ૧૧
વિનૂતકારણતા, ૧૨ કારકતા, ૧૩ પ્રજુતા, ૧૪
જાવુંકતા, ૧૫ અજાવુંકતા, ૧૬ સ્વકાર્યતા, ૧૭
સપ્રદેશતા, ૧૮ ગતિસ્વજાવતા, ૧૯ સ્થિતિસ્વજાવતા,

२० अवगाहकस्वजावता, २१ अखंमता, २२ अचलता, २३ असंगता, २४ अक्रियता, २५ सक्रियता. इत्यादि नाना प्रकारनां पर्याय लक्षण ठे.

तथा सम्मतिग्रंथमां कह्युं ठे, के वस्तु सत्ताधर्मेने निषे उपाधि नथी उपाधि तो उपचारथी कल्पित मात्र ठे. कारण के वस्तु सत्ता धर्म तो परस्पर मांहो मांहो कोइनो कोइना स्वजावमां मलतो नथी.

धर्मास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने गतिसहाय, ए चार गुण ठे. तथा अधर्मास्तिकायना अमूर्ति, अचेतन, अक्रिय अने स्थितिसहाय, ए चार गुण. तथा आकाशास्तिकायना अमूर्ति, अचेतन, अक्रिय अने अवगाहना, ए चार गुण. तथा पुनः लास्तिकायना रूपी, अचेतन, सक्रिय अने पूरणगलन, वर्ण, गंध, रस, फरसादि ए चार गुण. तथा जीवास्तिकायना ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अव्याबाध, अमूर्ति, अगुरुलघु, अनवगाहादि गुण जाणवा. ए पंचास्तिकायना गुण कह्या. अने ठहुं कालइव्य तो उपचार मात्र ठे, तेना अरूपी, अचेतन, अक्रिय, नवपुराण वर्तना लक्षण चार गुण जाणवा ॥ इति ॥

हवे ठ इव्यना पर्याय कहे ठे:—धर्मास्तिकाय, अ

धर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय, ए त्रण इव्यना खंध, देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय सर खा जाणवा. तथा पुजलास्तिकायना खंध, देश, प्रदेश अने परमाणु, ए चार पर्याय जाणवा. तथा जीवास्तिकायना अव्याबाध, अनवगाह, अमूर्ति अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय जाणवा. तथा काल इव्यना अतीत, अनागत, वर्तमान अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय जाणवा. इत्यादि प्रकारें पर्याय जाणवा.

तथा चेतनादि पङ्कइव्यनो विशेष गुण ते जेम धर्मास्तिकायनो चलनसहाय गुणादि ते सर्व इव्यव्यं जनपर्याय कह्यें. तथा गुणपर्याय ते गुण अविनाग पणे तथा गुणव्यंजन पर्याय ते द्वायकतादि कार्यरूप तथा मतिज्ञानादि ज्ञानचक्षु, दर्शनादि दर्शन, कृमा मर्दवादि चारित्र, अवर्ण, अगंध, अरस, अस्पर्श. अमूर्त्यादि गुणव्यंजन पर्याय जाणवा. तथा अगुरुलघु षट् गुण हानि वृद्धिरूप ते स्वप्नाव पर्याय जाणवा. तथा जीवने नरकादि परित्रमण करवुं, ते विज्ञाव पर्याय जाणवा तथा मेरुपर्वतादि शाश्वता पदार्थ ते पुजलइव्यना अनादि नित्य पर्याय जाणवा तथा अनादि अनंत, अनादिसांत, सादिसांत, अने सादि अनंत

त, ए चार जांगा सर्व शाश्वती तथा अशाश्वती वस्तु अने जव्य तथा अजव्यने विषे पामीयें, ए सर्व पर्यायना जेद ठे ते इहां लख्या नथी. एम अनंत जेदें पर्याय ठे.

तथा नामादि चार निक्षेपा ते पण सर्व पदार्थ मात्रना सहज वस्तु पर्याय ठे. “एवं चत्वारो वस्तु पर्यायाः” इति जाण्य वचनात् ॥ नामयुक्त प्रतिवस्तुनि निक्षेप चतुष्टयम् युक्तम् उक्तं चानुयोगद्वारेण ॥ जञ्ज य जं जा णिज्जा, निस्केवं निस्केवे निरविसेसं ॥ जञ्ज य नो जा णिज्जा, चउक्कयं निस्केवे तञ्ज ॥ अर्थः— जो जाणवा नी शक्ति होय तो निक्षेपा विशेष प्रकारें करवा. परंतु वधारे निक्षेपा करवानी बुद्धि न होय, तो पण चार निक्षेपा तो अवश्य करवा जोइयें. कारण के वस्तु स्थापननिक्षेप पदार्थ विना मात्र नाम निक्षेपें करी यथार्थ पणो वस्तुनो प्रतिज्ञास न थाय, माटे वस्तु पदार्थनुं स्मरण ते निराकार होय, त्यारें अनवस्थित पणुं थयुं, तेथी यथार्थ वस्तुनुं ज्ञानज न होय, माटें चार निक्षेपा तो अवश्य करवा तेनां नाम कहे ठे.

तिहां प्रथम नाम निक्षेपाना वे जेद ठे, तेमां एक तो सहजथी जीव अथवा अजीवनुं नाम तो होयज ठे, बीजुं पांच मनुष्य जेलां मलीने नाम पाडे, ते सांके

તિક નામ જાણવું. તથા બીજો સ્થાપના નિદેષ પણ બે પ્રકારે, તેમાં એક સહજ સ્થાપના અને બીજી આરોપ સ્થાપના. હવે ત્રીજો ડ્વ્ય નિદેષો બે પ્રકારે. તેમાં એક આગમથી ડ્વ્યનિદેષો તે યથાર્થ જ્ઞાન, ઉપયોગ રહિત. જેમ તીર્થકરના જીવ, તે ડ્વ્ય તીર્થકર કહેવાય છે, તે જાણવો. તથા બીજો નોઆગમ ડ્વ્યનિદેષો તે જ્ઞાનીનું તથા જવ્યનું શરીર તેથી અજ્ઞનું છે, તે જાણવો. ચોથો જાવનિદેષો પણ એક આગમથી બીજો નોઆગમથી એવા બે પ્રકારે છે. તદર્થતદ્ગુણમય તદ્જ્ઞાનોપયુક્ત વસ્તુ સ્વધર્મયુક્ત યથાર્થ જ્ઞાનોપયોગસહિત જાવનિદેષઃ ॥ તત્ર નિદેષા વસ્તુનઃ સ્વપર્યાય ધર્મજેદાઃ નયાસ્તુ પદાર્થજ્ઞાને જ્ઞાનાંશાઃ ॥ તત્રાનંતધર્માત્મકે વસ્તુન્યેકધર્મોન્નયનં જ્ઞાનં નયઃ ॥ અર્થઃ— તથા નિદેષા જે છે, તે વસ્તુના પર્યાય ધર્મજેદ નય છે, અને નય જે છે, તે વસ્તુ પદાર્થ જ્ઞાનના અંશ છે એટલે અનંત ધર્મમય એવા જે જીવાદિ વસ્તુ પદાર્થ, તેના જ્ઞાનનું પમાડવું, તેને નય કહીયે.

રત્નાકરગ્રંથે કહ્યું છે, કે જે શ્રુતનો અર્થ પ્રથમ કીધો તેનો બીજો અંશ જે અર્થ કરવો તેને ઔદાસીન્ય કહીયે. તેનો અનિપ્રાયાંશનયઉત્તર તેને વિ

શેષ નય કહીયે, તથા વિશેષ નયનો અનિપ્રાયાર્થ, વલી તેનો અર્થ, વલી અનિપ્રાયાર્થ, એમ ઉપરાઉપર અનિપ્રાય તર્કવાદ તેને નયાનાસ કહીયે. તે નયા નાસ બે પ્રકારે. એક વ્યાસ, બીજો સમાસ.

તેમાં વ્યાસ જે છે, તેતો અનેક વિકલ્પ કહીયે. અને જિહાં અનેક પ્રકારે વિકલ્પ વર્તે, તિહાં દેવ, ગુરુ અને ધર્મ, એ ત્રણે તત્ત્વની સાચી શ્રદ્ધા ફેમ હોય? અર્થાત્ નજ હોય. જે માટે શ્રીઆનંદધનજી મહારાજે સ્વરૂત ચોવીશીના બીજા શ્રીઅજિતનાથ જીના સ્તવનમાં કહ્યું છે, કે “ તર્કવિચારે રે વાદપરં પરા રે, પાર ન પહોંચે રે કોય ॥ અનિમત્તે વસ્તુ વસ્તુગતે કહે રે, તે વિરલા જગ જોય ॥ પંથહો નિહાલું રે બીજાં જિન તણો રે ” ॥ એ પ્રથમ વિકલ્પ જેદ કહ્યો.

હવે બીજો સમાસ બે પ્રકારે છે. એક ડ્વ્યાર્થિક, બીજો પર્યાયાર્થિક. તેમાં નૈગમ, સંગ્રહ, વ્યવહાર અને રૂઝુસૂત્ર, એ ચાર નય ડ્વ્યાર્થિક છે તથા શબ્દ, સમ નિરૂઢ અને એવંજૂત, એ ત્રણ નય પર્યાયાર્થિક છે. વિકલ્પાંતરે તો રૂઝુસૂત્રને પણ પર્યાયાર્થમાં ગણ્યો છે.

તેમાં પ્રથમ નૈગમ નયના આરોપ, અંશ અને સંકલ્પ, એ ત્રણ પ્રકાર જાણવા. અને શ્રીવિશેષાવશ્યકે

તો ઉપચારેં નિન્ન ગ્રહણ ચાર પ્રકારેં કહ્યું છે. સ્હાં, નથી એક ગમ્ય આશય વિશેષો જેને તેને નૈગમ કહીયેં. યદુક્તં નયચક્રે ॥ ન વિદ્યતે એકગમા આશયવિશેષા यस્ય સઃ નૈગમઃ ॥ તત્ર ચતુઃપ્રકાર આરોપઃ ॥ હવે આરોપના ચાર પ્રકાર કહે છે. ડ્વ્યારોપ, ગુણારોપ, કાજારોપ અને કારણારોપ. એ ચારના અર્થ કહે છે.

તિહાં જે ગુણને વિષે ડ્વ્યનો આરોપ કરે, તે આવી રીતેં કેઃ-- પંચાસ્તિકાયને વિષે જે નવા પુરાણા વર્તેના લક્ષણ ગુણ છે, તે કાલ છે, તે કાલ પંચાસ્તિકા યથી જૂડું ડ્વ્ય છે, કેમ કે કાલ અપ્રદેશી છે, અને પ્રદેશ વિના ડ્વ્ય ન હોય. પણ સ્હાં કાલ ડ્વ્ય ઝ ચારણેં બોલવું, તે ગુણને વિષે ડ્વ્યારોપ કહીયેં.

તથા ડ્વ્યને વિષે ગુણનો આરોપ કરે, તે આવી રીતેં, કેઃ-- જીવડ્વ્ય છે, તે નરક નિર્ગોદાદિકને વિષે પરિત્રમણ કરી રહ્યું છે તથા આઠ કર્મના આવરણેં કરી આત્માના જ્ઞાનાદિ ગુણ છે તે અવરાયા છે, ઢાં ક્યા છે, તો પણ 'જ્ઞાનમેવાત્મા' એટલે આત્મા જ્ઞાની અનંતવીર્ય શક્તિનો ધણી છે. તે ડ્વ્યને વિષે ગુણનો આરોપ કહ્યો, માટેં એ બીજો ગુણારોપ જાણવો.

તથા વર્તમાન કાલને વિષે અતીત કાલનો આરોપ

करवो, ते जेस के:-दीवालीनो दिवस आवे थके एवुं बो लीयें जे आज दिवसें श्रीवीर जगवान् मोहू गया ठे! ते वर्तमानने विषे अतीत कालनो आरोप कखो. तथा आज दिवसें पद्मनाभ तीर्थकरनो जन्म अथवा निर्वाण कहेवुं, ते वर्तमानने विषे अनागत कालनो आरोप कखो, ए प्रकारें त्रीजो कालारोप जाणवो.

तथा कारणने विषे कार्यनो आरोप एठने स्या पन करवुं, ते कहे ठे, बाह्यक्रिया रूप जे धर्म ठे ते सर्व धर्म पामवानुं कारण ठे, ते कारणने धर्म करी कहेवुं ते कारणने विषे कार्यनो आरोप कखो कहेवाय. ए चोथो कारणारोप. ए चार प्रकारें आरोप कहा.

हवे संकल्प बे प्रकारना कहे ठे:-तिहां एक तो पोताना आत्मानो स्वपरिणाम रूप संकल्प अने बीजो कार्यतर संकल्प ते स्वकार्य विना परकार्य रूप संकल्प जाणवो. एम त्रीजो नैगमनयनो जेद अंश ठे ते पण एक स्वअंश अने बीजो पर अंश ए बे प्रकारें ठे. ए रीतें आरोप, संकल्प अने अंश, ए त्रण प्रकारें नैगम नय कह्यो. एम जिन्नाजिन्न नैगम नयना सो जेद थाय ॥ इति नैगमनयः ॥

हवे संग्रह नयनुं स्वरूप कहे ठे:-“ सामान्यव

(૨૨૯)

સ્તુસત્તાસંગ્રાહકઃસંગ્રહઃ” જે સામાન્યે વસ્તુ સત્તાનું ગ્રહણ કરે,તે સંગ્રહ નય છે, તેવે પ્રકારે છે. એક સામાન્ય સંગ્રહ,બીજો વિશેષ સંગ્રહ; તિહાં સામાન્ય સંગ્રહના વે જેદ છે, એક મૂલજેદ, બીજો ઉત્તરજેદ; તેમાં મૂલજેદ તે તો અસ્તિત્વાદિ જેદે ઠ પ્રકારે છે, તે પ્રથમ લેખાઈ ગયા છે, માટે ફરી નથી લેખતા અને બીજો ઉત્તર જેદ, તે જાતિ સમુદાય જેદ રૂપ તેમાં જાતિ તે ‘ગવિ ગોત્વં, ઘટે ઘટત્વં, વનસ્પતૌ વનસ્પતિત્વં’ તિ હાં ગવિ જે ગાયની જાતિ તે એકનું ગ્રહણ કરવાથી સર્વેનું ગ્રહણ થાય, તેમજ એક ઘટનું તથા એકજ વનસ્પતિ જાતિનું ગ્રહણ કરવાથી સર્વનું ગ્રહણ થાય છે, અને સમુદાય તે સહકાર જે આંવાનો સમુદાય તે આશ્રવનં તથા મનુષ્યનો સમુદાય તે મનુષ્ય વંદ કહીયે. ઇત્યાદિ સમુદાયરૂપ જાણવો.

તથા ઉર્ધ્વે એટલે સમુચ્ચયે જે ઇચ્છ્ય એવું નામ ગ્રહણ તેમાં તો કાંઈ જીવ તથા અજીવનો વિવેચન જેદ ન પડ્યો,તે સામાન્ય સંગ્રહ કહીયે. અને એકજ જીવ ઇચ્છ્ય એવું નામ લેવાથી બીજા અજીવ ઇચ્છ્ય સર્વ ટલ્યાં માત્ર એકનુંજ ગ્રહણ થયું. તે વિશેષ સંગ્રહ જાણવો.

અથવા વિશેષાવશ્યકે કહ્યું છે, જે સામાન્યરૂપ

इव्यनुं ग्रहण करवाथी सर्व वस्तु सत्तामात्रनुं ग्रहण थाय. ते उपर दृष्टांत कहे ठे. जेम कोइक राजादि पुरुष, पोताना सेवकने कहे के दातण जाव ? तेवारें ते दास, पाणी रुमाल प्रमुख सर्व दातणनी सामग्री साथें लइ आवे, एम एकमां सर्वनो संग्रह थयो, माटे संग्रह नय सत्ताग्राही कह्यो ॥ इति संग्रहनयः ॥

हवे व्यवहार नय कहे ठे:—संग्रहनयें ग्रहण करी जे वस्तु ते वस्तुने जेदांतरें विजंजन करवुं, एटले वि वेचन करवुं, वहेंचण करी नाखवी. तथा तेने विषे प्रवर्तवुं, तेने व्यवहारनय कहीयें. ते व्यवहार बे प्रकारें ठे. एक शुद्ध व्यवहार, बीजो अशुद्ध व्यवहार.

हवें वली शुद्ध व्यवहार बे प्रकारें ठे:—एक तो यथार्थ जेम ठे, तेमज वस्तुगत व्यवहार जे धर्मा स्तिकायादि इव्य चलन सहाकारादि स्वभाव तथा जीवस्वभाव लोकालोकादि ज्ञानरूप संपूर्ण परमात्म जाव साधनरूप ते प्रथम जेद जाणवो. अने अरिहं तादिकना जे साधक अवस्था रूप गुण तथा नीचला अशुद्ध गुणस्थाकनुं ठामवुं, अने उपला शुद्ध गुण स्थानकनुं ग्रहण करवुं, एवुं जे गुणश्रेष्ठारोहणादि साधनरूप, ते शुद्ध व्यवहार, ए बीजो जेद जाणवो.

હવે અશુદ્ધવ્યવહારના બે જેદ કહે છે:—તેમાં એક મતિજ્ઞાનાદિક અશુદ્ધગુણને આત્મા કહી બોલાવીયેં, તે સદ્ગુણ વ્યવહાર નય કહીયેં. તથા બીજો ક્રોધી, માની, માયી, લોજી, એમ આત્માને કષાયી કહીયેં તથા હું મનુષ્ય છું, સંસારી છું, દેવ છું, ઇત્યાદિ કહે વું, તે સર્વ અસદ્ગુણ વ્યવહાર નયની અપેક્ષા જાણવી.

અસદ્ગુણ વ્યવહારના વળી બે જેદ છે. એક સંશ્લેષિત અશુદ્ધ વ્યવહાર, બીજો અસંશ્લેષિત અશુદ્ધ વ્યવહાર. તિહાં આ શરીર મહારું છે, હું ડુઃખી છું, સુખી છું, ઇત્યાદિ બહિરાત્મા થકો જડ સ્વભાવ પુજલ જાવને આત્મા કરી માને, તે સંશ્લેષિત અશુદ્ધ વ્યવહાર કહીયેં. તથા પુત્ર કલત્રાદિ સર્વ મહારાં સર્વાં છે, હું તેમનો છું, તે અસંશ્લેષિત અશુદ્ધ વ્યવહાર કહીયેં. તે ઉપચરિત અને અનુપચરિત એવા બે જેદે છે. તિહાં ઘર, હાટ, ક્ષેત્ર, ગાય, જેષ, અશ્વાદિ પરિગ્રહ એ સર્વ મહારું છે, એ વ્યવહાર, સંસારવૃદ્ધિનું કારણ વર્જવા યોગ્ય છે. તે ઉપચરિતાનુપચરિત કહીયેં.

તથા સ્વગુણ પ્રવૃત્તિરૂપ વ્યવહાર વસ્તુત્વે વર્તવા યોગ્ય તેના બે પ્રકાર છે. એક વિનંજન અને બીજી પ્રવૃત્તિ. તે પ્રવૃત્તિ વ્યવહાર, વળી ત્રણ પ્રકારે છે.

એક વસ્તુપ્રવૃત્તિ, બીજી સાધન પ્રવૃત્તિ અને ત્રીજી લૌકિક પ્રવૃત્તિ, તેમાં વલી સાધન પ્રવૃત્તિ ત્રણ પ્રકારે છે. એક લોકોત્તર, બીજી લૌકિક અને ત્રીજી કુપ્રાવચનિક. ઇત્યાદિ વ્યવહારનયનું વિસ્તારે સ્વરૂપ, શ્રીવિરોપાવશ્યકથી જાણવું ॥ ઇતિ વ્યવહાર નય સ્વરૂપમ્ ॥

હવે ચોથો રૂઝુસૂત્ર નય કહે છે. રૂઝુ અવકં સૂત્રમસ્યાસૌ રૂઝુસૂત્રઃ ॥ રૂઝુ એટલે સરલ છે સૂત્ર જેનું પણ વક્ર નથી, તેને રૂઝુસૂત્ર કહીયે. એનું વર્તવું, તે વર્તમાન કાલ એક સમયનુંજ છે. પણ અતીત તથા અનાગત કાલની અપેક્ષા એમાં નથી. એના બે જોડ છે. એક સૂક્ષ્મ પરિણામગ્રાહી તે સૂક્ષ્મ રૂઝુસૂત્ર અને બીજો બાહ્ય મહોટા પરિણામગ્રાહી તે સ્થૂળ રૂઝુસૂત્ર જાણવું. જેમાટેં એ નય, પરિણામગ્રાહી છે, જેમ કોઈ પુરુષ, મુનિવેષધારી છે, પરંતુ તેના પરિણામ વિષય કષાયમાં વર્તે છે, તો તે વચ્ચત એ નયની અપેક્ષાયેં તેને ગૃહસ્થ કહિ બોલાવે, અને કોઈ ગૃહસ્થને વેષેં ઠતાં પણ જો તેના પરિણામ મુનિરાજ જેવા વર્તતા હોય, તો તેને સાધુ કહી બોલાવે ॥ યતઃ ॥ રૂઝુસૂત્રં વર્તમાન ગ્રાહકં તદ્વર્તમાનં નામાદિ ચતુઃપ્રકારં ગ્રાહ્યં ॥ ઇતિ રૂઝુસૂત્રનયઃ ॥ ૪ ॥

હવે પાંચમો શબ્દનય કહે છે:—શપ્ આક્રોશે । શપ નમાહ્વાનમિતિ શબ્દ: જે રુજુસૂત્ર નય વર્તમાન વસ્તુ ગ્રાહક તે વર્તમાન વસ્તુને નામાદિ ચાર પ્રકારના નિદ્દેપ સહિત ગ્રહણ કરે, તે શબ્દ નય તથા આક્રો શ એટલે ઝચ્ચસ્વરેં આહ્વાન એટલે બોલાવવું, તે શબ્દ નય વાચક અર્થ છે. જે માટે એ શબ્દ નયથી સર્વ વ્યાકરણ શાસ્ત્ર, શબ્દ, વચન, લિંગ, વિનક્તિ પ્રગટ થઈ છે. તથા સ્વપર સત્તાનું જે વિવેચન એટલે વેંચવું પ્રગટ પણે શબ્દ ગોચર નામ લઈ બોલાવવું, તથા રુ જુસૂત્ર પરિણામગ્રાહી છે, તે રુજુસૂત્રથી વળી વિશેષ વસ્તુ પદાર્થનું જાણવું, તે શબ્દ નય છે. અને રુજુ સૂત્ર સામાન્ય પરિણામગ્રાહી છે, તે તો સમ્યક્ત્વ વિના મિથ્યાત્વીને પણ હોય ॥ ઇતિ શબ્દ નય: ॥ ૫ ॥

હવે ષષ્ઠો સમનિરૂઢ નય કહે છે:—યાં યાં સંજ્ઞાં ઘટાદિલક્ષણાં નાષતે વદતિ તાં તામેવ યસ્માત્ સંજ્ઞાં તરાર્થવિમુક્ષ: સમનિરૂઢો નય: ॥ તથા એ સમનિ રૂઢ નય નાના પ્રકારનું નાસન કરે, અને એક પર્યાય માત્રની અપેક્ષા જાણવાથી સર્વ પર્યાયને જાણે, દે સ્વે, યથાર્થ વસ્તુ પદાર્થ ઘટ પટાદિ રૂપ તેને ડ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ અને નાવથી પ્રગટ ગોચર બોલવું, તથા

ज्यां सुधी वस्तुमां एक पर्यायनुं न्यून पणुं होय, त्यां सुधी ते वस्तुने पूर्णता न कहे, जेम शब्दनय, घट पटादि रूपनुं विवेचन शब्द वडे जासन करे, परंतु तेनां इव्य, क्षेत्र, काल अने जावने न जाणे, अने ए समजिरूढ नय इव्यादि चारे जेदें वस्तुने पूर्ण पणो जाणे, ए नय संपूर्ण केवल ज्ञाननी प्राप्तिरूप ठे ॥

हवे सातमो एवंनूत नय कहे ठे:—जे रीतें सम जिरूढ नय कह्यो, ते रीतें ए नय पण सर्व पदार्थने जाणे, देखे, परंतु एटलुं विशेष जे “अयं हि योपिन्म स्तकारूढं जलाहरणादिक्रियानिमित्तं घटमानमेव चेष्टमानमेव घटं मन्यते ॥ नतु गृहकोणादि व्यवस्थितं विशेषतः इत्यादि ” एटले संपूर्ण जलें जख्यो खीने मस्तकें चडेलो एवो चेष्टावालो घट देखे, तेनेज घट कही बोलावे, परंतु जल जख्या विना खाली होय तथा घरने खूणे नीचें जमीन उपर पडेलो होय, तेने घट करी माने नही, जेम केवली जगवान् तेरमे गुण ठाणे विचरे ठे, तेने पण संसारीज कहे परंतु जे सिद्ध क्षेत्रमां जइ बिराजमान थाय, तेनेज सिद्ध कहें. बीजा ने न कहे. इत्यादि एवंनूत नय जाणवो ॥ इति ॥ ७॥

ए रीतें अंशग्राही अनेक आशयमां वर्त्ते, ते नैग

(૧૩૫)

મનય, ૧ સત્તાનું ગ્રહણ કરે, તે સંગ્રહ.નય, ૨ ગુણ પ્રવૃત્તિ લોકપ્રવૃત્તિ ગ્રાહ્ય તે વ્યવહાર નય, ૪ કારણ પરિણામગ્રાહી તે રુઝુસૂત્ર નય, ૫ વ્યક્ત જે જાસન કાર્યગ્રાહી તે શબ્દનય, ૬ પર્યાયાંતર નિન્નકાર્યગ્રાહી તે સમનિરૂઢ નય, ૭ તે સમનિરૂઢ નયયુક્ત સંપૂર્ણ મુખ્ય કાર્યગ્રાહી, તે એવંજૂત નય જાણવો.

इत्यादि अनेक रूप नयवाद ठे “ जावंतिया वय एप्पहा, तावंतिया चेव हुंति नयवाया ॥ ” ए वचनथी जे जे वचनना पद प्रकाश ते ते सर्व नयगर्जित वचन जाणवा. ए नयाधिकार, विस्तारथी तो श्रीअनु योगद्वार, तत्त्वार्थवृत्ति, विशेषावश्यक, स्याद्वादवादर त्नाकरादिक ग्रंथोथी जाणवो ॥ इति नयाधिकारः ॥

हवे “ सकल नयग्राहकं प्रमाणं ” ए वचनथी सर्व नयनું ગ્રહણ કરવું, તે પ્રમાણથી થાય છે. તથા આત્મા પણ પ્રત્યક્ષાદિ પ્રમાણોથી સિદ્ધ થાય છે. જેમ સાક્ષાત્ ચૈતન્ય સ્વરૂપ, પરિણામી, કર્તા, જો ક્તા, સ્વદેહ પરિમાણ, પ્રતિક્ષેત્ર નિન્નનિન્ન, તથા પાંચ કારણ સામગ્રી મલ્યા સમ્યગ્ દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્ર ના સાધનથી સિદ્ધતાને પામે, એવો આત્મા, સ્વપર ના વ્યવસાય એટલે વ્યાપારનું જ્ઞાન એટલે જે જાણવું.

ઇત્યાદિ સર્વ વાતો પ્રમાણથી સિદ્ધ થાય. તે પ્રમાણ વે પ્રકારનાં છે. એક પ્રત્યક્ષ અને બીજું પરોક્ષ.

તેમાં લોકાલોકનું સ્વરૂપ યથાર્થ પણે પ્રત્યક્ષ જાણવું, દેખવું, તે તો કેવલજ્ઞાન અને કેવલ દર્શન થી થાય. અને આત્મોપયોગથી ઇન્દ્રિય દ્વારાયેં જે જાણવું, દેખવું થાય, તથા અવધિજ્ઞાન અને મનઃપર્યવજ્ઞાનથી જાણવું દેખવું થાય, તે દેશયકી થાય, પરંતુ સર્વથકી પ્રત્યક્ષ જાણવું તો કેવલજ્ઞાનથીજ થાય.

તથા શ્રુતજ્ઞાન તે પરોક્ષજ્ઞાન છે, તે ચાર પ્રકારેં છે. એક અનુમાન પ્રમાણ, બીજું ઉપમા પ્રમાણ, ત્રીજું આગમ પ્રમાણ, ચોથું અર્થાપત્તિ પ્રમાણ, એવં ચાર પરોક્ષ પ્રમાણ જાણવાં.

તેમાં પ્રથમ અનુમાન પ્રમાણ, તે જેવું લિંગ એટલે વેષ દેખે, તેવું પ્રમાણ કરે, જેમ ઠ દર્શનના સાધુ તથા ગૃહસ્થ સર્વનો વેષ જોડને અનુમાન કરે, જે આ અમુક દર્શનનો છે, યત્ર ધૂમસ્ત્રાગ્નિઃ અથવા યથા મહા નસં ॥ અર્થઃ—પર્વત ઉપર દાવાનલ લાગવાથી આકાશેં ધૂમ ચાલે તે ધૂમ દેખીને અગ્નિનું અનુમાન થાય. અથવા ઘરમાંથી ધૂમ નીકળતો જોડને રસોડાનું અનુમાન થાય. એ ન્યાય જાણવો. એમજ શરીરના પાંચ અવયવ દે

खवाथी अनुमान थाय ते सर्व अनुमान प्रमाण जाणवुं.

हवे बीजुं उपमान प्रमाण कहे ठे:—सदृश एटले समान वस्तु देखवाथी पूर्व अनुजवेली दीठेलीवस्तुनुं ज्ञान थाय “यथागोस्तथा गवयः” ए वचनथी जेवी गाय तेवुंज गवय एटले रोज होय, तेथी गायनुं ज्ञान थाय एम स्त्री पुरुषादि जे तुल्यरूप देखवाथी पूर्व वस्तुनुं जाणपणुं थाय, ते उपमान प्रमाण जाणवुं.

हवे त्रीजुं आगम प्रमाण कहे ठे:—यथार्थोपदेष्टा पुरुष आत्मः सहि उत्कृष्टतोवीतरागः सर्वज्ञ एव. आत्मोक्तं वाक्यं आगमः॥ इति वचनात् ॥ यथार्थ ते जेम ठे तेमज उपदेशनो करनार एवो जे पुरुष ते आत्म क हीयें. सर्वथी उत्कृष्ट अने रागद्वेष रहित श्रीवीतराग सर्वज्ञ लोकालोक स्वरूपना ज्ञायक तेणें पोतें कहेलां वचन, तेने आगम कहियें, ते आगम वचन कहेवां ठे? तो के पूर्वापर विरोध, मिथ्यात्व, असंयम, कषाय चांति तेणें करी रहित, स्याद्वादोपेत जे वचन, ते आगम प्रमाण जाणवुं.

हवे चोथुं अर्थापत्ति प्रमाण कहे ठे:— ‘लिंग ग्रहणात् ज्ञेयज्ञानोपकारकं अर्थापत्ति प्रमाणं यथा पीनो देवदत्तोद्दिवा न भुंक्ते अर्थाश्चात्रौ भुंक्ते एव ॥’ इत्यादि

प्रमाणं इति वचनात् ॥ लिंग ग्रहण ते जेबुं लिंग ते
बुंज ज्ञान थाय माटे ज्ञेय ते ज्ञाननुं उपकारी. जेम
देवदत्त शरीरें पुष्ट ठे, ते दिवसें नथी जमतो, रात्रें
जमे ठे. इत्यादि अर्थापत्ति प्रमाण जाणवुं.

इत्यादि नय, निक्षेप, प्रमाण, कारण, हेय, ज्ञेय,
उपादेय, जीवाजीवस्वरूप, तत्त्वार्थश्रद्धा, सम्यग्
दर्शन, ज्ञान, चारित्र, ए रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग सा
धन, साध्यसिद्धि, ए प्रकर्ष आत्मज्ञान तथा ज्ञान
दर्शन लक्षण आत्माने विषे प्रगटे, तेमां बद्धस्थने
तो प्रथम दर्शन उपयोग होय अने पढी ज्ञान उप
योग होय तथा केवलीने प्रथम ज्ञान उपयोग अने
पढी दर्शन उपयोग होय. माटे जे घातिकर्मद्वय क
री केवलज्ञान पामी, पढी योग निरोध करी अयोगी
नाव पामी, अघातिकर्म द्वय करी सादि अनंत सु
खमय पूर्णात्म शक्ति प्रगटावे, ते जीवने धन्य ठे, सर्व
नव्य जीवोने ए कार्य श्रेयस्कर ठे ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह ग्रंथ अधिकारकों, पामे न सुर नर पार ॥
अल्पमते रचना करी, गुणिजन लियो सुधार ॥ १ ॥
संवत् उगणी चुमालीर्गें, ज्येष्ठ शुक्ल तिथि बीज ॥

(१३ए)

आदि जिणंद पसायथी, आतम पाम्यो रीज ॥ १ ॥
नरुअच बंदर नाग्यथी, मुनि सुव्रत जिनराज ॥ जेढे
जव नावठ गइ, संघ सकल सुख साज ॥ २ ॥ वेज
लपुरमां वासता, श्रावकधर्मे धीर ॥ दान मान गुणें
करी, जिम गंगाजल नीर ॥ ४ ॥ सौनाग्य विजय
प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ एह ग्रंथ रचना क
री, मयाविजय सुख थाय ॥ ५ ॥

इति श्रीमत् पंक्ति प्रवरगणि श्रीसौनाग्यविज
यजी तद्धिष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तद्धिष्य
पंन्यास श्रीहीरविजयजी तद्धिष्य मुनि श्रीमयाविज
यजी विरचितश्रीषड्व्य नय प्रकाश बालावबोध रूप
श्वतुर्यो नागः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम नाग प्रारंभः ॥

ए पांचमा नागमां निश्चय व्यवहार ज्ञान क्रिया
नय संवाद, प्रश्नोत्तर रूपें प्रदर्शित करेला ठे.

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ सुख करनकुं, जव्यजीव हितकार ॥
निश्चय अरु व्यवहार दो, कहे सिद्धांतें सार ॥ १ ॥
निश्चें आत्म स्वभाव जे, पुजल बाह्य व्यवहार ॥ क
रता विण किरिया नही, क्रिया विण नहिं किरतार ॥

१ ॥ जीव पुञ्ज दो शक्तियें, कहे षड्‌इव्य विचार ॥
पुञ्ज विण जीव अक्रियी, सिद्ध क्षेत्रमां धार ॥ ३ ॥

॥अथ क्रियावादिवाक्यं॥जो ज्ञातं जवतां पांमित्यम
होपांमित्यं यतो जवतः कवयः श्रूयंते श्रीमतां तर्कवाद
करणाशयोऽस्माजिःसह वर्त्तते? ॥ जापाः— हे जाण
पुरुषो तमें पंमितोने विपे महापंमित ठो.वली अमें त
मने कवीश्वर सांजलीयें ठैयें तेम सारो तर्कवाद अमा
री सायें करवाने तमारो आशय वर्त्तते? तो घणुं सारुं!
कारण के लोकमां पुण्यपाप रूप बंधस्थिति क्य
करीने जन्म मरणादि नय रहित एवुं अजरामर अवि
नाशि जे मोक्षपद, तेने पोंचाय ठे, माटे अमो प्रश्न करी
यें ठैयें. अथ क्रियावादि प्रश्नः॥ विवेकज्ञानेन ज्ञानक्रिय
योद्धःयोर्मध्येवा केवलक्रिययोःकरणं निरंतरं परमानंद
कारणं? यत् समीचनं तद्वाह्यं? गृहीतपक्षैःसह तर्कवा
दःप्रवर्त्तते, ततस्तूर्णं पक्षग्रहणं कार्य्यं॥ जापाः—॥विवेक
युक्त ज्ञान तेणें करी अथवा ज्ञान अने क्रिया बेदुने म
लवे करी अथवा केवल एक क्रिया करवाथीज किंवा
अकरण एटले कांइ पण नहि करवाथी निरंतर सदा पर
मानंदमय एवुं जे मोक्ष पद ते पामवा माटे ए पूर्वोक्त
क्रियादि पक्ष ठे, तेमां जे समीचीन पक्ष होय ते तमें थ

(१४१)

हण करो.परंतु जे पढ़ ग्रहण करवाथी. वली बीजो प्रतिपढ़ तर्कवाद न होय, एवो जे पढ़ तमारो ग्रहण करवा योग्य होय, ते तूर्ण एटले जलदी कहो ?

अथ ज्ञानवादेरुत्तरकथनं ॥ जो साधक ! श्रूय तां यद्भवन्निरुक्तं ज्ञानक्रिययोर्मध्ये यत्समीचीनं तद्वा ह्यं. तदवगतं श्रीमतां वचोस्मानिः ॥ जगति जनसर्वद्वानिमित्तं सकललोकव्यवस्थिताशेषजावाविकरणदत्तं प्रकटितं नजसि तरुणरविकिरणमंमलनितां तं संसारजलधिप्राप्तजंतूक्षरणद्वमं निंदितसंसारेतरनरप्रकरालंबननूतं ज्ञानमस्मदादीनामंगीकर्तुं योग्यं तदेवांगीकृतं ॥

नापाः—हे साधक ! सांजलो. जो तमें कहो वो के ज्ञान तथा क्रियामां जे सारो पढ़ होय ते ग्रहण करो, ए तमारुं वचन अमोयें जाएयुं, तो अमो कहीयें ते सांज लो.के ज्ञान जे ठे,ते सर्वे जगतना जीवोने निरंतर सुख करनारुं ठे तथा समस्त लोक संबंधी विशेष जावनुं जाएयुं विशेषजावनुं माहापण ते पण ज्ञान विना नज होय. जेम आकाशमां तरुण सूर्यना किरणथी अंधकार नो नाश थाय तेम ज्ञानोदय थयाथी मिथ्यात्वादि अज्ञान रूप अंधकारनो नाश थाय, तथा संसार समुद्र

मां पडेला जीवोने उद्धार करवा आधारचूत, वली सं सारथकी विरक्त थयेला प्राणीयोने आलंबन चूत एवुं जे ज्ञान, तेज अमारे अंगीकार करवा योग्य ठे, माटे अमें तेज अंगीकार करेलुं ठे.

अथ क्रियावादेरुत्तरकथनप्रश्नः ॥ अस्मद्वांसि दत्ता वधानाः संतः शृणुत यूयं । यद्भवद्भिर्ज्ञानमंगीकृतं तदव सितमस्मान्निःपरं स्वकर्मद्वयोपशमप्रकटितनिपुणधिया विमृश्य वक्तव्यम् ॥ अत्रानाद्यपर्यवसिते सदैव विद्य मानेऽस्मिन् जगति कृतनिवासानां जंतूनां कदाचित्सं नवं ज्ञानं न सदा सर्वदा सहचारी तेनांगीकृतेन शुष्म दादीनां कथमर्थसिद्धिर्नविष्यति क्रियास्मिन् त्रिविष्टपे जीवानामनादिरेवावतिष्ठते । ततः क्रियैव श्रेष्ठा । कथं ज्ञानं श्रेष्ठम् ? ॥

जाषाः—हे संत ! अमारुं वचन पण किंचित् सां जलो, मनमां धारो, विचारो जे माटे तमें तो एकांतें एक ज्ञान पद्वज अंगीकार कस्यो, तेतो अवश्य अ मारे पण अंगीकार करवा योग्य ठे परंतु आंही ह् योपशमथी प्रकट थयेली बुद्धिथी विचार करीने क हेवा योग्य ठे. कारण के आदि अने अंत तेणें रहि त सदा काल विद्यमान एवा जगतने विषे रहेला

जीव, सम्यग्ज्ञान पाम्या विना संसारमां परित्रमण
करे ठे, ते कदाचित् कोइ कालें निमित्त पामी ह्यो
पशमादि ज्ञान पामे, पण ते ह्योपशम ज्ञान तो अ
संख्यात वार आवीने पाबुं जाय ठे, पण निरंतर
सहचारी नथी एटले साथें चालतुं नथी, माटे जेम सूर्य
वादले ढांक्यो थको तेज रहित थाय, तेमज आत्मा
ज्ञानावरणादि कर्म आह्लादित थाय. तेवारें आत्मा
अज्ञान दशा प्रत्यें पामे, तो हवे ए आत्मा केवी
रीतें सिद्धताने पामे? माटे विचार पूर्वक उपयोग देइ
बोलो. केम के अमारे तो जे क्रिया ठे, ते आत्मानી
साथें निरंतर महोटा आलंबन रूप ठे, ते क्रिया
विना कार्यनी सिद्धि केम पामी शकाय? जेम पोता
नी पासें आहारनुं नाजन पडेळुं होय, पण हाथे उ
पाडी मुखमां जो कवलनो प्रहेप करीयें तो जनुख मटे,
तेमज ग्रंथ पण नणते नणते नणाय ठे, तथा एक
तंतु जोड्या पढी बीजो जोडवो, एवा क्रमें करी वस्त्र
पण बने ठे, तथा रत्न हीरादिकनां पात्र होय ते प
ण शोधन मंजनादिक विना मूल रूपने प्रकाश कर
तां नथी, ते माटे क्रिया तेज श्रेष्ठ ठे, वली क्रियादिकें

करी स्वर्गने विषे जीवोने सेवादिक प्राप्त थाय ठे, वास्ते केम ज्ञानने श्रेष्ठ कह्यीयें ? नज कह्यीयें.

अथ ज्ञानवादेरुत्तरकथनं:— जो क्रियांगीकर णबुद्धे ! तवेदृशं चातुर्यमस्ति ज्ञानेन समं किमपि वस्तु वर्ण्यते सद्भिः । यतो ज्ञानं कुमत्यंधकारस्फोटकं जगद्धोचनं विश्वोद्योतकारकं सूर्यातिशायी । येन प्राप्ते नावश्यमपार्धपुञ्जलांतरमनवधिसुखोत्पादकमनुपमं परमैश्वर्यगुणोपेतेन सकल सत्त्वसुखकारकेण परम पुरुषेण सुरासुरनृपादिवंदितचरणयुगलेनार्हता प्रोक्तं महत्पदं लभ्यते. येन ज्ञानेन । तेन समा क्रिया कदापि न स्यात् ॥

जाषा:—हे क्रियांगीकरणबुद्धे ! एटले क्रिया अंगीकार करवामां चतुर बुद्धिमान् ! तमारुं आ क्रियांगीकरणरूप चातुर्य, जे माहापण ते सर्व अमें जाण्युं, पण ज्ञान समान श्रेष्ठ बीजी कोइ वस्तु वर्णन करवा योग्य सारा पुरुषोने ठे ? अर्थात् कोइज नथी. जेमाटे कुमतिरूप अंधकारने फिटोडवाने एक ज्ञानज सामर्थ्यवान ठे. वली जगतनुं स्वरूप जाणवा जगतने विषे उद्योत कारक सूर्यथकी पण अधिक उद्योतकारक ठे अने जे सम्यक्ज्ञान पामवाथी शेष अर्ध पुञ्ज परावर्त्त मात्र

संसारचमण रहे अने अनंत सुखनुं कर्त्ता, उपमा र हित, एवं बली जे श्रीतीर्थकरना गुणें सुशोभित सकल नव्यजीवोने हितकारी, सर्व सुरासुरचक्रव र्यादिकने वांदवा पूजवा योग्य एवा जे अरिहंत जग वान, तेणे कहेलुं एवं अरिहंत पदनुं पामवुं, ते ए नाथीज थाय माटे ए ज्ञान समान ते क्रिया को ५ कालें नज होय.

अथ क्रियावादेरुत्तरकथनं ॥ नो लब्धवर्ण ! त्वया केन हेतुना क्रियापदं निर्धूय केवल ज्ञानस्यैव पद्वौ गीक्रियते ? किं त्वया विशिष्ट गुणोपेतायाः क्रियायाः सामर्थ्यं नाजिज्ञायते ? यस्याः प्रभावेनालब्धसम्यक्कोपि जीवः स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुश्रोत्रार्हान् मनोवाक्काया ह्यादनकारकान् अविहितपुण्यप्रकारमनुजडुलजान् विहितसदाचारमानुषसुलजान् गोत्रान् भुंक्ते एवंविधगुणोपेता क्रिया ततस्तस्या अग्रे ज्ञानस्य किमाधिक्यं ? ॥

नाथाः— हे पंक्ति ! तमें बे अह्मर जाणीने शा दे तुथी क्रिया पद्वनो निषेध करो ठो ? केवल एक ज्ञान पद्वज अंगीकार करो ठो. केम के तमें विशेष गुणें शो नित जे क्रियासामर्थ्य तेने नथी जाणता, के जेना प्र नावथी घणा जीवो प्रथम सम्यक्त्व पामे तथा बली

एकेंडियथी मांमीने यावत् पंचेंडिय पणुं पामवुं ते पामवा माटे एक सकाम अने बीजी अकाम ए वे प्रकारनी निर्झरा करे ते जीव अनंत पुण्यनो राशि मेलवी यावत् तीर्थकर गोत्र उपाङ्कन करी मोक्ष पद प्रत्ये पामे. तथा बली जे प्राणी विधि सहित क्रि या आराधन करे, ते जीव, देवगति तथा मनुष्य गति प्रत्ये पामे अने अविधिये क्रिया करतो थको नरक अने तिर्यच गति पण पामे, एवी रीते अनेक गुणें जो नित जे क्रिया तेनी पासें ज्ञान शुं अधिक ठे ?

॥ ज्ञानवादेरुत्तरकथनः—जोः ! कवे शृणु मदीयं वचः परमानंददायकं दह्ननरप्रकारोचितं सद्यः समा हितशातकारकं दिव्यप्रज्ञावयुक्तं ज्ञानमस्ति तस्य गुणान किं त्वं जनासि ! ऊटिति वांछासिद्धिप्रदायकस्य विशि ष्टज्ञानप्रदायकस्य विशिष्टज्ञानस्याग्रे का वराकी क्रिया! सादिसपर्यवसितसुखदायिनी यथा प्रकटितज्ञास्कर बज्रं स्वद्योतवराकस्य ततः समालोचनेन नहि किमपि ज्ञानेन तुल्यं परोपकारवस्तु विद्यते ॥

जापाः—हे कवि ! तमें अमारुं वचन सांजलो. जे परमानंद दायक तो एक ज्ञान विना बीजो कोइ प दार्थ नथी, माटे विचक्षण पुरुषोने अंगीकार कर

वाने उचित, सत्ता समाधिनुं करनार, दिव्य प्रजाव
 युक्त वांछित अर्थ जे सिद्धिपद तेनुं देवावाळुं एवुं
 सर्वोत्तम जे ज्ञान ठे, तेमना गुणने तमें हुं जाणो ?
 ऊट मनोवांछा सिद्धिने आपनारुं एवुं जे ज्ञान, तेनी
 आगल बापडी क्रिया ते शी गणतीमां ठे ! क्रिया तो
 आदि अंत सुखनी आपवा वाली ठे. एटले जेटळुं
 पुण्य बांध्युं होय, तेटळुं जोगवीने फरी पाठो ते जीव,
 नवचक्रमां फेरा फरे, माटे ज्ञानरूप सूर्य प्रकाश
 थाय, ते आगल क्रियारूप आगियो जीवडो बापडो
 हुं प्रकाश करे ? माटें ज्ञान समान कोइ वस्तु परो
 पकारी नथी. ते सारी रीतें विचार करो.

॥ क्रियावादेरुत्तरकथनं मोविचक्षण ! शृणु क्रियावि
 शिष्टं सामर्थ्यम् । अस्मिन्ननादिसंसारे स्थितानामलब्ध
 सम्यक्तत्वरत्नानामनव्यानां क्रियासामर्थ्येन नवनपति
 व्यंतरज्योतिष्कसुरेषूत्पत्तिः स्यात् । कदाचित्सौधमेशा
 नसनत्कुमारमाहें ब्रह्मलोकलांतक महाशुकसहस्रा
 रानतप्राणतारणाच्युतकल्पेषु विशिष्टगीर्वाणसुखाम्निः
 स्यात् । कदाचित्ततोप्यूर्ध्वजसुजसुजातसोमनसप्रिय
 दर्शन सुदर्शनामोद्यसुप्रबद्धयशोधरेषु अहमिद्वत्वं परंप
 रमं सौख्यं न नवति ईदृक्क्रियासामर्थ्यमस्त्यवगतम् ॥

(३४८)

नाषाः—हे विचक्षण ! तमें क्रियानुं सामर्थ्य तो सांजलो के आ संसारमां अनादिकालथी नटकता एवा अनव्य जीव ते समकेत रत्न पास्या विना मा त्र क्रियाना बलथीज नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्मादि बार देवलोकमां जइ देवतानां सुख जोगवे ठे, कदाचित् नवग्रैवेयकमां जइ उपजे ठे इत्या दि शुनफलनी आपनारी क्रियाज ठे, ते विचारी जूउ.

॥ज्ञानवादेरुत्तरकथनं नो वाच्यम् ! त्वया क्रियाधिक सामर्थ्यकथनेन ज्ञानगुणोद्ध्वननं क्रियते तदयुक्तं दृश्य ते यतोऽस्मिन् मनुष्यलोके क्रियाकारका बहवो विद्यन्ते । शाक्यादयस्तेषां मध्ये केचित्पंचाग्निसाधकाः संति । केचित्पत्रपुष्पफलाहारेण सदैव तिष्ठन्ति । तथा केचिद्धे वालनक्षिणः श्रूयन्ते । केचिदंबुनक्षिणः श्रूयन्ते । केचिद्धा लाशये पतितास्तिष्ठन्ति । केचिदूर्ध्वपादाधोवक्त्रास्तिष्ठन्ति । केचिद्विगंबरास्तिष्ठन्ति । एवं विनापि ज्ञानेन तीर्थंकरत्वं न विष्यति तर्हि ज्ञानस्य माहात्म्यं प्रनूतं ज्ञायते न क्रियायाः ततो ज्ञानपक्ष एवांगीकार्यः ॥

नाषाः—हे वाचाल ! ए तमें क्रियाने अधिक सामर्थ्यवाली कहीने ज्ञान गुणनुं उद्ध्वनन करो ठो, ते अ युक्त देखाय ठे, केम के अमें तो आ मनुष्य लोक

(१४९)

ने विषे क्रियाना करनार घणा शाक्यादि विद्यमान
हे. तेमां केटलाएक पंचाग्नि तापे हे, केटलाएक पत्र,
पुष्प, फलाहार करे हे, केटलाएक तो मात्र सेवाल
जुंज नहण करे हे, केटलाएक मात्र जलपानज क
रे हे, पण अन्न खाता नथी, केटलाएक सर्वदा जल
मांहेज पळ्या रहे हे, केटलाएक पण उंचा करी म
स्तक नीचुं राखे हे, केटलाएक सदा एकज स्थानकें
उत्ता रहे हे, केटलाएक हाथ उंचो राखी तप करे
हे, कोइक दिगंबर एटले मात्र दिशाउनांज वस्त्र धा
रण करता अर्थात् नग्न थका रहे हे, केटलाएक लो
चादिक बाह्य कष्ट क्रिया करे हे, इत्यादि क्रिया
करतां पण ज्ञान विना तेमने तीर्थंकर पद मलनुं
नथी, माटे ज्ञाननुं माहात्म्य महोदुं हे, पण क्रियानुं
माहात्म्य नथी. तेथी तमें ज्ञानपद् अंगीकार करो.

एम ज्ञानपद्ही क्रियापद्ही बेहुनो मांहोमांहे वि
वाद थतो देखीने त्रीजो स्याद्वादपद्ही पुरुष, सर्वांग
पणे निश्चय व्यवहार कथन करवा लाग्यो ॥

अथस्या द्वादि पद्ः॥ नो ज्ञानपद्ग्राहिन्! न केवलेनै
कज्ञानेन पूर्ण स्वर्गापवर्ग सुखसाधनं नवेत् द्वाच्यामेकत्र
वर्त्तमानान्यां वांछितार्थसिद्धिः संजायते ॥ यथा रूप

जादि तीर्थकराणां जरतादिचक्रवर्तिनां पुंमरीक गौत
मादिगणधराणां तथाऽन्येषामपि साधूनां पूर्वोक्तका
ले निरंतरसुखावाप्तिर्बनूव ॥ इदानीमपि वर्तमानमहा
विदेहादवांछितार्थसिद्धिर्नवत्यनविष्यत्काले ज्ञान क्रि
यान्यां क्रियानंतक्षेत्रज्ञानां मनुजसुरमहानंदसुखंनवि
ष्यति ततोज्ञानक्रिययोर्बलं विधेयं ॥

जापाः—हे ज्ञानपट्टयाही ! केवल एक ज्ञानें करी
ज संपूर्ण स्वर्ग अने मोक्षना सुख साधन न होय, परंतु
ज्ञान अने क्रियाएं बेहुना मेलापथीज वांछितार्थ सिद्धि
थाय ठे. जेमाटे अतीतकालें श्रीरूपनादि चोरीश
तीर्थकरो जरतादि चक्रवर्त्तीयो तथा पुंमरीक, गौतमादि
गणधरो अने बीजा पण साधु प्रमुख अनेक जीवो
सर्व निरंतर ज्ञान क्रिया युक्त साधन करतां स्वर्गपद्म
र्गादि सुख पाम्या ठे अने वर्तमान कालें पण माहा
विदेहादिक क्षेत्रने विषे वांछित सिद्धि प्रत्यें पामे ठे,
अने अनागत कालें पण ए बेहुनुं सेवन करी महा
नंद सुखने निश्चें पामरो. इहां दृष्टांत कहे ठे ॥ दोहो ॥
यथा अंधके खंध पर, चढे पंगु नर कोइ ॥ वाके दृग
वाके चरन, होइ पंथ मिल दोइ ॥ १ ॥

जावार्थः—जेम कोइक पांगलो पुरुष, ग्रामांतरें जवा

माटे मार्गमां बेगो ठे, तेटलामां कोइ आंधलो पुरुष तेज मार्गमां आव्यो, तेने पांगले पूछुं जे तमारे कये गाम जवुं ठे ? आंधलायें कह्युं के अमुक गाम जवुं ठे, पांगलायें कह्युं महारे पण एज गाम जवुं ठे ते मार्ग तो नजरें देखुं तुं, पण पगमां शक्ति नथी माटे केवी रीतें जवाय ? ते सांजली आंधलो बोव्यो महारा पगमां चालवानी शक्ति तो घणीज ठे, पण नेत्र नथी माटे रस्तानी सूज पडे नही तेथी केम जवाइ श काय ? ते सांजली पांगलो बोव्यो के हे नाइ ! जो तुं मने तहारी खांध उपर बेसाडे, तो हुं रस्तो बता वीश अने आपणे बेहु जण वंठित गामे पहुँचणुं ! एम ते बेहु मल्ला, तेवारें इत्तित स्थानकें पहुँच्या, तेम इहां पण उपनय कहे ठे, के क्रिया जे ठे, ते अंधप्राय ठे, जेमाटे ज्ञान विना एकली क्रियानी परंपरा देखा देखीयें करवी, ते अंधरूप ठे, तेमज क्रिया विना एकलुं ज्ञान जे ठे, ते पांगलुं ठे, जेमाटे मोक्षमार्ग तथा यथार्थ पदार्थने जाणे ठे, देखे ठे, पण क्रिया जे चालवुं ते विना वांठित स्थानकें पहुँचाय नही, जेमाटे तेरमे गुणठाणे केवलीने पण क्रिया सहित वर्तवुं ठे, माटे हे नव्यो ! जो तमें स्वर्गापवर्ग सुखना इत्तक

(१५३)

ओ, तो ज्ञान अने क्रिया ए बेदुने अंगीकार करो ॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चय अरु व्यवहार दो, स्यादवाद समचित्त ॥
जाके घटमें नित वसे, सो टाले नवनीत ॥ १ ॥ तेमा
टे नवि प्राणि तुं, तजि हठवाद विरोध ॥ ए अवसर
डुर्जन मळ्यो, करी ले आतम शोध ॥ २ ॥ सोनाग्य
विजय प्रतापथी, हीरविजय सुपसाय ॥ मयाविजयने
ए सदा, स्यादवाद सुख थाय ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्प्रवरपंथित श्रीसौनाग्यविजयजी तडि
ष्य पंन्यास श्रीप्रतापविजयजी तडिष्य पंन्यास श्रीही
रविजयजी तडिष्य मुनि मयाविजयविरचितो निश्च
यव्यवहारनयचर्चारूपः पंचमनागः समाप्तः ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ नाग रूप लघु पिंगल प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्राह्मी लीपीने नमी, श्रीगुरु प्रणमी पाय ॥ अ
ल्पजेद पिंगल कहुं, ठंद करन ऊपाय ॥ १ ॥ पिंगल
बिन ठंदही रचे, गुरुबिन पढवुं ज्ञान ॥ ज्युं नोजन
ही लूण बिन, जेसो मरकट ध्यान ॥ २ ॥ गुरु लघु
अह्मर जानियें, मात्र जेद ए ठंद ॥ मगणादि गण
आतमे, गुनागुन फलकंद ॥ ३ ॥ संयोगीकी आदि

में, जो लघु अक्षर होय ॥ ताकूँही गुरु जानकें, मा
त्रा गणियें दोय ॥ ४ ॥ अनुस्वारादि दीर्घ जे, विसर्ग मि
श्रित जान ॥ विकल्प नजना व्यंजनै, पदांतें सुप्रमान ५

॥ अथ आठ गणनां नाम ॥ दोहा ॥ मगण नगण
कहियें जगण, सगण नगण यगणेय ॥ रगण तगण
पिंगल नणे. ए आठो गण लेय ॥ ६ ॥

॥ अथ आठ गणरूप मात्रा प्रमाण ॥ दोहा ॥ माता
जी कहियें मगण, नगणें नोजन जाण ॥ जगण जगातने
कीजियें, सगणें समता नाण ॥ ७ ॥ नगर नगण
कीजें सदा, यगण यशोदा जोय ॥ रगण रामजी जा
णजो, तगण तातार ते होय ॥ ८ ॥ दग्ध वरन ए
आठ हे, हजधन धरखन सोइ ॥ रूपदीप पिंगल कहे,
आदि न लीजें कोइ ॥ ९ ॥ मढप अक्षर मध्य तज,
अंत्य ऊटक मत आन ॥ हजधन धरखन आदि तज,
पिंगल कहे प्रमान ॥ १० ॥ आठ गण स्वामी ॥ धर
ती शशी सूरज पवन, स्वर्ग नीर नण तास ॥ अग्नि
व्योम गण अगणके, स्वामी किये प्रकाश ॥ ११ ॥

॥ हवे ते पूर्वोक्तगणनां अनुक्रमें फल ॥ लक्ष्मी
कीरति रोग नय, आयु बुद्धि चितधार ॥ करे विनाश
गमण करे, फलजो अफल विचार ॥ १२ ॥ मेरु प

(१५४)

ताका मरकटी, आदी जेद अपार ॥ ठंद विविध रच
ना कहि, कहेत न आवे पार ॥ १३ ॥

॥ अथ गीया ठंद ॥

॥ धुर सोल कीजें एक यतिमें, फेर दो दश जेली
यें ॥ कर अछावीशू मात्र सबमें, चार एसें मेलियें ॥
नहिं लहु गुरूका जेद इनमें, रगण अंतें राखीयें ॥ में
कह्यो पूरव कथनसेंती, ठंद गीया जांखियें ॥ १४ ॥

॥ अथ मोतिदाम ठंद ॥ पदे पद जगण मिलाय,
करो दश दो गण अंक बनाये ॥ बतावत पूरव सोलह
मात, कहो इय मोतिय दाम सुजात ॥ १ ॥

॥ अथ ठंद जुजंगी ॥ पदें चार येगनकों साथ
कीजें, जली वीश मात्रा सबे ठोर दीजें ॥ एही जेद में
पूर्व याका किया हे, जणो राज ठंदा जुयंगप्पया हे ॥ ३ ॥

॥ अथ त्रिजंगी ठंद ॥ धुरतें धर दशकी, दूजी
अठकी, फुनि दो खटकी करतीजें ॥ दस करियें
तिगुणा, फिर दो धरणां, एसें करनां पदसंगी ॥ पूरव
में गायो, लहान पायो, ठंद कहायो त्रिजंगी ॥ ४ ॥

॥ अथ कुंमलीया ठंद ॥ आदें डहा ठंद कर, रोड
क आगें देय ॥ चोथे चरण करे जिको, सो दो
बेर कहेय ॥ सो दो बेर कहेय, आय पण. एक न

(१५५)

रीजें ॥ एक तुकमें चोविश, कलागण गणमें लीजें ॥
जांख्यो लब्धन एह, पूर्वके मत संवादें ॥ ए कुंमजीया
नाम, मिले तुक अंत रु आदें ॥ ५ ॥

॥ अथ नाराच छंद ॥ उकीत मीत गीत ईत, बीस
चारहू कला ॥ मिलायकेज कीजीयेंज, अंक सोल
हू जला ॥ एकेक अंक अंतरें, लहू गुरु प्रमान, ए क
ह्योज पूर्व बौचमें, नाराच छंद जानए ॥ ६ ॥

अथार्या छंद ॥

॥ प्रथम पाये दीजें, दश दो मात्रा तथा तृतीयेपि ॥
अथ दश द्वितीय धरिया, चतुर्थ पाये पंच दश सार्या ॥

॥ अथ शशिवदना छंद ॥ चउ लघु कहियें, द्विगुरु
लहियें, अंक ठ धरीयें, ए विध करियें ॥ ७ ॥

॥ अथ विद्युन्माला छंद ॥

लीजें सर्वे दीर्घावर्णा, वेदें विश्रा कीजें ग्याता ॥
वेदें वाणी एही जापा, ते जाणीजें विद्युन्माला ॥ ८ ॥

॥ अथेड्वज्जा छंद ॥ ह्रस्वं नवंमं षट सप्तमं स्यात्,
तृतीयवर्णा धरियें कवी मात ॥ सह्रस्व वर्णा करियें
कवेंडा, सड्वज्जा कथितः मुनिडा ॥ ९ ॥

॥ अथ त्रोटक छंद ॥ कवि कीयें तृतीय रसंत
रती, नवम गुरु जे धर ते विरती ॥ एम कीरत छंद

(१५६)

सन ब्रुवती, एह त्रोटक ठंद कहे सुमती ॥ १० ॥

॥ अथ वसंत तिलका हंद ॥

॥ पूर्व गुरुर्द्वितीय वर्ण तथा चतुर्थ, अष्टौ पुनर्दश
मते गुरु अंत दीजें ॥ वर्ण सवे चतुरदश सुपंक्ति
लीजें, जाणो वसंत तिलका कवि एम कीजें ॥ ११ ॥

॥ अथ शार्दूलविक्रीडित हंद ॥

॥ आदी जे गुरु अंक धर तृतिये, षष्ठं तथा चा
ष्टमं, एकादश कहे कवी गुनमती, अष्टादशं पंक्ति,
मार्त्तमे (१२) मुनि (७) करेत विरती, एकुनविंश
त्यक्षरं, धार्य धारण धीर्यवंत पुरुषैः शार्दूल विक्रीडितं
॥ १२ ॥ अल्पमती पिंगल कह्यो, अल्पहंद ए ग्रंथ ॥
मयाकरी मुक्त उपरें, कियो सुगम गुरुपंथ ॥ १३ ॥ इति ॥
श्रीमत्पर पंक्ति श्री सौजाग्य विजयजी तद्धिष्य पं
न्यास श्री प्रतापविजयजी तद्धिष्य पंन्यास श्रीहीरवि
जयजी तद्धिष्य मुनि मयाविजयविरचितो लघु पिंग
लनामा षष्ठोऽजागः समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ दोहो ॥ एह ग्रंथ रसरूप मय, रमण करे नर
जेह ॥ स्याद वाद समजे सुखें, बोधिबीज लहे तेह
॥ १४ ॥ इति मुनिमया विजयकृत आत्मप्रबोधस्या
द्वादग्रंथः संपूर्णः ॥

आ ग्रंथने आगलथी आश्रय आपनार साहेबोनां सु
बारक नाम तथा तेमनां गामनां नाम अने तेमणें
राखेली प्रतिना अंक वगेरे नीचें लायीं ठेयें.

प्रत. नाम तथा गाम. प्रत. नाम तथा गाम.

जरुच.

- | | |
|------------------------|------------------------|
| ५ शा.सोमचंद जीखानाऽ. | १ शा.रतनचंद भगनलाल. |
| ५ " ताराचंद हीराचंद. | १ " नेमचंद पानाचंद. |
| ५ " गुलाबचंद हरिजाऽ. | १ " तापीदास प्रेमचंद. |
| ४ " ऊवेरचंद माह्याजाऽ. | १ " घेलानाऽ खुशाल. |
| ३ " सवाऽचंद तलकचंद. | १ " खुपचंद खुशालचंद. |
| ५ " विमलचंद तलकचंद. | १ " पानाचंद जीखानाऽ. |
| ५ " अमाऽदास गुलाबचंद. | १ " जगवान विमलचंद. |
| १ " खीमचंद माणोकचंद. | १ " दुल्लनदास मोतीचंद. |
| १ " वीरचंद गुलाबचंद. | १ " रायचंद मोतीचंद. |
| १ " गुलाबचंद नेमचंद. | २ " बहेचरदास नीहालचंद |
| १ " फतेहचंद हेमचंद. | १ " कपूरचंद नानचंद. |
| १ " मोनीचंद जीवण. | १ " पीतांबर ताराचंद. |
| १ " पानाचंद जेठा. | १ " नगीनलाल बधुजाऽ. |
| १ " नूखण कपूरचंद. | २ " पानाचंद लालचंद. |
| १ " गुलामचंद, केशवजी. | १ " अमरचंद मलुकचंद. |

प्रत. नाम तथा गाम.

दीहेजंबंदर.

१ शा. अमथा गुलाबचंद.

१ " मोतीचंद गुलाबचंद.

१ " देवचंद जगवानदास.

१ " वीरचंद गुलाबचंद.

१ " लखमीचंद खुशाल.

मोजे पाहाज.

१ शा.रूपचंद अमथाना३.

१ " मूलचंद माणोकचंद.

मोजे करवाडा.

१ शा. खुबचंद रायचंद.

मोजे कोलवणा.

१ शा. मोतीचंद हीराचंद.

मोजे बुवा.

१ शा.पानाचंद ऊबेरना३.

वडनगर.

१ शेठ.बहेचरदास मूलचंद

" ठाकोर. वसंतना३ पा

नाचंदनी मारफत.

प्रत. नाम तथा गाम.

१ मुनिश्री. धनविजयजी.

१ मुनिश्री. दानविजयजी.

१ शा. वालचंद जोस्ताना

३ सवाला.

१ ठाकोर. वसंत पानाचंद.

मोजे दीव.

१ शा. पानाचंद नेमचंद.

१ " रूपचंद छुल्लनदास.

१ " गुलाबचंद ऊबेरना३.

१ " लालचंद वनमाली.

राधणपुर.

१० श्री. पांजरापोलनी जे

नशाला.

१ घोघारी. शा. मगनना३

लालचंद.

१ शेठ.देवकरण संधजीनी.

१ वीरवाडीया. शेठ मूलचं

द दानसिंध.

प्रत. नाम तथा गाम.	प्रत. नाम तथा गाम.
"नवानगर(जामनगर.)	" फूलचंद पानाचंद.
मुनिश्री. लावण्यविजय	"नगवानदास हरिनाइ.
जीनी मारफत.	" विमलचंद खुशाल.
१ ज्वेरी.रायचंद ताराचंद.	जोयणी.
३ वोरा. अजरामर हरजी	१ गोडी.ठबीलदास लाल०
हस्ते टोकरसी.	१ शा. मनसुख जेठानाइ.
१ शा. वीरचंद कपूरचंद.	वलसाड बंदर.
१ " उधवजी वि० देवजी.	१ शा.खीमचंदजगजीवन.
१ " देवकरण संघराज.	४ " मंठाराम देवजी.
१ दोशी.नेमचंद वालजी.	४ " पूनमचंद केसुरजी.
१ मेता.दुकचंद जेठानाइ.	१ " कसनाजी नीखाजी.
पाटण.	१ " गोवंद खीमाजी.
१ शा. उत्तमचंद वीरचंद.	१ " रुघनाथजी मुंगरजी.
आमोद.	१ " डाह्यानाइ टेकचंद.
१ शा. ठगनलाल रायचंद.	१ " मेघाजी वालाजी.
१ " गुलाबचंद कपूरचंद.	१ " गोवंदजी नथुजी.
१ "जगजीवनकल्याणचंद.	१ " नाहानचंद मुंगरजी.
१ " दयालचंद वधुनाइ.	१ " पना जीमाजी.
१ " पानानंद केशवजी.	१ " रामाजी गलालजी.

प्रत. नाम तथा गाम.	प्रत. नाम तथा गाम.
१ " गोलाजी डुलाजी.	दमण.
१ " टेकचंद मनाजी.	१ शा.माह्यानाइअमरचंद.
१ " केसुर रामाजी.	१ " नथुमल मोतीचंद.
१ " जाणाजाइ नथुजाइ.	१ " रूपचंद मलुकचंद.
१ " मूलचंदजाइनगवानजी	अंकमेश्वर.
१ कोठारी. जीवणजाइ	४ " खुबेचंद नानचंद.
हीराचंद.	२ " रतनचंद हीराचंद.
वारडोजी.	३ " दयालचंद पानाचंद.
१ शा. देवचंद मोतीजी.	२ " लखमीचंद ऊवेरचंद.
१ " अंबाइदासलखमीदास	वडोदरा.
१ " नथुजाइ हरजी.	१ ऊवेरी.ठोटेलाललालचंद
१ " फकीरचंद नेमाजी.	१ " नेमचंद लखमीचंद.
१ " रणठोड हरजीजाइ.	१ ६७

